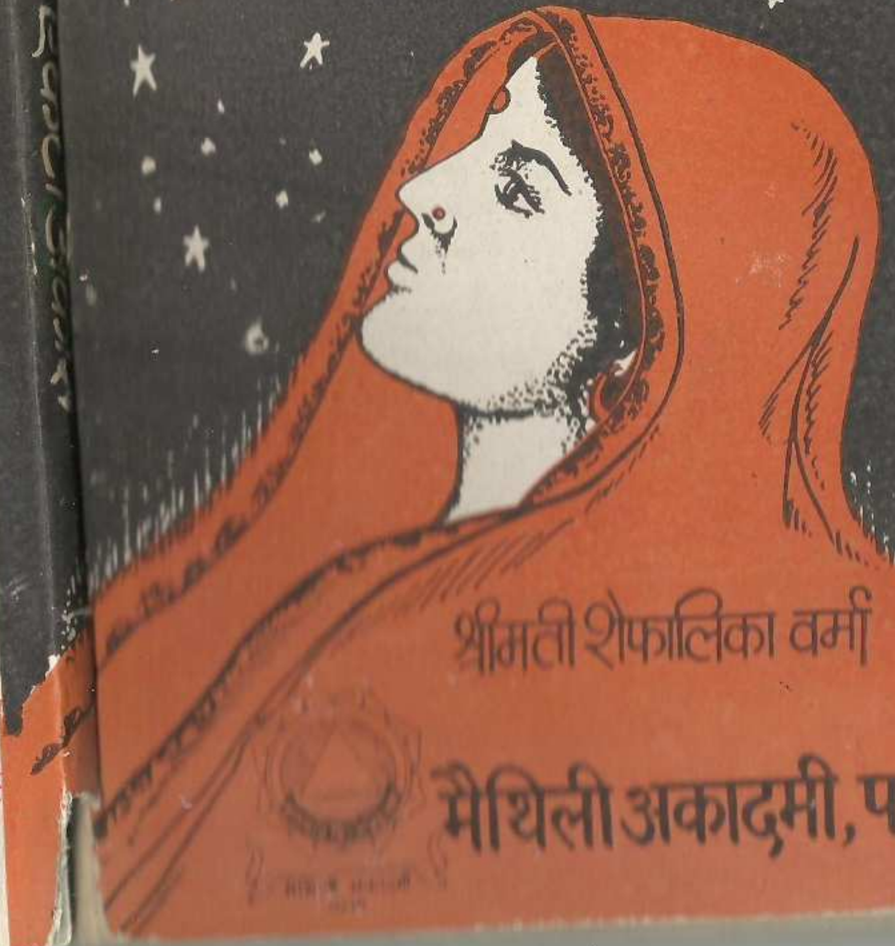
एकटा अकास



एकटा अकास

(कथा संग्रह)

डॉ० (प्रो०) शेफालिका वर्मा

एम० ए०, पी-एच० डी०



मैथिली अकादमी प्रकाशन सं०—१६२

प्रकाशक :
मैथिली अकादमी,
४/बी. श्रीकृष्णपुरी, पटना ८००००१

प्रथम संस्करण : नवम्बर, १९८८
प्रति : ११००

मूल्य : ~~१० = ०० (दस) टाका~~ 20

मुद्रक :
श्रीजानकी प्रिंटिंग प्रेस,
भिखनापहाड़ी, पटना-४

विषय सूची

प्रस्ताविकी

डॉ० श्रीमती शेफालिका वर्मा लिखित कथा-संग्रह "एकटा अकास" प्रकाशित करैत हम अतिशय हर्षक अनुभव करैत छी। आशा करैत छी जे शरच्चन्द्रक परम्परामे नारी समस्या पर आधारित प्रस्तुत कृति मैथिली कथा-यात्रामे एक मीलस्तम्भ सिद्ध होयत। अत्यन्त संवेदनशील ओ सप्राण भाषामे विदुषी लेखिका नारीक चौमुखी समस्याकेँ उद्घाटित करैत समाजक मानसिकताकेँ झिकझोरबाक समर्थ प्रयास कयलनि अछि। लेखिका मे अद्भुत लेखकीय क्षमता छनि जाहिसँ हिनका मैथिलीक महादेवी कहब यथोचित थिक।

महिला लेखनक दिशामे "एकटा अकास" अकादमीक एक ठोस उपलब्धि थिक। नवयुग नारी जागरणक थीक। पुरुष प्रधान समाजमे नारीकेँ ओ सम्मान नहि भेटैत छैक जकर ओ अधिकारिणी थिकी। कथामे जतेक गुण रहबाक चाही से सभ हिनकामे छनि। कथाक सार्थकता कथ्यमे अछि। विभिन्न कोणसँ समस्याके अँखिदेखार करैत एतय एहन स्वस्थ समाजक दिशा निर्दिष्ट कयल गेल अछि जाहिठाम नारीक अस्मिता, सम्मान ओ अधिकारक सुरक्षाक गारंटी हो विदुषी लेखिकामे रचनाधर्मिताक जे सबल सम्भावना अछि ताहिसँ हम आशा करैत छी जे ओ अपन नव-नव कृतिसँ मैथिली कथा-साहित्यक भण्डारकेँ भरती। विश्वास अछि जे मैथिलीक प्रेमी पाठक वर्ग अकादमीक एहि नव प्रकाशनक हृदयसँ स्वागत करताए।

२१ दिसम्बर १९८८ अध्यक्ष

प्रकाशिकी

"मधुकर, एहि विश्व विपिनक, हम सरल शेफालिका छी ?
खसि पड़ल आकाशसँ, जे विकच तारकमालिका छी ??"

—महाकवि आरसी एहि पाँतीक अनुरूप यथानाम डा० शेफालिका वर्मा आधुनिक मैथिली साहित्यक एक कीर्तिस्तम्भ थिकी। १९६६ ई० मे मैथिली एकेडेमी, इलाहाबादसँ हुनक एक संस्मरण 'स्मृति-रेखा' नामसँ प्रकाशित भेल छल जे हुनका मैथिलीमे प्रतिष्ठत कयलक। एहि रेखाचित्रक एक अंशमे ओ स्वतः कहैत छथि : "बाबू कोन नाम राखि देलनि-'शेफाली ? रात्रिक शीतलतामे खिली-खिली उठैत छी आ सूर्यक प्रथम रश्मिक तापक आशंकेसँ काँपि-काँपि धरती पर खसि पड़ैत छी।" आधुनिक अधिकार चेतना आ शाश्वत नारीक श्रद्धा-समर्पणक सन्धि-रेखापर ठाढ़ि नवयुगक दस्तक देत डा० वर्मा आइ सरिपो मैथिलीक महादेवी बनि साहित्यक कथा, कविता, संस्मरण, रेखाचित्र आदि कतोक विधामे अपन कीर्ति-चन्द्रिका पसारि सहृदय हृदयपर नगजकाँ गाड़ि गेली अछि। हिनकामे सतरंगी कल्पनाक इन्द्रधनुष, मयूरपंखी भावनाक उल्लास-विलास, अनुभूतिक सरस उद्गार आ अभिव्यक्तिक सहज प्रवाह देखिते बनैछ। सहजतामे सम्मोहनक सौरभ, जमीनपर रंगीन अकासक परिकल्पना निस्सीममे ससीमकेँ बान्हबाक अमिट लालसा ओ एहि हाड़-काठक लोककेँ वेदना आ स्नेहक अमृतदानसँ देवता बना देबाक लेल ई अपस्यांत छथि। यथार्थक कठोर धरतीपर वेदनामती, अनुभूतिमयी आ अमृतमयी नारीक ममतामय कोमल प्रतिमूर्ति एहि विदुषी लेखिकाक कथासंग्रह 'एकटा अकास' प्रकाशित करैत अकादमी गौरवान्वित भ' रहल अछि। महिला-लेखनक प्रोत्साहन-प्रवर्धनक दिशामे ई एक अपन कीर्तिमान थिक।

'एकटा अकास' मुख्यत: नवयुगक नारीक कथा थिक। नारी-जागरण आ स्वातन्त्रयक एहि युगमे प्रस्तुत संकलन किछु नव-नव आयाम आ बिम्बक संग किछु ओहने व्यथा-कथा कहैत अछि जे बहुत पूर्व मैथिली शरण गुप्त कहि गेल छथि :

अबला जीवन हाय ? तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध आँखों में पानी।"

महादेवी साहित्यक ध्वनि आ इंगितिकेँ लेखिका कदाचित् आत्मसात् कयने छथि जाहिसँ हुनक अधिकांश कथा करूणासँ सँसिक्त ओ वेदनासँ रसाद्र अछि। यथार्थक तानी-भरनीमे रोमानियतक अपूर्व कसीदाकारी अछि। अधिकांश

कथा नारीक केन्द्रपर घूमित अछि जकर वृत्तमे अपन समाजक समग्र कटु-तिक्त परिदृश्य मूर्तिमान अछि। 'एकटा अकास' अलोच्य संकलनक एक मर्मस्पृक् प्रतिनिधि कथा थिक। 'नामैकदेश ग्रहणे' पि नाममात्र-ग्रहणम्'—न्यायसँ लेखिकाक सर्वप्रिय कथाक आधारपर पोथीक नामकरण 'एकटा अकास' भेल अछि। वस्तुतः एहि ठाम सहृदय पाठकके कथाक असली कुंजी भेटि जाइत छनि :

"नारी स्वयं एकटा बुझौअलि थिक आ स्वयं उत्तरी। प्रश्न बुझनाइ तँ कठिन अछिए,

उत्तर कम दुष्कर नहि। हमर हृदय कोनो चोटक पीड़ासँ अछि, मुदा हम स्वयं नहि कहि सकैत छी जे ई केहन चोट थिक। ई असह्य चोट मोनकेँ विह्वलक' देने अछि। हृदयमे एकटा हलचल अछि। ई ओतबे सरल अछि, जतबा गूढ़। सरल एतेक जेना सोनजूहीक कली, आ गूढ़ो ओतबे जेना ओहि कलीसँ चोट लागि गेल हो आ व्यथासँ तन-प्राण भरि गेल हो......।'

नारी हृदयाकशक सभसँ पैघ प्रश्न थिक : "स्त्रीक अकास ओकर घरक छत होइछ जे मात्र पति द' सकैछ……।" की नवयुगकेँ अरधतैक ? जिनगी जीबाक एक कला थिक। एकर किछु मार्मिक क्षण अनमोल होइछ बिसरल नहि जा सकैए। प्रातक लाली आ साँझक गुलाबी क्षणिक होइतो संसारक शाश्वत सम्पदा थिक। लेखिकाक जिनगीक विश्लेषण देखिते बनैछ : "जिनगी क्षणसँ बनैत अछि वर्षसँ नहि। अवधि जीवन नहि थीक, मुदा जे क्षण जीबि जाइत छी, ओएह जिनगी थिक।"………"जाहि दिन मानव बूझि जायत जे रूपो मानवक छाहुरि थिक ताहि दिन सत्य स्नेहक गूढ़ता बूझि जायत। एहि सृष्टिक निर्माणमे सभसँ सहयोगी किछु थिक तँ नारीक रूप। एहि रूपसँ आकर्षित भ' एहि सुखमय सृष्टिक निर्माण होइछ। आइ साहित्य आ काव्यक आकर्षण नारिये थिक।"

छायावादी आ रहस्यवादी परिवेशमे बुनल कुमारि कन्याक सतरंगी सपनाक रंगमहल आ विवाहिताक शोषण-उत्पीड़न, प्रताड़न-परित्याग, लांछल-प्रदूषण, धर्षण-पुनर्लगनक मर्मान्तक व्यथा-कथा एतय मोनप्राणकेँ झिकझोरि सहृदयक हृदयकेँ मोमजकाँ पघिला दैत अछि। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता,'— ई सभ आइ पुरुषप्रधान समाजमे नारीक लेल फूसिओअल बनि गेल अछि। माय-बहिन, ननदि-भाउज, पत्नी-दुलहिन आदिक भूमिकामे आइ कतोक अहल्या-द्रौपदी

सीता-शकुन्तला वा कुन्ती-गाँधारी जिनगीक तबधल रेतपर फकसियारि काटि रहल छथि। दू बून्न नोरे हुनक जिनगी अथवा अथवा हत्या-आत्मघाते हुनक नियति थिक। वात्सल्यक व्यामोहमे शाश्वत नारी विवाहकेँ जिनगीक कल्पना, पतिकेँ प्राणधार ओ माय बनि घर-गृहस्ती सजेनाइये अपन जीवनसर्वस्व मानि लेलक। वात्सल्य आ दाम्पत्यक मोह नारीकेँ बिआहक लगाममे गछारि भनसाघरमे कैदक' देलक। आजुक नारीक मोहभंग भ' चुकल अछि। ओ आब परम्परामे खुटेसल-बान्हल कोठीक मरुआजकाँ लेबल-मूनल नहि रहती। बेरी समाज, अन्हार लोक, रुग्ण मानसिकतामे जकड़ल बगुलाभगत आ पाथरक देवताकेँ सृष्टिक विधात्री आ पुरुषक जन्मदायी आधुनिक नारी आइ सहन नहि करती। युगक ई उद्घोष संकलनमे यत्र-तत्र छिड़िआयल अछि। नवयुग भावविह्लता आ कलात्मकता स्थान पर अपन एहि क्रान्तिक दीपशिखा आ प्रगतिक अग्रदूतसँ अपेक्षा रखैत अछि ओ आरो प्रखरतर आ उग्रतर भावभूमिपर उतरथि जत' विद्रोहक धाहीक संग-संग व्यंग्य-बाणक धरगर चोट सेहो हो। ओना कथा ओ कथ्य दुनू दृष्टिए ई संकलन सर्वथा पठनीय ओ संग्रहणीय अछि। शिल्प आ संवेदनामे ई बेजोड़ अछि। सहजला, उन्मुक्ता, रचना-निष्ठता ओ रागात्मकता एकर विशेषता थिक।

भाषा कदाचित् जहलक ओ देवार नहि थिक जाहि ठामक कैदीकेँ साहित्यक आरपारक संसार नहि सूझैक। तेँ यदि किनको एहिमे यदा-कदा हिन्दीआइन गन्ह लगनि तँ ओ लगले मछाइनमे बदलि जयतनि। कारण कथामे देशकोशक सौरभ भरल अछि ओ जे बाहरी शब्द आयल से पचि गेल। धड़फड़मे छपाइक जे गड़बड़ भेल अछि ताहि लेल अपन प्रेमी पाठकक समक्ष खाली दण्डप्राणायमे टा कयल जा सकैछ। किमधिकं सुधीसहृदयेषु ?

देवकान्त झा

निदेशक-सह-सचिव

आत्माभिव्यक्ति

'स्वयं'के उपगृहीत करबासँ पहिनहि 'स्वयं' के हेराय नहि दी...इ आशंका कखनहुँ-कखनहुँ एकटा विकल आ विशृंखल मानसिक स्थिति मे धकेलि दैत अछि। आ एहि क्षणमे अपन जिनगीमे भटकल बीतल अनगिनत चेहरा-मोहरा आ संवाद-परिसम्वादक बरियाती हमर चेतनाक तप्त धरातल पर बरखाक मेघ जकाँ झूकि जाइछ। एतेक लग-एतेक लग जे एकटा हल्लुक प्रयाससँ हम ओकरा छुबि सकैत छी। भावावेशमे हमर आँगुर स्वत: मेघ दिसि उठैछ। मुदा स्पर्शातुर आँगुर आ झुकल मेघक मध्य तइयो एकटा निर्मम दूरी रहि जाइछ। हम वस्तुत: एहि दूरीकेँ मिटएबाक प्रयासमे छी। हम अपन आत्मा, कल्पना आ विचारकेँ बेचबा लेल नहि चाहैत छी मुदा अर्पण करैत छी अपन पाठक-पाठिकागणकेँ। हुनक अन्तर्मनक तार हमर कल्पनासँ झंकृत भ' जाय, हम सफल भ' जायब ?

एहिमे संग्रहीत प्राय: सभ कथा १९६३ सँ १९७० धरि पत्रिका सभमे प्रकाशित भ' चुकल अछि। अनुभूतिक सत्यता यदि कथा उपन्यासक मेरुदंड अछि तँ एहि कथा सभक पाती पाती एकटा अकासक नीचा समाजमे साँस ल' रहल अछि। भाषा आ शब्दक सीमासँ फराक भ' सहृ संवेद्य बनि अनुभूत करबाक आग्रह !

> "दी ह्यूमैन हार्ट हैज हिड्डन ट्रेजर्स,
> इन सीक्रेट, केप्ट, इन सायलेन्स सील्ड—
> दी थाउट्स, दी होप्स, दी ड्रीम्स, दी प्लेजर,
> हूज चार्म्स वेयर ब्रोकेन, इफ रीभील्ड,"

२१ नवम्बर १९८८ — शेफालिका वर्मा

प्रवंचक

'एक मुट्ठी मिले माइजी......'

अपन ओछाओन पर कछमछाइत हमर कानमे गूँजि गेल। गरमीक तप्त दुपहरिया, पसेनासँ लथपथ लोक बेचैन। हम एकसरे घरमे छलहुँ, थाकल पड़ल। 'मिले माइजी'···ओह···ई कोन समय थिक भिखमंगा सभक अबैक ? कतेक बेर बजैत छी सप्ताहमे एक दिन रवि क' आयल कर ! मुदा ई सभ बुझ' बला अछि ? एक आदमी अलगसँ रहबाक चाही भीख देबाक लेल। भोर भेलैक नै कि 'मिले माइजी...।' स्कूल, कॉलेज, ऑफिस भोरका टाइम कतेक व्यस्त रहैत अछि। सुईयाक नोकपर घरक सभ प्राणी दौड़ैत रहैत अछि; तखनो 'मिले माइजी...।' हम रोटी बेलि रहल छी। हाथ चिक्कससँ औंटल-आँटल...पिंकी स्कूल लेल किताब सरिया रहल अछि, लीली केश थकरैत छलि—ई अपने दाढ़ी बनबैत... आखिर ककरा कही एक मुट्ठी भीख द' अबहीक। स्वरकेँ कने दबा हम पिंकी-लीलीकेँ बजबैत छी।

'मम्मी अहूँ हद करैत छी। स्कूलक अबेर भ' रहल अछि······।' भनभनाइतो एक बेरि जा क' कहियो काल भीख द' अबैछ। ओना अपने त' हम सदिकाल भिखमंगा सभ लेल प्रस्तुते रहैत छी।

लाख बजैत छी, भुकैत छी मुदा बाप-मायक देल संस्कारो अछि जे याचक खाली हाथ घुरय नहि। ओना एकरो पाछाँ एकटा इतिहास अछि। बच्चेमे एकटा कोनो सिनेमा देखने रही जे ब्रह्मा, विष्णु, महेश भिखारीक भेष ल' भीख माँग' आयल रहथि। ओ गीत···'बड़े प्यार से मिलना सबसे दुनियामें इन्सान रे, क्या जाने किस वेश में बाबा मिल जाए भगवान रे······' आ ई जखन मोन पड़ैत अछि त' नस-नसमे रक्त-प्रवाह तीव्र होअ' लगैत अछि। ओएह भिखमंगा भगवान त' नै थिक ? दौड़ैत छी भीख देब' लेल। रातुक रोटी ढेर पड़ल अछि। सोचैत छी एकटा बासिये रोटी द' दैत छियैक, आ जहिना रोटी दैत छियैक की रोटी उठा क' फेकि दैत अछि।

'बासि रोटी नै खाइत छी······' आ एकटा तीव्र अवमानना आ अहंकारमे डूबल ओ भिखमंगा चलि जाइत अछि। भगवानक साक्षात्कार लेल डूबल

हमर मोन तिक्त भ' जाइत अछि। मनुक्ख की आसानीसँ मनुक्ख भ' सकैत अछि ? गाछ-बीरीछ आसानीसँ गाछ-बीरीछ बनि जाइत अछि, पशु-पक्षी आसानी सँ पशु-पक्षी भ' जाइत अछि, मुदा मनुक्खकेँ मनुक्ख बनबा लेल बड़ दुःख, बड़ पीड़ा आ कालक ढेरो प्रभंजन सह' पड़ैत छैक। आइ देशकेँ ई कृत्रिम भिखमंगा सभ आओर भिखमंगा बना देत। एक बेर एहिना हम बजने छलहुँ 'हौ हाथ-पयर छह तखन भीख किएक मँगैत छह। काज करह आ खा !'

'काज के' दैत अछि माइजी—?' दीन स्वरमे बाजल। हम आन बाड़ीमे दृष्टि दौड़ेलहुँ—दूभि आ घास एक दोसराक आलिंगन पाशमे चिर निद्राक प्रतीक्षा क' रहल छल। 'हे, ई बारीक घास-दूभि सभ उखाड़ि दहक। एकटा टाका हम द' देब'।'

'माइजी भीख देबाक अछि त' दिअ', उपदेश लेबा लेल हम नै आयल छी।' हमरो जिद्द लागि गेल···।

'नै, तोँ जाह—हाथ-पयर अछैत भीख मँगैत अछि कोढ़िया।' ओ शानसँ उठि चलि गेल। मुदा, तकर बाद हमर मोन छटपट कर' लागल। ओह ! चुपचाप भीख द' दितिऐक। व्यर्थे हम बहस कर' लगलहुँ। खाली हाथ चलि गेल ? कहीं भगवाने नै होथि। आ सिनेमाक सीन मोन पड़ि गेल जे भगवानो त' हृष्ट-पुष्ट योगीक वेशमे भीख माँग' आयल छलाह। अनर्थ त' नै क' देलहुँ ? हे भगवान—ई की ? मुदा नै—ई योगी त' नै छल। हृष्ट-पुष्ट त' अवश्य छल मुदा फटलाहा बेल-बॉट पहिरने छल—तखन मोन शान्त भेल ······।

नै भगवान बेल-बॉट पहिरि कहियो परीक्षा नहि लेताह। आखिर हुनको अपन मर्यादा छनि, अपन सीमा छनि······।

'माइजी···एक मुट्ठी···'आब स्वरो दीन भ' गेल। हमर संस्कारी मोन तुरन्त भीख देबा लेल बिदा भ' गेल। एकटा कृशकाय दीन-हीन कारी झामर-नांगर भिखमंगा बैसाखी लेने घामे-पसीने अपस्याँत भेल। ओकर अवस्था ओकरा अपाहिज देखि अपना पर आक्रोश उठि गेल ! कखनो दौड़ि क' जाइत छी आ कखनो···। ओकर दशापर आँखि हमर वेदनासँ व्यथित भ' उठल। कनेक चाउर ल' गेलौं देबाक लेल। सतृष्ण नयनसँ चाउर दिस तकैत बाजल- 'माइजी ! अन्न ल' हम की करब ? हमरा के अछि जे किछु बनाओत। पैसा किछु द' दिअ'···कौन फुटहा खा' पानि पीबि लेब'। आ हमरा छातीमे ज्वारि उठल···आह···

···आइ बासियो रोटी घरमे नै अछि। दुपहरियामे चौका बरतन नहा'-धो' बैसल अछि। हुनकर जेबीमे हाथ देलहुँ। एकटा अठन्नी भेटल। एक क्षण ठमकि गेलौं, फेर दौड़ि ओकरा द' देलिऐक···। कृतज्ञतासँ ओकर नयन नमित भ' उठल। ढेरो आर्शीवाद दैत ओ चलि गेल।

हमरा मोनमे आइ आंतरिक खुशी भेल। आजुक भीख जेना सार्थक भ' गेल। सुपात्रक हाथे, अवश्ये भगवान हेताह। विकलांग अपाहिजेमे त' भगवान रहैत छथि। हम बड़ खुशीमे छलहुँ। भीख देबाक चाही मुदा अपाहिज विकलांग केँ···मुदा कैकटा विकलांग अबैत अछि ? चाही त' ढेर किछु मुदा होइत की अछि।

आब ओछाओन पर गरमी चानन भ' गेल। सरिपहुँ मोनक तापसँ तन तप्त होइत अछि। आ हम त' विशेष रूपेँ। मोनमे जे किछु भावना अबैत अछि ओकर प्रभाव तन पर तुरंते आबि जाइत अछि। खुशीक लहरि मोनमे उठैत अछि···हमर समस्त देह मन वीणा सन बाजि उठैत अछि, आ उदासीक कनिको स्फुरण होइत अछि त' हमर चेहरा सुखा जाइछ। जराह देह भ' जाइत अछि। एहि लेल ई हरदम हकताह—अहाँ क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा···सत्ते मोनक परिधि सँ भिन्न आदमी तनकेँ कोना रखैत अछि, हम बुझि नहि सकैत छी। कहताह— 'अहाँ केँ जे नीक बात कहैत अछि, तुरत ओकरा पर विश्वास क' लैत छिऐक। ओ अहाँक विश्वासकेँ खंडित करैत अछि। हमरा हँसी आबि जाइछ। ठीके त' हमर विश्वासक रक्षा नहि कयल जाइछ। सभक विश्वास हमरा लग अछि। ओ हमर विश्वासक खंडन करैत अछि। ओकर विश्वास हमरा लग अखंड-अक्षुण्ण रहैत अछि। खडनक दर्द हम सहने छी आ जनैत छी। जे हमरा स्नेह देलक ओकरे लेल किछु नै क' सकलहुँ जे हमरा घृणा देलक ओकरो चोट नहि पहुँचा सकलहुँ। सभ दुःख, सभ सुख, सभ कष्ट, सभ आनन्द कलेजाक भीतर पोसि रखलहुँ। ककरो सँ मुँह खोलि किछु कहि नहि सकलहुँ। एहन स्वभाव ल' जन्म किएक लेलहुँ।

दोसर दिन सभकेँ यथा स्थान बिदा क' महिला समितिक मीटिंगमे जयबा लेल तैयार भेलहुँ···'एक मुट्ठी···माइजी···' ई सभ स्वरकेँ अभ्यस्त हमर कान भ' गेल छल। एक मुट्ठी भीख द' जल्दी-जल्दी घर बन्द क' रिक्सापर बिदा भेलहुँ'। मोनमे फेर अबैत कालक 'एक मुट्ठी···माइजी···'घुमरैत रहल। काल्हुक देल भीखक आह्लादक पुनरावृत्ति भ' गेल। अपरिमित संतोषसँ करेजा चाकर भ' गेल। हुँह ! ई त' ओहिना कहैत छथि जे अहाँकेँ सभ ठकि लैत अछि। मोन आबि जाइत

अछि—हमर देओर पहिल बेर बम्बई गेल रहथि। स्टेशनसँ बाहर ओहिना भेटलनि एकटा अर्थी ल' चारि गोटे ठाढ़…'बाबू जलाने के लिए लकड़ी नहीं है, कुछ पैसा बाबू…संवेदनशील भावुक हृदय हुनकर ! तुरत जेबीसँ पाँच टाका निकालि द' देलथिन। कनिये आगू जा क' देखैत छथि जे अर्थी फेकल अछि आ पाँचो गोटय (चारिटा अर्थी पकड़ वाला आ एकटा मुरदा बनल आदमी) पैसाक बँटबारा क' रहल अछि…। हम सभ बड़ हँसल छलहुँ। औ बाबू ! ई दुनियाँ छियैक दुनियाँ। एहिठाम बड़ प्रपंच अछि…बड़ धोखा अछि…लोक कतेक तरहसँ एक दोसराकेँ ठकबाक प्रयत्न करैत अछि ? केओ कोनो भेषमे केओ कोनो भेषमे…।

सोचैत-सोचैत हमरा हँसी लागि गेल। एकाएक रिक्शा झटकासँ रूकि गेल। 'की भेलौक हौ ?'

'चेन उतरि गेल माइजी……'

'ओह !' हम चैनक साँस लेलहुँ। बगलमे एकटा चाह पानक दोकान छलैक। अनायास हमर नजरि ओहि दिस उठि गेल। आ हम चौंकि गेलहुँ। काल्हुक नाङर भिखमंगा खूब बढ़िया कपड़ा पहिरने चाह पीबि रहल छल। मोड़लका टाँग सोझ…एकदम सोझ छल……। की हमर आँखि धोखा खाइत अछि। हम आँखि मलि-मलि देख' लगलहुँ। कृशकाय श्यामल किशोर…आँखिमे दीनता नहि विद्रूपता भरल छलैक…अपन संगीकेँ हँसि-हँसि कहि रहल छल—'रौ भीखो मँगवाक कला होइत छैक। सभक बसक बात नहि थिकैक—करूणा दीनताक साकार प्रतिमा बनि जो…देखही…कतेक अठन्नी टन्न-टन्न डिब्बा मे……' आ हमर आँखि विस्फारित भ' गेल। लागल जेना हमर सभटा संतोष सभटा खुशी हमरे मुँह दूसि रहल हो।……



करिया मेघ गोरकी बिजुरी

'अहाँक हाथक बनल चाहमे कतेक मिठास अछि'—

'जतेक अहाँक बातमे अछि।'

प्राती—ठोरसँ कप लगौने मोहक दृष्टिसँ तकैत बाजल गगन—आब अपन नव कविता नहि सुनायब ?

अवश्य सुनायब—आ प्रातीक अधर जेना अन्तरक सभटा भाव छिरिआय देलक—

हम केकरो वेदना छी
स्मितिक छाहरि मे पड़ि-पडि
जोहै छी अपन मुस्की।
नोर चुअल आखि सँ
चान भ' गेल खुन्डी-खुन्डी …………

अहाँ बड़ सेन्टीमेन्टल छी प्राती। नामो अछि ने ?

हँ गगन, हम ओएह प्राती छी जे उषा कालसँ पहिने लोकक ठोरक सिंगार बनि जाइत अछि।

'एकटा बात पूछू प्राती ?'

'पूछू'—धरती दिसि तकैत बजलीह प्राती।

'अहाँ हमरासँ एतेक दूर-दूर किएक रहै छी ? कतेक खुलि क' हमरा सभ मिलैत छी मुदा मित्र रुपेँ। हम ओहिसँ बढ़ि क' अहाँमे किछु खोजैत छी।'

प्राती भीतरे-भीतर काँपि गेलीह। ओकर करेज ओकरा मुंहमे आव' लगलैक।

ओ मुंहमे आँचरक खुंट खोंसि अपन कानब रोक' लगलीह।

'प्राती की बात अछि। अहाँ ऊपरसँ एतेक प्रसन्न रहितो भीतरसँ एतेक निराश।'

'गगन, हमरा सभ की एकटा नीक मित्र नहि छी? हमर मित्रतामे कोन कमी आयल?'

'मित्र—हूँ' हूँ—अभ्यर्थनाक स्वरें गगन बाजल—मित्रताक कमी-प्राती, बेश मित्र सही मुदा असली मित्रमे सेहो एक दोसराक हृदय बूजल पोथी होइछ—जखने मित्रतामे किछु लाथ कयलहुँ, तखने दुराव आबि जाइत अछि।'

'हम अहांके कोना बुझाबी गगन?'

बेश गगन, आब जाइत छी। माय एकसरे बाट तकैत हेतीह।'

—आ प्राती उत्तरक अपेक्षा बिना केने ओहिठामसँ चलि अयलिह।

गगन बहुत व्यथित भ' गेल। ओकरा दिमागमे एके शब्द नचैत छल—

'प्राती'।

ओकरा लागैक जेना ओ स्वयंसे प्रेम करबाक बादो ककरो आरसँ प्रेम करैत अछि? एहन प्रेम जाहिमे जीवन छल, जाहिमे आशाक प्रकाश-किरण छल। ओ छोट-छीन प्रेम ओकर मोनकें शान्ति दैत छल, आशा आ बिश्वास दैत छल।

'बेटा आइ बड़ उदास देखैत छियैक?'

'कहाँ माय—'गगन चौंकि हँसि बैसल जेनो केओ खलिया बरतन चूल्हि पर चढ़ा देने होइक।

'जो चूपि फिरि आ। की घरमे बैसल छें?'

'ठोरना।'—नौकरवाकें बजबैत गगन बाजल—देखही तँ हम रुमाल आ फौन्टेन कत' राखि देने छिऐक?

भोरसँ नहि भेटैत अछि।'

'बेटा, आब तोरामे बिसरबाक आदत आबि गेल छौक। तँ आब तोरा

कनियाँक आवश्यकता छौक जे सभ चीज सरिआय क' रखतौक।'

गगन किछु नहि बाजल। ओ एकटा मृदु मुस्कानक संग घरसँ बाहर निकलि गेल। बाहर आबि सोच' लागल आब कत' जाय?

पयर स्वत: प्रातीक घर दिसि बढ़ि गेलैक। नहि जानि गगन कें की भ' गेल छलैक? ओकर मोन-प्राणमे खाली प्राती-प्राती समायल रहैक। नेनपनाक स्नेह आब प्रेममे बदलल जाइत छलैक। मुदा प्राती? गगन ओकर अन्तरक थाह नहि बुझि सकल छल। प्रातीक पिता डिप्टी इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स छलथिन। गगनक पिता सेहो कोनो पैघ ऑफिसर रहथिन। दुनू एके शहरमे। तखन प्राती आ गगन दुनू बेबरे रहय। दुनूमे बड़ स्नेह छल। मुदा ३-४ बरखक बाद प्रातीक पिताक बदली दोसर शहरमे भ' गेलनि। आ आठ बरखक बाद जखन भेंट भेलैक तँ दुनूक पिता स्वर्गवासी भ' गेल छलाह। आ गगन डाक्टरीपास क' आब हाउस-सर्जन छल।

अपन विचारमे ऊब-डूब करैत गगन प्राती ओत' पहुँचल। प्रातीक माए बाहरमे ठाढ़ि छलीह—

'की हौ, गगन आबह-आबह। माए नीके छथुन कीने?' हँ काकी, सभ नीके अछि। प्रातीकें नहि देखैत छियैक।'

'प्राती? ओकरा नहि जानि की भ' गेल छैक? एम्हर २-३ दिनसँ गुमसुम बैसल रहैत अछि। हँसनाइ, बजनाइ सभटा बन्द। एहन कतौ लोक होअय।

'प्राती!—गे प्राती! एम्हर आ, देखही गगन आयल छौक।' गगनक नाम सुनितहि प्रातीक छाती जोर-जोरसँ काँपय लगलैक।

'प्राती—प्राती—चिकरैत गगन स्वयं ओकर कोठलीमे गेल।'

'बाप रे! प्राती, एहिकोनमे अहाँ की क' रहल छी? चलू बाहर होउ।'

—काकी हमरा सभ कनिटा भगवती स्थान तक घूम' जाउ?

'जाह ने, एहिमे पुछबाक कोन बात! प्रातीयोक मोन बहलि जेतैक।'

पयरे-पयरे प्राती आ गगन भगवती स्थान दिसि चलल जाइत छलथि। प्राती मोने-मोन डरैत छलीह जे रस्तामे फेर ने कोनो प्रसंग गगन उठाए दिए। मुदा,

दुनू गोटे गुमसुम भगवती स्थान पहुँचि गेलैथ ।

प्राती—भगवती स्थान हमरा लेल ओ खजाना अछि जाहि ठाम हम जे मँगलहुँ से भेटल । एहि मन्दिरमे अहाँ एकटा अभूतपूर्व ज्योति लगैं छी जे कि हमर मोन-प्राणकेँ ज्योतिर्मय क' देलक । विश्वास राखू प्राती, आब हमर समस्त व्यक्तित्वमे अहाँक आलोक पसरि गेल अछि । लगैछ अहाँ नहि रहितहुँ तँ किछु नहि रहितैक । ई पृथ्वी नहि रहितैक, ई आकाश नहि रहितैक । चान-तारा किछु नहि रहितैक । फूलमे पराग नहि रहतैक, पात-पातमे जीवन नहि । भगवानक सप्पत प्राती । ई सभ किछु अहाँक अस्तित्वसँ अछि ।

प्राती किछु नहि बजलीह । लागल जे गगनक मुँहसँ बहरायल शब्द सपनाक धुँआयल मेघक ओ परदा अछि जे हवाक ऊमिपर लहराय रहल अछि । ओहिपर बैसल प्राती जेना कोनो अलौकिक दिशामे चलल जाइत होअय । अचक्के जेना प्रातीकेँ कोनो झटका लगलैक । जेना केओ उड़ैत मेघसँ ओकरा धरती दिसि धकेलि देने होइक । आ प्रातीक साँसे देह थर-थर काँपय लगलैक । ओकरा हृदयमे कखनो एकटा सुखद अनुभूति घुलि जाइत छलैक तँ कखनो एकटा अप-राधक भावना । कखनो किनार दिसि बिहुँसैत बढ़ैत छलि तँ कखनो मझधारमे डूबि जयबाक भयसँ डेरायलि । गगन आस्तेसँ बाजल—

'प्राती' !

'हूँ ऽ ऽ ऽ ह'—प्राती आँखि मुनने बजलाह ।

'अहाँ कतेक नीक लगैत छी प्राती ? नहि जानि अहाँक अन्तरमे कत'सँ एतेक शान्ति आ सन्तोषक सागर उमड़ि गेल अछि ? अहाँ लग हमरा लगैछ जे हम रंग आ आलोकक घाटीमे भटकि रहल छी, इन्द्रधनुषक झूलापर झलि रहल छी । अहाँक प्रेमसँ पैघ संपदा हमरा लेल किछु नहि ।' गगनक मुँहसँ बहरायल एक-एक आखर मौधक घाटमे हिलकोर मारैत अनुभूतिक झीलमे डूबि जाइत छल । झीलक लहरि पुलकित उन्मादसँ जलतरंग बजबैत छल ? मुदा तुरंते प्रातीक आँखिमे एकटा नुकायल-नुकायल डर काँपय लगलैक ?

'अहाँ किछु नहि बजैत छी, प्रानी, किएक प्राती ?'—भाव विह्वल स्वरे बाजल गगन ।

'हमरा किछु बजबाक अवसर कत' द' रहल छी—अहाँ ?'

'नहि, नहि आब हम अहाँके किछु बजबाक समय नहि देब । काल्हि अहाँ हमरा ओत' चलब ने माएसँ भेंट करबा लेल ?' —हुलसित गगन बाजल ।

'चलब'—आत्मविस्मृतिक स्वरमे बजलीह प्राती ।

'माँ, अहाँकेँ एकटा बात मोन अछि ?'

'कोन बात रे ? बाज ने हमरोसँ नुकबैत छें ?'

'माए तो कहने छलीह ने । तों जे पसिन्न करबें हम ओकरे सँ तोहर विआह करबौक ।'—घबाइत, लजाइत कहलक गगन ।

'हँ-हँ अवश्य बेटा, हमरा खूब मोन अछि । माने तों कोनो लड़की पसिन्न केने छें ? बेटा, हमरा एकटा पुतहुक काज अछि, सुघड़ पुतहु, बस ।

के थिकौक ओ लड़की ?'

'माए, हम काल्हि ओकरा नेने अयबौक ।'

आ गगनक माएक मोन प्रसन्नताक सागरमे डूबि गेल, बेटा राजी तँ भेल ।

दोसर दिन भरि रास्ता प्राती पूछैत रहलीह आइ कोन एहन बात अछि जे एतेक उमंग सँ हमरा नेने जा रहल छी ?'

'अहाँ ओहिठाम चलु प्राती तखन बुझबैक ।' प्रातीक करेज कोनो अदृश्य आशंकासँ कंपित छल । गगन ओकरा बाहर ओसरापर पायाक अढ़मे ठाढ़ क' भीतर जाय, माएक कानमे कहलक—'माए पुतहु एलौ ?'

कत' ? कत' नुकेलीह ?' आ ओ दौड़ले ओसारा पर चलि गेलीह कि प्राती कें समक्ष देखि थकथकाय गेलीह' । मुदा पुन: ओएह उत्साहसँ बजलीह 'प्राती बेटी, आ अपना बाँहिमे प्रातीके ल' गगनक माए भाव-विभोर भ' गेलीह । प्राती चकित ठाढ़ । ओ बुझि नहि सकलि जे चाची एना अनुगत रूपेँ किएक प्रेम दर्शा रहल छलीह । गगन केवाड़ लग ठाढ़ अपन माथ कुड़िआबैत छल आ कनखीसँ प्रातीके देखि विहुसि रहल छल ।

आब भीतरो जाय देबही कि बाहरे ठाढ़ रखबही ?—गगन बाजल ।

'अरे हँ, हँ,—मुदा कनेक सोचि माए पुन: बजलीह—

'नहि-नहि एना नहि, कनियाँ जकाँ पहिने प्रातीक मुँह मीठ करैबैक तखन जाय देबैक।'

'कनियाँ—'आश्चर्यसँ प्राती एक डेग पाछा हटि गेल। ओकरा लगलैक जेना चारु कात बन्दूकक गोली फटाफट छूटि रहल होइक।

भयंकर भूचाले आबि गेल हो, घरक दीवार, छत सभटा घूम' लागल हो'।

'हँ—प्राती; माए अहाँके पोतहु बनाब' चाहैत अछि।'—गगनक बात सुनि प्रातीक लगलैक जेना केओ लोहाक छड़ धिपाकेँ दागि देने होइक। प्राती एक आँखिसँ गगनके देखलक जाहिठाम अगाध प्रेम छलकि रहल छल ? प्रातीक चेहरापर जेना कोनो बिरड़ो उठि गेलैक। बरबस ओकर आँखि भरि अयलैक। नकारात्मक मुद्रामे पहिने ओ अपन मुड़ी डोलाय देलक फेर बाजलि—नहि, नहि ओ कहियो नहि होयत।'

'प्राती ?' गगन विस्मित।

मुदा प्राती चोट्टे ओहिठामसँ पड़ायलि। एक क्षण तँ गगन अवाक् रहल। माए हत बुद्धि रहि गेलीह। मुदा गगन प्रातीक पाछा दौड़ल। 'प्राती-ठाढ़ि रहू-प्राती-ठाढ़ि रहू—' बताह जकाँ चीकरैत दोड़ैत रहल गगन।

'गगन बाबू, घूरि जाउ हम अहाँक योग्य नहि छी—भगैत बजलीह प्राती। 'आब घूरब असंभव अछि, प्राती ठाढ़ि रहू ! ठाढ़ि रहू ! चीकरैत गगन बाजल—एकाएक प्रातीक पयर एकटा बड़का पाथरसँ लागि गेलैक आ ओही ठाम खसि पड़ल। एकटा चित्कार प्रातीक मुँहसँ निकलल आ प्राती अचेत भ' गेल। 'प्राती-प्राती अधीर स्वरे बाजल गगन—अहाँके की भ' गेल प्राती ?'

प्रातीक माथ फुटि गेल छल आ शोणितक धार बहि रहल छल ? गगन जल्दी एम्हर ओम्हर ताकि एकटा रिक्शा बजौलक आ अस्पताल ल' गेल। 'एमरजेन्सी वार्डक' बाहर गगन बेचैनीसँ एम्हर ओम्हर घुमैत छल। नर्स बहरायल।

'सिस्टर ! केहेन मोन छैक मरीजक ?'

'डाक्टर —साहेब भीतर आऊ।'

—कि गगन भीतर गेल। प्रातीक भरि माथपट्टी बान्हल छल मुँह पर पीड़ा आ अवसादक चिन्ह। गगन आँखि तीति गेल।

'ओह कतेक चोट आयल होयत—प्रातीक हाथ अपना हाथमे लैत गगन बाजल।

'हुँ' —डाक्टर साहेब—'एकटा आर दुःखक बात'—

'की'—उत्सुकता आ चिन्ता सँ गगन मुड़ी उठौलक।

डाक्टर-साहेब—'अहाँक पत्नीक 'एबॉर्सन' भय गेल।

'की ? एबॉर्सन ? नर्स—जोरसँ चित्कार क' उठल गगन। फट्ट द' ओकर हाथ प्रातीक हाथसँ खसि पड़लैक।

नर्स ओकरा धैर्यक बात दू टा कहि बाहर चलि गेल। गगन फाटल-फाटल आँखिसँ प्रातीक मुँख देख' लगलैक।—एकदम निरीह बालिका सन चेहरा जाहि पर एखनो सीता सन पवित्रता झलकि रहल छल। की ओएह प्राती छी ! माए बन' वाली ! एकटा कुमारि माए ! गगन के लागल जेना ओकर चारुकात ठाढ़ महलक दीवाल सभ ढहि-ढहि खसि रहल हो। जेना मूसलाधार वृष्टिसँ गगनक नाक कोसीक चढ़ैत बाढ़िमे डूबि रहल हो। आ गगन बड़ जोरसँ भागल ओहिठामसँ। ओकर माथ केबाड़क पाटसँ भिड़ि गेल ओ छर-छर शोणित बह' लागल। मुदा कोनो तरहें भागल। रहि-रहि ओकर आँखिक आगू प्रातीक चेहरा नाचि उठैक। कलंकिनी प्राती—नारीक नाम पर कोढ़—आ सोझे भगवती स्थान जाय भगवतीक पयर पर खसि पड़ल—माँ ई की कयलहुँ ? हमर जीवन अन्हार कय देलहुँ माँ ? मुदा भगवतीक ठोर पर ओएह एकटा शांत आ दृढ़ मुस्कान छल। कनिक काल धरि ओ भगवतीक सौम्य मुँह बिसि एकटक तकैत रहल फेर बुदबुदायल—'हमरा क्षमा क' दिअ' माँ।

माए पूछलनि—'बेटा कनियाँ कहाँ गेलौं ?'

'मरि-गेलै—कटु स्वरे बजैत गगन अपना कोठरीमे जा केवाड़ बन्द क' लेलक। जखन प्रातीकेँ होश आयल तँ नर्स सभ बात कहलक—माए बनब हँसी ठट्ठा नहि छियैक ? खैर धीरज राखू।—गगनक नाम सुनितहि प्रातीक चेहरा उज्जर भ' गेलैक। ठोर स्याह भ' गेलैक। आ ओकरा अपन चारु कात

अन्हार लाग' लगलैक। ओकर मस्तिष्क नाना प्रकारक ताना-बाना बुन' लगलैक—जिनगी की अछि ? एहिमे कत' रंग अछि कत' रस अछि ? खाली रेते-रेत, प्यासे-प्यास।—आ जेना प्रातीक कंठ सुखा गेलैक। ओ एकटा पियासल चिड़ै जकाँ हँफसय लागलि। ओकर अन्तरक गहींरइ कोनोभाव विकल व्यथित भ' क' हाथ पयर पटक' लगलैक।—पानि-पानि-पानि कत्तहु नहि। खाली रेत—सूखल मैलछाह।—आ ओ विवश भ' क' पड़ि रहलि। एकटा बोझिल प्राण नाशक झुनझुनी ओकर सौंसे देहमे पसरि गेलैक। ओ नहि बुझैत छलि कि ओ की चाहैत छलि ? ओ बस एतबे बुझैत छलीह कि ओकर जीवनमे अभाव अछि, तृष्णा अछि, घुटन अछि। आ ई भावना छैनी जकाँ ओकरा प्रहार करैत छल। ओकर उपचेतनामे एकटा द्वन्द्व मचल छल। आब ओकर जीवनसँ गगन बहुत दूर चलि गेल से प्राती बुझैत छलीह—आब ओकर जीवनमे रंगीन राति नहि छल। इजोतक चांदनी नहि छल मुदा, आगि बरसाबैवाला प्रचंड सूर्य आकाश पर चढ़ि रहल छल। रौद कोढ़क दाग जकाँ घर आँगनक दीवार पर बड़का-बड़का दाग बनाय रहल छल। एहि झकाझक प्रकाशमे जीवनक सभटा कुरुपता उजागर भ' गेल छल।

भिनसरबा भेल जाइत छलैक आ गगन भरि राति आराम कुर्सी पर पड़ल-पड़ल सोचैत रहि गेल। ओहि निस्तब्ध वातावरणमे एकटा दर्द भरल स्वर गगनक कानसँ टकरायल—'मोरा मन मनहि रहि हे ऊधो, मोरा मन मनहि रहि।' गगन चौंकि उठल। के गबैछ ?—'ओह माँ! प्राती गाबि रहल अछि।—'सोचि ओ अवश जकाँ माथ पाछाँ कयलक कि पुनः जेना चौंकि पड़ल—प्राती—प्राती नागिन प्राती आ ओकर नस-नस जेना ऐँठ गेलैक। ओ भागल माए लग—'माए माए बंद कर इ प्राती बन्द कर माए भगवानक वास्ते। माए आश्चर्यमे पड़ि गेलीह। ओ पुत्रक केशमे हाथ दैत बजलीह—'बेटा की छैक जे प्रातीक नामसँ एना कर' लगैत छें ? कतेक दिन भ' गेल मुदा तों अपन आँगनक दुआर अपने बन्द कय देने छें।

'माए—रुद्ध कंठे बाजल—गगन।'

'बेटा एकटा बात पुछियौक ? प्राती ओहि दिन किएक भागि गेल छलीक ?

'माए ओकरा बिसरि जो माए' बिसरि जो।'

'अँय हमरा कहैत छें बिसरि जाय लेल। मुदा तूँ किएक नहि ओकरा बिसरैत छें ?—माएक स्वर भरयि गेलैक।—बेटा, हम बुझैत छियौक जे तूँ प्रातीक बिना नहि रहि सकैत छें।'

'माए भगवानक लेल ओकर नाम बेर-बेर नहि ले।'

'की बात छै जे तों एकाएक ओकरासँ घृणा कर' लगलें ?'

'माए ओ एहि घरकेँ कोनो खुशी नहि द' सकैत अछि।'

'से की ? ओ एहि घरक पुतहु नहि बनि सकैछ ?

'नहि माए नहि तो नञि सुनि सकै छें जे ओ कतेक नीच अछि ? माए डाक्टर कहलक जे ओ माँ बन' वाली छलि।'

'आब माए तोँही कह जे एहि पवित्र घरमे कोनो कलंकिनीक स्थान भ' सकैत छैक ?'

तोरा सन देवीक छाहरिमे कोनो पतिताक अनलासँ कुलमे दाग नहि लागत ?—बजैत गगनकेँ गर बाझि गेलैक, आँखिसँ नोर बहय लगलैक। माए चुपचाप ओहिठामसँ उठि गेलीह।

गगन, एहिठाम की क' रहल छह ? चल 'धूम' लेल।—अचक्के गगनक अभिन्न मित्र सतीश पहुँच गेल। नहि हौ ! सतीश। एही ठाम बैसह। कतौ जयबाक इच्छा नहि अछि। मूड आँफ अछि।

'अच्छा मूड के की भ' गेल छह। नहि जानि इ ब्रेन डिपार्टमेन्ट ठीक ऐन मौकापर 'मूड' किएक 'आँफ' क' दैत छैक। शायद 'एलेक्ट्रीसीटी डिपार्टमेंटक हवा लागल जा' रहल छैक—सकौतुक बाजल सतीश—अच्छा आब सुनाबह अपन प्रातीक हालचाल।'

'दोस्त ओकर नाम हमरा लग नहि लएह ;'

'अँय की ?' सतीशकेँ लगलैक जेना सांपक फनपर ओकर पयर अचक्के पड़ि गेल हो।

'हँ दोस्त हँ—ओकर नामसँ तोहूँ घृणा कर' लगबहक। ओ माए बन' वाली छलीह माए। बिन बापक बच्चाक माए, कुमारि माए। निमिष मात्र

लेल सतीशकें लगलैक जेना कोनो अजगरक मुँहमे ओ चलल जाइत अछि। मुदा तुरंते आन स्वाभाविक मुस्कानक संग बाजल—'बड़ बेश, ई सुनिते हमरा तोरेसँ घृणा भ' गेल। तोरे सँ।

'की' ?—चकित भ' गेल गगन।

'गगन, मरियम सेहो कुमारि माए छलीह, कुंती सेहो—'

'ओहि पतिताक तुलना ओहि पवित्र आत्मा सभसँ नहि करहक।'

'कतेक दु:खक बात अछि गगन जे तों प्रातीसँ प्रेम करैत छह।'

हमरा कहियो ओकरासँ प्रेम छल मुदा आब नहि।' झूठ, अगर तोहर प्रेम सत्य रहित' तँ एहन भयानक कालमे ओकरा असगर नहि छोड़ि दितहक। एखन ओकरा तोहर सहाराक आवश्यकता छलैक। प्रेम छाउरक ढेरी नहि थिकैक जे तेज हवामे उड़ि जाय। तों प्रेम कें की बुझैत छहक ? प्रेम हमरा अछि अपना माएसँ जे आइ मरल छथि मुदा हम तइयो हुनकासँ गप्प क' लैत छी। प्रेम हृदयक निधि थिक गगन। तोँ की प्रेमक अर्थ बुझबहक ?'

प्रेमक अर्थ ई तँ नहि अछि जे एकटा कुमारि माएकें गरमे बान्हि ली ?

ई तोरा के कहलक जे ओ विन बापक अछि। ओहि बच्चाक बाप के ? ओ तोरे जकाँ पुरुष हैत जे बेचारीकें बच्चा तँ द' देलकैक मुदा बाप बनवा काल मुँह छीपि लेलकैक। वा नहि तँ बेचारी ई कलयुगिया संसारमे कोनो बलात्कारक शिकार भेल होइ ? एकटा नीक घरमे नीक लड़कीके तँ सम अपनाव' लेल तैयार भ' जाइत छैक ? मुदा प्रेमक कसौटी इएह थीक जे ओ ठोकरायल लड़कीकेँ गरक हार बना' लेअय। ओहि कलंककेँ अपना प्रेमक आवरणमे नुकाय लेअय।—

गगन किछु नहि बाजल तँ सतीश फेर बाजि उठल—आ सभ सँ नीक कुकुर-बिलाड़ि। हम जखन कोनो पशुकेँ देखैत छी तँ ओकरा आँखिमे एकेटा भाव रहैछ……मनुष्यक प्रति व्यंग्य। ओहि मानव लेल जे अपना चारूकात विध-व्यवहारक जाल टांगि अढ़ क' लेने अछि। जहाँ कोनो परीक्षाक काल आबय भट द' अढ़ क' ली।'

'मानवक बनाओल विध व्यवहार हमरा सभकेँ एकटा वैधानिक सीमामे रखैत अछि ताकि हम अन्याय नहि करी, गलत रास्ता नहि अपनाबी। गगन, एहि वैधानिक सीमाक कारण कतेक अन्याय, अत्याचार रुकल अछि से देखिए रहल छह'' एहि सीमाक कारण तँ आर उच्छृंखलता बढ़ि गेल अछि। जकरे परिणाम आइ बेचारी प्रातीकेँ—गगनक हृदयमे जेना कोनो कसक उठलैक। ओ दुनू हाथ माथ पर द' हिचुकय लागल—'प्लीज सतीश, हमरा असगर छोड़ि दैह कनिटा। ओह।'

सतीश ओहिठामसँ चुपचाप उठि चलि आयल। गगन चुपचाप एकसरे बैसल रहल। ओकर मस्तिष्कमे सतीशक वाक्य गूँजि रहल छल—'अगर तोरा प्रातीसँ प्रेम रहित' तँ ओकर कलंक केँ तोँ अपना प्रेमक आवरणमे नुका लितह।'—आ तखन ओकर मानसमे एकटा घंटी बाज' लगैक—ई की ओकरा प्रातीसँ प्रेम नहि अछि ? ओकर भीतर करेजमे जेना कोनो मरोड़ उठलैक—यदि ओकरा प्रेम नहि छैक तँ ओ आइयो किएक प्राती लेल विकल अछि ? प्रातीकेँ ओ एखन धरि मोनसँ किएक नहि हटाय सकल ? प्राती तँ ओकर यौवनक प्रथम प्रेम अछि। जे मानव मनक सभसँ पैघ सम्पत्ति होइत छैक। प्रातीक प्रेम तँ ओकर सर्वस्व अछि—मुदा की प्राती ओकरा धोखा नहि देलक ? किएक हमरा अपन निकट आब' देलक ? जखन ओकरा बुझल छलैक जे ओ अवैध सन्तानक माए बन' वाली अछि तँ किएक ने अपन स्थिति साफ-साफ हमरा कहलक ? मुदा यदि प्राती धोखे देतीह तँ ठीक समय पर जखन ओकरा बहुरिया कहलक ओ किएक पड़ा गेलीह।'—हम अहाँक योग्य नहि छी गगन बाबू, घुरि जाउ—रहि रहि ई चित्कार ओकर हृदयकेँ क्षत करैत छल। गगनक विचार एहिना ओहिना भटकैत रहल।

एखन धरि गगनक माए जागल छलीह। गगन क्लबसँ नहि आयल अछि। रातुक एक बजैत छल। एकाएक केबाड़ लग आहट सुनि माए दौड़लीह।—'माँ तो जगले छें।' लड़खड़ाइत गगन आबि रहल छल। ओकरा डगमगाइत देखि माए भरि पाँजक' पकड़ि लेलक की भेलौ बेटा ?'

गगनक मुँहसँ अबैत दुर्गन्धसँ माय बुझि गेलीह जे गगन पी क' आबि रहल छल। ओकरा हृदयमे जेना विरड़ो उठि गेल।

'छी: छी: शराब पीने छह ?

'हँ माय...हँ खूब शराब...जायब कत' प्राती चलि गेल अरे-अरे बिगड़ नहि प्रातीसँ नीक तँ शराब अछि जे दुःख दैत नै अछि, दुःख लैत अछि।' बेहूदा कहाँ के' माए तड़ाक थापड़ गगनक गालपर लगाय देलथिन। गगनक आगू तारा नाचि गेल। चट्ट द' धरती पर बैसि रहल आ रद पर रद कर' लागल। माए बड़ धीरजसँ ओकर माथ धुआय, कपड़ा बदलबाय, सूतय गेलीह।

भोरे बड़ अबेरमे गगनक नीन्न टूटल। आ रातुक बात जेना समटा चलचित्र जकां ओकरा लग नाचि उठलै। ओ लाजसँ काठ भ' गेल। ओह् देवी तुल्य माए—

'बेटा एना बताह जकाँ किएक करैत छह तों ?'

'माए हमर हृदयक धाह कोना मिझाएत ?'

'एकहि दिनमे शायद ठीक भ' जायत।'

'ई धाह कहियो नै जेतौ बेटा।'

'तखन हम की करी ?'

'हमर विपत्ति सुनबह ?'

'बाज माए तोहूँ बाज।'

'प्रातीसँ ब्याह कय ले।'

'नहि ई कोना हयत ? ओ पतिता अछि।'

'अछि तें एहि पृथ्वीपर रहवाली हमरे तोरे जकाँ एकटा कमजोर मानव जकरा यौवनक कोनो भूल भटकाय देलकैक।

'मुदा माए............

'बेटा, ओ पतिता अछि मुदा एकटा मानव अछि। भूल मानवेसँ होइत अछि, ओकर भूलकें सुधारबाक चाही, दुत्कारबाक नहि चाही। प्रेम मानव

कें देवता बना दैत छैक। तोहर सिनेह सत्य हेतौक तँ प्राती गंगाजल सन पवित्र रहि जेतौक। यदि तों प्रातीकें छोड़ि देबहीक तँ नहि जानि प्राती एहन कतेक लड़की कोनो सहारा नहि पाबि आत्महत्या क' लैत अछि आ नहि तँ वैश्या कोठाक सिंगार बनैत अछि। तोंहि सोचही एकटा स्त्री अगर वैश्या भ' जाइछ तँ साँप बनि कतेक पुरुषकें डँसि लैत अछि। एकटा नारी यदि विषाक्त भ' जाय तँ कतेक दूर धरि ओकर विष पसरि जाइ'छ। तोहर बुधियारी एहीमे छौक जे ओकर देहसँ ई बिष चूसि लहीं —'

'माए—एखन धरि हम अन्हारमे छलहुँ आब एहि इजोतकें हम अपना भाग्य रेखामे भरि लेब। प्राती हमर अछि हमर। गंगाजल सन पवित्र, पुनीत। माएक आँखिसँ खुशीक नोर बहय लागल। ओ चुपचाप ओहिठामसँ चलि गेलीह। भावावेशमे गगन प्रातीक फोटो बॉक्ससँ निकालि बाजय लागल— 'प्राती, मानव देवता नहि अछि मात्र एकटा मानवे होइछ। गलती प्रत्येक मानवसँ होइत अछि। एकटा गलतीक दण्ड यदि भरि जिनगी भेटैत रहैक तँ मानव हैवान भ' जायत। प्राती, अहाँ जरुर ककरो वासनाक शिकार भ' गेल छी। नहि तँ अहाँ सीता आ मरियम जकाँ पवित्र छी। महान छी। भगवतीक सप्पत प्राती ! अहाँक समाजमे ओएह स्थान भेटत जे एकटा उच्च कुल बधुक होइ'छ। जे एकटा पतिव्रता साध्वी पत्नीक होइछ। चाँदमे ग्रहण लगैत छैक तथापि लोक ओकरा चाने कहैत छैक।'—गगनक आनन पर कतेको रंग मचलि रहल छलैक। जेना बरसा कालमे मेघक कातमे कतौ धानी रंग बिखरि जाइ'छ कत्तौ लाल रंग, कत्तौ नील। ओकर हृदयक स्पन्दन संगीतक गुंजन बनि ओकर आकृति पर छिरिया गेलैक। आ ओहि मधुर वातावरणमे ओ प्रातीक फोटो हाथमे नेने दौड़ि गेलैक प्रातीक घर दिसि नव पुलक, नव उन्माद, नव स्पन्दनक संगे। आ दोसरे क्षण गगनक दुनू हाथमे प्रातीक मुँह छल। गगन चौंकि प्रातीक आँखिमे देखलक—जे दिनक प्रकाशमे ओ कोनो नक्षत्र जगमगाय रहल अछि ? ओ मोतीक पानिसँ धुंआयल मोट-मोट आँखि तकैत। आँखिक पारदर्शी गहींरइमे संसार भरिक कोमलता समेटने कें ओकरा दिसि ताकि रहल अछि ? ई केहेन मानसरोवर अछि जकर तरल नीलिमा मे भावनाक पवित्र मोती झिलमिलाय रहल छैक।

आ एकाएक प्रातीक आँखिमे नोर छलकि आयल। गगन अपन चारु दिसि तकलक—अन्हारे-अन्हार आ अन्हारक ओहि असीम, अनन्त, अज्ञात प्रदेशमे खाली प्रातीक सीमन्त रेखा प्रकाशक किरण जकाँ जगमगाय रहल अछि। क्षितिजक एक छोरसँ दोसर छोर धरि जा' रहल अछि आ भटकल बटोहीकेँ बाट देखा रहल अछि।



अट्टहास "बोल्डनेस"क

संगी पारिजात,

आकाशमे घुमड़ल मेघमाला आइ अहाँक स्मृति हमर अन्तर प्रकोष्ठकेँ सजल क' देलक।

सोचैत छी जे किछु नहि सोचल जेतैक त' ठीक छल, किछु नहि चाहल जेतैक त' ठीक छल। मुदा आब बड़ अबेर भ' गेल!

अहाँ सोचैत होयब जे अहाँक उपासना बड़ खुश अछि। निर्बन्ध जिनगी स्वतंत्रताक ऊर्मिल लहरिपर तरंगित! अहीं सभक बनाओल साहसिकता हमरा एतेक प्रज्वलित क' देलक। ओ साहसक प्रतिफल छल जे हम अपन 'बाबूजी' लग मुँह खोलि सकलहुँ।

आ दोसर दिन अपना सभ कॉलेजमे कतेक 'फुल ऑफ स्पिरिट' छलहुँ! लगैत छल एवरेस्टक ऊँचाइ पर चढ़ि गेल छी। 'इंगलिश चैनल'केँ हँसैत-हँसैत पार क' गेल छी।

'ऑफ पीरीयडक ओ क्षण मोन पड़ैछ जखन हमरासभ फूलक झुरमुटमे बैसि कतेक 'प्लान' बनबैत छलहुँ! कतेक तरहसँ सोचैत छलहुँ जे लड़कीमे बोल्डनेस एबाक चाही। ई की जे माए-बाप जकर हाथमे डोरी पकड़ा देलक; बिकल भेड़-बकरी लकाँ गिरह बन्हने चलू पति सेवा लेल? मोन अछि पारिजात हमरासभ कतेक जोरसँ अट्टहास करैत छलहुँ। अट्टहासक 'बोल्डनेस' देखि क्षितिज काँपि जाइत छल। अपनासभ बहस करैत-करैत इतिहासक पन्ना पर दौड़ि जाइत छलहुँ जे कोना संयोगिता बापक नहि चाहला पर पृथ्वीराजकेँ अपन पति चुनलनि, कोना कृष्ण रुक्मिणीकेँ हरण केलथि, कोना द्रौपदी अर्जुनकेँ चुनलनि······।

सत्ते पारिजात, ई सभ बात ओहि समयमे कतेक यथार्थ लगैत छल। एहि समाजक प्रति एकटा विद्रोह जनम लेने छल। खाली एतबे होइत छल जे नारी जेना होअय, स्वयंकेँ अबला नहि बुझथि। अहाँ जनिते छी जे एहि काज लेल पहिलुक साहसिक पग हमहीं उठौलहुँ। माए बापक विरूद्ध, सामाजिक मर्यादाक विरुद्ध, पहिल नारा हमहीं अपन घरमे लगेलहुँ।

एहि नारा लगयबामे खाली विद्रोहेक भावना नहि छल पारो; हमर अंतरमे एकटा लालसा सेहो मुँह उठा रहल छल जे हमर जीवन-संगी हमरे सन पढ़ल लिखल योग्य हो। आ ई कोनो अनुचित उद्याम लालसा नहि छल जकर पूर्ति नहि भ' सकैत छल।

ई नहि जे शेली, कीट्स, प्रसाद, महादेवी, मीर, गालिबक संसारसँ बड़ दूर फेका जाय आ तखनहि हम ई असंभावित व्यवहार अपन बाबूजीक संग कयलहुँ।

आइ हम स्थानीय कॉलेजमे प्रोफेसर छी। पढ़बाक लालसा त' पूर्ण भ' गेल मुदा दोसर लालसा त' कहिया नहि सारामे सोन्हिया गेल। जँ रहियो गेल अछि ओ लालसा, तँ ओहिसँ की होमय जायबला अछि। जीवनक बत्तीस वसन्त आबि पतझड़ बनि गेल। हमरा सभ आब की सोची? जिनगीक कतेक दिन शेष रहि गेल अछि! नीक कमाइत छी, नीक खाइत छी। पहिने जकाँ गरीब बापक बेटी नहि छी।

गलती तँ कतहु हमरे संग अछि। हमर ओहि गरीबीक संग, जे हमर नहि, हमर बापक छल। हम दूनू गोटे एक्के पथक पथिक छी। पारो, दिव्याक मोन अछि? कर्नलक बेटी, बाप पैसा उझलि क' डाक्टर वर ल' अनने छलैक। आ पारो, सीपीक मोन अछि की? माय—बाप दुनू कॉलेजक प्रिंसिपल। सीपीक वियाह पंद्रह हजार टाका दय इन्जीनियर लड़कासँ भेल। आ सरिपहुँ ऐंहि सभसँ इन्जीनियर डाक्टर तँ कात जाय, जे मामूली आइ० ए०, बी० ए० छथि हुनको डाक दस हजार सँ कम नहि छनि। हमरा तँ आक्रोश उठैछ ओहि लड़की सभ पर जे टाका गनब' बलाक ब्यहता भेलीह। ओ सभ मीलि जँ एकबेर 'बोल्ड' भ' अपन पति पर रोब जमाबथि जे अहाँकें हमरा ऊपर किछु बजबाक-तमसेबाक अधिकार नहि अछि कारण हमर बाबू जी आहाँकें टाका द' कीनि अनने छथि, तँ एहिसँ शनै: शनै: पतिक मानसिक दौर्बल्य ज्वालामुखीक रूप धारण करत आ ओ अपन परिवार सँ रूढ़िवादी विचार धाराकें हटेबामे समर्थ होयताह। मुदा दोसरकें बात छोड़ू।

आइ हमर बाबूजी एतेक पैसा कत'सँ आनताह जे हमरा कोनो पढ़ल-लिखल लड़का स्वीकार करत। आओर हमर पढ़ाइ-लिखाइ हमरा लेल अभिशाप भ' गेल। अन्न पेट काटि मात्र-अभिलाषाक पूर्त्ति आ हमर अदम्य आकांक्षासँ अभिभूत भ' बाबूजी कहुना हमरा पढ़बैत रहलाह। आ ई पढ़ेनाइ हुनका बड़

महग पड़ि गेलनि। हम एतेक पढ़ि गेलहुँ जे कम पढ़ल-लिखलक संग वियाह केनाइ उचित नहि लागल। आ ताहि कारण हम सतीश—कोइलाक बिजनेस कर'बला मैट्रिकुलेटक संग वियाह करब, हम बाबूजीक समक्ष 'बोल्डली' नामंजूर क' देलहुँ। ताहि कारणें बाबूजी हमरा राति दिन गंजनि करैत रहलाह। हम सभ सहैत गेलहुँ, मुदा की क' सकैत छलहुँ?

आब हम विस्मृतिक खिड़की खोलबा लेल नहि चाहैत छी पारो, मुदा अन्तरक कोनो कोनसँ जेना एकटा स्वर अबैछ जे हम गलत बाट धयने छलहुँ, हम भटकि गेल छलहुँ। ओहि समय हमरा ओना नहि करबाक चाही। सतीश बाबूक विषयमे हमरा किछु नहि बजबाक चाहैत छल। आखिर हम गरीब बापक बेटी छलहुँ! हमरामे आ दिव्या, सीपीमे तँ अन्तर होयबाक चाही, ओह! ओहि कालक ई हमर सभक सामूहिक खुशी छल जो हमरा भटकयबामे सफल भ' गेल। दोष नहि तँ हमर अछि, ने अहाँके, ने संगी सभक। ओत' आयु एहन छल जे खुशीक हल्लुक-हल्लुक कतेक सपनाक फूल तोड़ि देलक। मुदा पारो ओ सत्य नहि छल। सत्य त' आब अछि। ओहि दिन हमरा सभ जतेक खुश छलहुँ आइ हम एकसरे ओहिसँ कतेक गुणा बेसी दु:खी छी।

अहाँ एतबे बुझू पारो जे अहाँक उपासना जे सतरंगी ताना-बाना बनौने छलीह, सभटा छिन्न-भिन्न भ' गेलनि। आइ धरि हम सिनेह नामक कोनो भावना सँ अभिभूत नहि भेलहुँ। सिनेह मानवकें मेघक ऊँचाई धरि ल' जाइछ आ पातालक गहींरई मे सेहो फेकि दैछ। मुदा किछु प्राणी एहनो अछि पारो जे ने त' स्वर्गक अछि आने नरकक। दूनू लोकक तमसिन्धुमे डूबल रहैछ। ओ ककरो सिनेह नहि करैछ। ओकर जिनगीमे खाली एकटा शून्य, एकटा रिक्तता एकटा प्यास रहैछ। आ हम ओएह पियासल आत्मा छी पारो!

आब हमर सभक कॉलेज लाइफ कहियो घुरि नहि सकैछ पारो! मुदा, एतबा जरूर कहब जे सभ लड़कीकें एक समान नहि सोचबाक चाही; आजुक युग आ पुरान युगमे बड़ अन्तर अछि। सभ लड़की द्रौपदी आ संयोगिताक विषयमे किएक सोचतीह? आजुक समाज पैसाक दास अछि। लड़कीक पसिन्न-नापसिन्नक कोन बात?

सत पारो नारी बिना पुरुषक अर्थहीन अछि। स्त्री कहियो स्वाधीन नहि रहि सकैछ। ओकरा लग पास पत्नीत्व छोड़ि आन उपाय नहि! जहाँ स्वाधीन

भेलीह, हमरे जकाँ तम-सिन्धुमे डूबि जाइछ। सिनेह स्थायी नहि, मुदा पत्नीत्व स्थायी होइछ। ओ अपन घरक रानी होइछ। पारो, अहाँ नहि बूझि सकब जे उन्मुक्त आकाशमे चिड़ै जकाँ चहकैत, निर्बन्ध घुमैत आब बन्धन लेल कतेक आतुर भ' गेल छी, कतेक तरसि रहल छी एकटा सशक्त डारि लेल जाहि पर हम एकटा संतोषमय सुखद नीड़ बना चैनक सांस ली। मुदा, काल हमर जीवनमे माहुर घोरि देलक। हमर सभटा सतरंगी भावना सुनसान उजाड़ बनि हमर जीवन-तरुकें-निर्ममतासँ झकझोरि रहल अछि।

अहूँ हमरे जकाँ अपना जीवनमे दुःख बेसाहने छी। तें हम अहाँसँ आग्रह करैत छी जे जेना हो, अहाँ अपन सुखद नीड़ एकटा बना लिय'। अहाँ हमरासँ वयसमे छोट छी। अहाँ जानि-बूझि अपना जीवनक वसन्तपर तुषारापात नहि करु।

हमरा लेल तँ दरदे हमर जिनगी! सभ सुख हमर दरद अछि, अवसाद अछि!

अहींक बिसरल,
—उपासना।



प्रस्तर-प्रतिमा

की जिनगी इएह थिक? एहिना बीतैत चल जायत?—बुनैत-बुनैत हाथ शिथिल भ' गेल। ऊन-काँटा एक दिस राखि कनेक काल लेल आँखि मुनि लैत छी। सर्वत्र अन्हारे-अन्हार। मोनमे उपरल ऊन जकाँ ओझरायल विचारजाल। कखनो-कखनो मोनमे एकटा आक्रोश उठैत अछि। एना कतेक दिन आर जीब' पड़त? नहि-नहि, समस्त शरीरसँ जेना प्रतिरोधक चीत्कार उठैत अछि। एकटा मूक चीत्कार, बंद अधर, बंद मोन आ बंद तनक काराकेँ तोरबा लेल ओ चीत्कार छटपटा रहल अछि। रौदक एक खंड हमर बगलमे आबि पसरि जाइछ। सून आङनक सून दुपहरिया। ई अपने आफिसमे छथि। शुभश्री आ इतिश्री दुनू बहीन स्कूलमे। छोटका निरभ्र कत्तहु अड़ोस-पड़ोसमे खेला रहल अछि। एहि घरमे हमर गिनतीए की? सभक चाकरी खटैत छी—पतिक, पुत्रीक, पुत्रक। कखनो काल लगैत अछि हमरा मोनमे जेना कोनो कुंठा होअय, कोनो ग्रन्थि होअय जे हमरा घुटनक उमसमे तड़फड़ा दैत अछि। हम घुटैत रहैत छी, मुदा किछु क' नहि पबैत छी। हरदम सागरक लहरि सन अशान्त हमरा मोनमे सदिखन एक-ने-एक चिन्ता रहिते अछि। भादबक मेघमाला सन घेरल चिन्ता कखनो एकटा हल्लुक अनुभूति मोन-प्राणकेँ कँपा दैत अछि जे एहि बेटी सभमे हमर आत्मा, हमर शोणित नहि अछि की? हमर गर्भमे नौ मास रहियो क' को हमर कोनो अंश नहि? ओ हमर अंतर अवस्थित देह रहियोक' कोना विदेह भ' गेल। सभमे अपन खानदानी गुण आबि गेल अछि जे हमरा सहि नहि पबैत छथि। अपन व्यवहारसँ नहि, अपन स्वभाव सँ हमरा प्रति निर्मम। हम माए रहितो माए नहि छी। सभ किछु रहितो, किछु नहि छी, किछु नहि छी—आ, अन्तरक चीत्कार पुनः एकबेर देहक कारा तोड़बा लेल छटपटाय लागल। घड़ी दिस तकैत छी, एक बाजि गेल—चारि बजे शुभा आ इति आ पाँच बजे घरि ई अपने। एकदम घड़ीपर सभ कार्यक्रम एहि घरक चलैत अछि। एहि कलकत्ता महानगरीक जनसंख्यामे प्रवासी मैथिलक कोन गिनती? चारु दिस पंजाबी-बंगालीक मेला रहैत अछि। कत्तहु केओ अपन नहि लगैत अछि। मिथिलाक अपनत्वक अपेक्षा एत' कत'?

—शिल्पी की भ' रहल छैक? हम चौंकी उठैत छी। महानगरक

एकमात्र संगिनी अनु मोहिनी मुस्कान लेने ठाढ़ छलीह।

—की होयत अनु, समय बिता रहल छी कहुना। कुर्सी ओकरा दिस बढ़बैत हम बजलहुँ-आउ, बैसु हम सभ तँ मात्र मशीन छी, घड़ीक काँटापर काज कर' बाली।

कुरसीपर आरामसँ पसरैत अनु बजलीह—नहि शिल्पी, अहींटा नहि, हमरा अहाँ एहेन कतेक प्रबासी मैथिल स्त्री एहि ठाम छथि जे आइ मात्र मशीन बनि एहिठाम रहि गेल।—लोक समयक हाथक मशीन अछि आ हमरा सभ अपन पतिक हाथेँ स्वयं अपन संतानेक हाथेँ। समयक धारा कत' सँ कत' बहि गेल। आजुक सभ्यता आ काल्हुक सभ्यतामे कतेक अन्तर आबि गेल। आइ हमरे सभक संतानकेँ एतबा फुरसति नहि अछि जे हमरो सभक दुख-दर्द सुनत।

—अनु किंचित हँसी हमरा अधर पर आबि गेल—दुख-दर्द सूनयबा लेल व्यग्र केँ अछि? ओकर आबश्यकतेकी अछि? मुदा अहाँक केहेन मोन अछि। अहाँ खयलहुँ की नहि—से धरि पुछबाक अवसर हुनकालोकनिकेँ नहि।

कनेक काल धरि हम दुनू चुप्प रहलहुँ—नहि-नहि, चुप्पीक एकटा फाँस हमर आ अनुक गरमे लागि गेल। अनुक एकटा नम्हर साँस ओहि फाँसकेँ तोड़ि देलक। ओ बाजि उठलीह सभसँ तँ दुख ई अछि शिल्पी जे हमर मिथिलाक सभ्यता एखन बड़ पछुआयल अछि, यद्यपि मिथिलाक संतान बड़ अगुआयल छथि। अहीँ देखू, श्वेताक बियाह लेल हम कतेक छटपटयलहुँ, मुदा श्वेता एके ठाम कोनो बँगालीसँ बियाह करबा लेल प्रतिबद्ध। जखन किछु बुझबैत छियेक तँ हमरे बुझब' लगैत अछि—मम्मी, ओ जमाना आब चलि गेलैक। आब स्त्री स्वतंत्र अछि। आब हमरा सभ लकीरक फकीर नहि रहब मम्मी। जा धरि हमसभ अबला बनि सभ मान्यताकेँ स्वीकारैत रहब हमरो सभक जिनगी अहीं सभ जकाँ सुरंगक अन्हारमे डूबल रहत।

ओ बजैत तँ ठीक अछि अनु, हमरो गरक फाँस ढील भ' गेल—जाति-पाति ई सभ बंधन कतेक दिन?

बीचेमे बात कटैत अनु बजलीह—सभ किछु ठीक अछि शिल्पी! हम अहाँ मानव की समाज मानत? काल्हि गाम जायब; सभ केओ बारि देत। आदमी कतेक बर्दाश्त करत शिल्पी? हमर सभक अन्तर, हमर सभक समस्या केँ देख'वलाकेँ अछि? सरिपोँ जमाना कत' सँ कत' चल गेल आ हमर मैथिली सृजनहारो सभ एखनि धरि गाछी-बिरछी, खेत-पथार सभमे ओझरायल छथि। समस्या राखी तँ ककरा लग? निदान खोजी तँ कत'? अपन डीह-डाबर, खेत-पथार सभ बेचि बैसि जाय कलकत्ताक एकटा अनिश्चित कोठलीक प्रांगनमे तखन ने? श्वेताक बाबूकेँ जेना सोचक घून लागि गेल छनि। एक दिस संतानक ममता आ दोसर दिस समाज।

अनुक चेहरा तमतमाय लागल। आँखि छलछला गेल छल।—शांत भ' जाउ अनु! छलछलायल आँखिसँ अनु हमरा दिस तकलीह। ओकर आँखिक नोर जेना हमर आँखिमे आबि हृदयमे उतरि गेल-सरिपोँ, हमरा सभ पढ़ि-लिखि की कयलहुँ। नहि तँ पुरान भ' सकलहुँ आ नहि तँ नवीन। नहि तँ पुरान पीढ़ी खुश रहैत छथि फारवार्ड बुझि, आ नहि तँ नवीन पीढ़ी खुश रहैत अछि बैकबार्ड बुझि! दिमागमे अतीतक एकटा खंड नाचि गेल। तेरह-चौदह वर्षक इतिश्री कोनो षोड़शीसँ कम नाहि लगैत छलीह। ओहि दिन एकटा सस्ता पॉकेट बुक पढ़ैत छलीह। हम प्रेमसँ ओकरा बुझा देलहुँ—बेटा, एखन अहाँ छोट छी। उपन्यास नहि पढ़ल करू। पैध भ' जायब तँ उपन्यास पढ़ब। ओ मूक रहलीह मुदा आँखिमे एकटा प्रतिवाद भरने चुपचाप ओ उपन्यास हमरा द' देलक। हम अपन काजमे लागि गेलहुँ। इतिश्री बरण्डापर ठाढ़ एकटा संगीसँ गप्प कर' लगलीह। चारु दिस सिख आ बंगाली छौड़ा सभ अपन-अपन कोठरीसँ निकलि एकरा सभ दिस ताकि-ताकि अश्लील जकाँ हँसैत छल। हमर मोनमे घृणाक अवसाद उठल। इतिकेँ भीतर बजा लेलहुँ बेटा, आब अहाँ पैध भ' गेल छी। बाहर नहि ठाढ़ रहू। देखैत छी कतेक—हमर मुँहक बात मुहेँ रहल। इति एकटा विचित्र दृष्टिसँ हमरा देखि पुछि बैसलीह —मम्मी, जखन हम उपन्यास पढ़ैत छी तँ अहाँ कहैत छी एखन अहाँ बेदरा छी, नहि पढ़ू। आ जखन हम बाहर ठाढ़ होइत छी तँ अहाँ कहैत छी आब अहाँ पैध भ' गेल छी—अहाँ साफ-साफ एक्के बेर हमरा बाजि दिय' जे हम पैध छी कि छोट।

हमरा लागल जे गरमे पड़ल जंजीर हमर जेना हमरे गरकेँ कसने जा रहल हो—'साफ-साफ बाजि दिय' एके बेर—' जेना हमर माए हमरा डँटैत छल—आब अहाँ पैध भ' गेल छी शिल्पी बाहर ठाढ़ भ' हँसू-बाजू नहि।

जमाना खराब अछि—कालिहयो खराब छल—आ कालिहयो हमर माए ई बाजि हमरा अहँपर चोट करैत छलि—आइ हम अपन बेटीकेँ...कालिह ओ अपन बेटीकेँ...परम्परा एहिना चलैत रहत...जमाना लाख बदलय...सभ्यता उन्नति करय...परिवेश बदलय मुदा, हृदयक भाव तँ चिरन्तने रहत, शाश्वते रहत... छाउरक ढेरमे नुकायल चिनगी सन स्त्री अपन शक्तिके कहिया चिन्हत ? कहिया स्वीकारत ? शिल्पी...अनुक स्वर सुनितहि हम चौंकि उठलहुँ—विस्मृति हमरा ठामक ठाम छोड़ि पलायन क' गेल।

आब चाह पीबाक चाही अनु—कतेक सोचब, कतेक बाजब। जिनगी एहिना चलैत रहल बिन हमर सभक इच्छा-अनिच्छा बुझने। शिबा नौकरकेँ बजबैत छी तँ मोन एकदम भरल भरल मेघ सन बोझिल छल···दू कप चाह लेने आयब···शिवा चल गेल चाह बनयबा लेल आ हमर मोन फेर सोचक जालमे ओझराय लागल—अनु गलती ने अहाँक अछि, नहि हमर, नहि ककरो, गलती समयक अछि, परिवेशक अछि। शुभा, इति अहाँक श्वेता, बादल सभक जनम एहि महानगरीमे भेल। आँखि खोललक एहि परिवेशमे, बुझलक इएह वातावारण। गाम घरकेँ विदेश बुझलक। हमर अहाँक शिक्षा आ उपदेशपर ओ सभ अपन जीवनक समस्त आयाम समस्त आदर्श केँ उत्सर्ग तँ नहि क' देत, हम अहाँ तँ पुरान आ नव दुनूक तामस, दुनूक आक्रोशकेँ झेलनिहार प्रस्तर प्रतिमा मात्र थिकहुँ। जाँतक दुनू पाटक मध्य पीसल जाइत छी नहि तँ एम्हुरका······।

शिवा आबि चाह राखि देलक। एक कप उठा अनु दिस बढेलहुँ। आब एहिना चाह पीबैत रहू अनु एकरे मिठासमे अपन जिनगीक सभ टा मिठास खोजैत रहू आ तेँ हम चाहमे बेसी चीनी पीबैत छी—आ हम एकटा हास चेहरापर आनबा लेल चाहलहुँ - मुदा ओ मान क' हमर चेहरापर सँ पड़ा गेल आ हमर मोन उदास भ' गेल — अनु — बेटा-बेटीक मोन ओकर सभक व्यस्तता अपना सभकेँ सदिखन बुझबाक चाही। हमर मोने चीत्कारि उठल — हमरा सभ अपन माएकेँ ईश्वर सँ बढ़ि बुझैत छलहुँ, ओएह श्रद्धा, ओएह आदर हमर सभक संतान हमरा सभकेँ किएक नहि दैत अछि ? नहि दैत अछि शायद ओकर ढंग बदलि गेल अछि। भरि दिन खटैत रहू, मरैत रहू आ जखन स्कूलसँ आओत ओएह उलहन-ओएह उपराग—मम्मी, हमर फ्राकपर आयरन किएक नहि क' देलहुँ, हमर किताब सभ किएक नहि सरिया देलहुँ, आइ ओछाओन नहि झाड़ल अछि। हम प्रस्तर प्रतिमा जकाँ चुपचाप सुनैत रहैत छी। जहिया किछु कहैत छी

गरदनिमे हाथ द' झुलि जाइत छलीह मम्मी अहाँ नहि बुझैत छी। हमरा सभकेँ समय नहि भेटैत अछि। तेँ अहाँकेँ कहैत छी। आब देखियौक टास्क बनायब, क्रोशिया बिनब, बैटमिंटन खेलायब—कतेक काज अछि। हम मूड़ी हिलाय स्वीकारैत छी-ठीके हमर बेटी बड़ ब्यस्त अछि—ओ हे दिन शुभा कहने छल मम्मी अहाँ हमरा सभकेँ हरदम बैटा-बेटा कहैत छी। ई हमर सभक अपमान थिक मम्मी। अहाँ हमरा सभकेँ बेटी कहू आ सिनेह—दुलारसँ निरभ्रकेँ बेटी कहियौक। की बेटी कोनो लज्जाशील शब्द थिक ? मम्मी बेटी तँ गौरवमय शब्द थिक। अहाँ बेटीकेँ बेटी कहि सम्बोधित करब तँ हमर सभक मनोबल बढ़त। हमरा लगैत छल ओ शुभा नहि स्वयं हम छी जकर अन्तरमे इएह सभ भाव विद्रोह करैत छल। मुदा विद्रोहक ओ स्वर मुखरित नहि होइत छल। आइ हमरे अन्तरक विद्रोह हमर बेटीक अधरक विद्रोह बनि गेल।

तखन प्रस्तर प्रतिमा—हमरा अनुक स्वर झकझोरि देलक—तीन बाजि गेल आब जाइत छी। सभटा काज पड़ले अछि।

प्रस्तर प्रतिमा – सम्बोधन पर हमरो हँसी आबि गेल—जाइत छी हमहूँ जल्दी-जल्दी काज सभ निपटा लैत छी।

एकटा थाकल ठेहिआयल मुस्कीक अंगैठी संग हम शुभा इतिक कोठलीकेँ देखैत छी। सभटा ओछाओन सभ अस्त-व्यस्त। कपड़ा सभ असगनीपर सँ नीचा खसल। निरभ्रक ट्राइसाइकिल एकटा कोनमे उनटल छल। इतिक जापानी डॉल जे ओकरा एकटा दोस्त ओकर जन्मदिममे प्रेजेन्ट कयने छल नीचामे मूर्च्छित पड़ल छल—नयनमे उमड़ल मेघकेँ हम पलकमे समेटने खिड़की लग ठाढ़ भ' जाइत छी—बाड़ीमे रौदक अन्तिम खण्ड लसकल छल। कने-कने सर्द हवासँ गाछक सूखल पात-पुष्प झरि-झरि खसि रहल छल आ कने दूर ओँघरा क' पुनः निष्प्राण भ' जाइत छल। एकटा नीमक सघन तरु मौन मूक बड़ छल जकर नीचाँमे चिनिया बादामक खोँइचा सभ ओहिना पड़ल छल जे भोरे तीनू भाइ-बहिन मिलि खयने छलीह—एक क्षण लेल हमर साँस चैन पबैत अछि—हम कतेक भागवंत छी जे कलकत्तामे एकटा कोठली भेटनाइ समुद्रमे पुल बन्हनाइ थिक। ताहि ठाम हमरा छोट-छीन दुनू कोठलीमे फ्लैट, छोट सन कम्पाउन्ड हमरा भेटल छल,— मुदा हमर एहि फ्लैटमे, ई चैन की—आँखि उठि गेल भोला बाबाक फोटो दिस। नील बर्ण शिवजीक मोहक मुस्कान। सभटा गरल पीबियो अधर पर अमृतमयी

मुस्कीक छटा। एक टा अन्तर्भावनासँ अभिभूत भ' हमर हृदय नमित भ' उठल—नीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै शिकारा नमः शिवाय। आइ धरि हम भगवानसँ किछु मंगने होयब मोन नहि अछि। हमर बेचैनी भगवानसँ चैन मँगैत रहल, पाथरसँ चैन मँगैत-मँगैत हमहूँ तँ पाथर भ' गेल छी।

मम्मी-मम्मी भूख लागल, बरण्डेपर बस्ता पटकैत दुनू बहीन खाय लेल गोहारि कर' लागलि। एक नजरि शुभापर फेकि हम चुपचाप दुनूक आगूमे जलखँ परसि देलहुँ। जलखैमे मीन-मेख निकालैत दुनू बहीन एकटा भू-चाल जकाँ ठाढ़ क' देलक। आ दुनू बहीन अपन-अपन ड्रेस ओछाओनपर फेकि चल गेलीह बैडमिंटन खेलयबा लेल। हमर दृष्टि जेना बेचारी भ' ओहि कपड़ाकेँ देख' लागल। ओहिना सीरक सभ अस्त-व्यस्त कपड़ा सभ असगनी परसँ खसल। एकटा दर्द जेना मोन उदास क' देलक। कतेक बेर चाहैत रही जे हिनका सभ बात कहि दी। मुदा ई जखन थाकल ठेहिआयल घुरैत छलाह तँ कोनो शिकाइत करबाक मोन नहि होइत छल। आइ हमरा मोनमे प्रतिकार करबाक इच्छा जाग्रत भेल। दूनू बहिन आब सियान भेल। आब अपन उत्तरदायित्व बुझबाक चाही। समर्थ बेटीकेँ एतबा देखबाक छुट्टी नहि जे हमर कोठलीमे एतेक गंदा अछि। हमर ओछाओन गंदा अछि। लागल जेना ई घर दुआरि जहिना ओकरा सभले रद्दीक टोकड़ी अछि तहिना हमहूँ रद्दीक टोकरी........।

की सोचि रहल छी.......... ?

अरे, अहाँ ऑफिससँ आबि गेलहुँ ?

हँ, आइ किछु पहिने चल अयलहुँ—ई घड़ी दिस ताक' लगलाह जेना गलती घड़ीक नहि, हुनकर अपन अछि—हमर हँसी हिनकर सरलतापर जेना रूकि नहि सकल।

एकर सभक घर एतेक गंदा किएक अछि। केओ आबि जायत तँ हिनकर प्रश्नक उत्तर—आन दिन हम एकर सभक कपड़ा-लत्ता ओछाओन सरिया दैत छलहुँ।

आइ सोचलहुँ देखी की प्रतिक्रिया एकरा सभ पर होइत अछि।

शुभा-इति-हिनकर पारा चढ़ि गेल-जोरसँ चिकरि उठलाह।

हिनकर तामससँ दुनू बहीन डेराइत छलीह। स्वर सुनितहि दुनू छटपटाक' भागल—जी पापा।

देखू, अहाँ सभ अपन कोठली। जहिना भोरे उठल छलहुँ तहिना ओछाओन सभ पड़ल अछि। सभटा कपड़ा-लत्ता नीचाँ खसल। एतेक टा भ' गेल छी आ अहाँ सभकेँ एखन धरि अपन उत्तरदायित्वक ज्ञान नहि भेल अछि। भरि दिन मम्मी खटैत रहैत छथि। बेटीक कोन सुख। आन दिनसँ अहाँ सभक कोठली...बड़बड़ाइत ई ओहिठामसँ चल गेलाह। हमरा ममत्व उठल, कथी लेल हम छोड़ि देलहुँ। सहियारि देने रहितहुँ तँ दुनू आइ बाजब नहि सुनैत। हम अपनाकेँ कोसैत ठाढ़ छलहुँ। तावत उद्यत इति फुसफुसा उठलीह—मम्मी जानि बुझिक' सभटा कपड़ा नीचाँ खसा देलक आ हमरा सभकेँ डाँट सुना देलक। शुभा ओकरा दिस व्यंग्यक मुस्की मुस्का देलक आ' हमरा ओहि एक क्षणमे लागल जेना शुभा-इति हमर दुनू गालमे तड़ातड़ थापड़ मारने चल जा रहल अछि—

मुदा नहि हम तँ प्रस्तर प्रतिमा छलहुँ—किछु कहाँ भेल........।



कौन विश्वास

भनसा घरमे चूल्हिक घधरा लग बैसि उम्मी दुनू ठेहुनक मध्य मूड़ी नुका लेलनि। लाली, प्रीती आ शैशव सूतल छल। सौरभक पता एखनि धरि कतहु नहि। बिच्छु जकाँ डंक मारैत पूसक सरदी। राति निस्तब्ध भेल। कखनो-कखनो सड़कपर कोनो कुकूर भूकि उठय। आ उम्मीक अंग-प्रत्यंग जेना सिहरि जाय।

आइ दू बरखसँ उम्मी तरसि क' रहि जाइत छलीह जे कहियो सौरभ आफिससँ जल्दी घर आबथि। उम्मी कतेक बेर कहैथ छलीह जे पाँच बजे 'आफिस' खतम होइत अछि तँ अहाँ छओ बजे धरि घुमैत-फिरैत घर अवश्य पहुँच जाउ। हमर मोनमे नाना प्रकारक आशंका होइत रहैछ। एहि परदेशमे हम ककरा की कहबैक ? कोनो चोरे उचक्के आबि जाय। मुदा सौरभक लेखेँ ढाकक ओएह तीन पात। ओ आठ बजेसँ पहिने कहियो नहि पहुँचैत छल। मुदा आइ सौरभकेँ दस बाजि गेल छलैक। एतेक देरी हुनका कहियो नहि होइत छलैक। उम्मी बड़ तमसा गेलीह। भरल लोटा पानि आगिक घघरा पर ढ़ारि ओहिठामसँ उठि गेलीह। 'ट्रांजिस्टर' लग आबि खट् द' सुइया 'ऑन' कयलनि। 'मोसो छल कियो जाय, सँइया 'बेईमान।—तामसे 'सुइच' खट्ट द' ऑफ क' देलनि। 'धौर, जत' सुनय ओतहि पुरुषक धोखा, छल, कपट।' आ एकटा अवश आक्रोश जेना बिजलीक करेंट जकाँ ओकरा सौंसे देहमे पसरि गेलैक। 'आइ हम कोनो धाख नहि करब। जे जे हमरा मोनमे होइत अछि, अवश्य उगलि देब। ओ जानि-बूझि क' हमरा एतेक सतबैत छथि। हुनकर मोन आब हमरासँ उबि गेल छनि। हुनकाँ लेखेँ हम मात्र एकटा 'सेफ डिपोजिट' जकाँ छी। जखन आवश्यकता होइत छनि, हमर काज पड़ैत छनि। नहि तँ हम घरमे सजाओल एकटा 'शो केस'। हम किछु बजैत नहि छी मुदा देखैत नहि छी की ? हमर अन्तरमे की कोनो इच्छा नहि, कोनो आकांक्षा नहि ? दिन-राति बाल-बच्चाक झमेलमे ओझरायल रहैत छी। एहि घरसँ हमरा एकरत्ती छुट्टी नहि भेटैत अछि। हम की एको बेर हुनका बजैत छी जे हमरा सिनेमा-थियेटर ल' चलू। आ कि हमरा नुआ फाटि गेल की टोल-पड़ोसक लोक

हमर कान शून्य देखैत अछि तँ हँसी करैछ। हम तँ स्वयं चाहैत छी हुनका हमरा ल' क' कोनो कष्ट नहि होनि। कोनो चिन्ता नहि पहुँचनि। मुदा ओ पतिये टा छथि, कहियो हमर भावनाकेँ आदर नहि कयलनि, कान नहि देलनि।'

आ सोचैत-सोचैत उम्मीक जेना माथ फाट' लागल। क्रोधे माहुर भेल छलीह। खन घर, खन बाहर करैत जेना ओ पयर पटकैत तामसकेँ प्रकट करैत छलीह। माँ-माँ—तावत दू वर्षक काली सूतलमे कानि उठलीह। ओ दौड़ि ओकरा पीठ ठोकि क' सूतब' लगलथि। मुदा ओ धौना पसारि देलकनि। कनिते रहलीह। 'मरि जो' कहैत ओ हाथेसँ पीटपीटा देलनि। काली— बाबूजी-बाबूजी, कहैत कान' लगलीह। बाबूजी-बड़ बाबूजी वाली भेल छेँ। कोन सौख पुरलकौक बाप ? बाबूजी-बाबूजी—बड़बड़ाइत ओ कालीकेँ कोरामे ल' टहल' लगलीह।'

कनियेँ कालमे लालीयो सुनि गेलि। मुदा आब उम्मीक मोनमे नाना प्रकारक आशंका अपन टाङ पसार' लागल। एतेककाल तँ कहियो नहि होइत छलैक। ओ छथियो बड़ लापरवाह लोक। एकदम फक्कड़ जकाँ 'अलमस्ती' सँ चलल जाइत छथि। साइकिलो कतेक 'रेश' सँ चलबैत छथि। बाप रे बाप कहैत-कहैत थाकि जाइत छी, सबेरे चल आउ, साइकिल आस्तेसँ चलाउ। एहि ठामक रस्ता बड़ संकीर्ण आ जाय रहैछ, बस, ट्रक, मोटर-रिक्शा। कतहु कोनो दुर्घटना नहि भ' गेल हो। हे भगवान, हे बजरंगवली आब हम ककरा कहबैक ? आइ-काल्हि जमाना बड़ खराप भ' गेल अछि। एकोरत्ती ककरो सँ बाताबाती भेल कि झट द' छूरा निकालि लैत अछि। ओ लोकसँ बहसो बड़ करैत छथि। किछु कहलहुँ तँ—'अयँ ककर मजाल अछि जे आँखियो उठाओत हमरा दिस ?' आ सहसा उम्मी एकदम घबड़ा गेल। ओ अन्हरियामे घरसँ निकलि पेशकार साहेबक घर पहुँचि गेलीह—'बहिन, एखनधरि कालीक बाबूजी घर नहि आयल छथि। कनियेँ रेवाक बाबूजीकेँ कहियनु देखबाक लेल। हमर मोन घबड़ा गेल अछि।'

'घबड़यबाक कोनो बात नहि, कोनो जान-पहचान वाला भेंट भ' गेल होयतनि। तेँ देरी भ' गेल होयतनि। एखन तँ दसे बाजल अछि। रेवाक बाबूजी कहियो-कहियो तँ बारहो बजा दैत छथि—पुनः आस्तेसँ बजलीह—हम तँ रेवाक बाबूजीकेँ पढ़ा दितिऐक मुदा आइ साझेँसँ हुनकर देह—हाथमे

बड़ दरद अछि। तेल-मालिश कयने छी तखन एखन निन्न भेलनि अछि। एक घंटा आर देखि लिय' तखन हम हिनका उठा देबनि।'

उम्मी चुपचाप घुरि अयलीह। ओकर हालति बताहि जकाँ छलैक। खन खिड़की लग जा क' ठाढ़ भ' जाइत छलीह, खन अङ्गनामे। कखनो जी मसोसि ओछाओनपर पड़ि रहैत छलीह तँ कखनो चौंकिक' बैसि रहैत छलीह। ओकर आँखिक आगू सौरभक चेहरा नाच' लगलैक—'कतेक हंसमुख छथि ओ। कतेक सोझ, कतेक सरल। काँच, पाकल, छूछ, रुख जे किछु हुनका आगू राखि देबनि बिना प्रतिवादे खा लैत छथि। ओकरा सन भाग्यशाली आरकेँ एतेक सुन्दर पतिक पत्नी। हुनकामे कमी कथिक छनि ?'

आ तखन नहि जानि किएक उम्मीकेँ अपनापर तामस उठि गेलैक—'सभटा खरापी तँ हमरा अपनेमे अछि। नहि तँ हुनका सन, सुन्दर, नहि तँ पढ़ले-लिखल। हम तँ हुनकर सेबो नीक जकाँ नहि करैत छियनि—'आ अपन दोष निकालैत-निकालैत जेना उम्मीकेँ परम तुष्टि भेटैत छलैक।' अत्यन्त संतोष होइत छल। अन्तमे मोने-मोने हनुमानजीकेँ कबुला कयलक जे ओ स्वस्थ घर घुरताह तँ हम दू रुपैयाक परसाद चढ़ायब।

आ डरसँ ओकर सौंसे देह थरथराय लागल। ओकरा देहमे शोणित नहि छल। ओकर गर जेना केओ घोंटि रहल छल।

'ठक-ठक'—केओ केवाड़ खटखटौलक। 'के छी ?—उम्मी विद्युत गति सँ ठाढ़ भ' गेलीह।

'खोलू-खोलू, हम छी—सौरभक स्वर बहरायल। उम्मीक सभटा शक्ति जेना तिरोहित भ' गेल। ओ चाहितो किछु नहि बाजि सकलीह। ओकर स्वर ओकर गरामे लसकि गेलैक। ओ दौड़ि क' जाय लेल चाहैत छलीह मुदा पयर जेना जमि गेल छल। रुदनक एकटा अप्रतिरोध आवेग ओकर सौंसे शरीरकेँ अवश क' देलक। पुन: तुरत सम्हरि ओ नोर पोछि केबाड़ खोलि देलक आ चुपचाप भनसा घर चल गेलीह।

सौरभो चुपचाप अपराधी जकाँ घर आयल। केबाड़ बंदक' ओ कपड़ा बदल' लागल। ओ तरे-तर देखलक जे उम्मी भनसा घरमे ठाढ़ अछि। आन दिन उम्मी केवाड़े लग ठाढ़ अपन मधुर मुस्कीसँ ओकर स्वागत करैत छल।

दोसर दिन सौरभक ओछाओन सभ कयल रहैत छलैक। आइ सभटा अस्त-व्यस्त पड़ल छल। सौरभ सभटा कपड़ा सरिया क' अपन ओछाओन सभ क' लेलक। उम्मीक साड़ी नीचामे खसल छल। तकरा चुपचाप सहेजि राखी देलक असगनी पर।

'ई सभ काज छोड़ि दियौक। परसल अछि, आबि क' खा लिय' '—उम्मी बजलीह।

'अरे लाउ ने'—हँसैत बाजल सौरभ। उम्मी एखनो ठाढ़े छलीह। ओकर चेहरा ओसमे नहायल गुलाब सन लगैत छलैक। नोर रुकलापर ओकरा मोनमे घोर अभिमानक भावनाक उदय भेल। सोचल की आब सौरभसँ नहि बाजत। जावत ओ अपन गलती नहि मानत, हमरा मनाओत नहि, हम नहि बाजब। आइ जँ कोनो चोर उचक्के आबि जयतैक तँ हम की करितहुँ। नहि, नहि हम नहि बाजब जावत ओ हमर माथपर हाथ राखि सप्पत नहि खयताह जे आन दिनसँ एतेक अबेर नहि करब। मुदा जखन ओ देखलक जे काज उम्मीक छल से सौरभ क' रहल अछि तखन ओकरा बाजल बिनु नहि रहि गेलैक। मुदा आब ओ बाजि पछताइत छलीह जे एकर माने ओ जानि—बूझि क' अबेर कयलकैक। ओ मोने-मोन अपनाकेँ कोसय लगलीह हम बड़ छुछुन्नर छी। हमर कोनो मर्यादा नहि रखैत छथि। नहि जानी दोसर स्त्री कोना पुरुषकेँ नकेल द' नचबैछ। सौरभक समक्ष तँ हमर सभटा स्वाभिमान कपूर जकाँ उड़ि जाइत अछि। ओ कतेक बेर सोचैत छलीह जे ओ सौरभक समक्ष रूसि जायत, तमसा जायत, मुदा ओकर अपने निश्चय सोडावाटरक बुल-बुला जकाँ शांत भ' जाइत छल।

ओ थारी परोसि सौरभक समक्ष 'स्टूल' पर राखि देलक। आँखिमे नाराजगी आ अभिमानक भाव ल' क' ओ अपना कात बैसि रहलीह। दूनूगोटेक' आँखि मिलल मुदा सौरभ अपन दृष्टि झुका लेलक।

'आइ त' बड़ अन्हेर होइत छल, कौर मुँहमे लैत बाजल सौरभ।

'अँय से की ?—उम्मीक चेहरा फक्क भ' गेलैक।

'बुझू भाय खरजितिया कयने छल तेँ बचि गेलहुँ। ऑफिससँ तँ पाँचे बजे चललहुँ मुदा रास्तामे एकटा रिक्शासँ टकड़ा गेलहुँ। कनिए दूर फेकाय गेलहुँ। बड़ भीड़ जमा भ' गेल छल।

'कतहुँ चोटो लागल ?'—उम्मीक स्वर काँपि गेलैक। कोढ़ फाटि गेलैक।

'ओहि समय तँ माथमे चोट लगलाक कारण बेसुध भ' गेल छलहुँ। मुदा चोट कतहु नहि छल। एक-दू घंटामे अपने होशमे आबि गेलहुँ'। 'सौरभ तेना बाजल जेना ओकरा ओहि दु:खक कोनो परवाह नहि अछि। बरनी, किछु टूटल-फूटल नहि। बचि गेलहुँ।

'हे भगवान ! आ अहाँ हमरा एखन कहैत छी। तें कहैत छी जे हम अहाँक केओ नहि। एतेक काज होइते अछि आ साइकिलक 'ब्रेक' ठीक करायब से नहि। हम तँ कुकुर छी भुकैत रहैत छी। आइ जँ अहाँकें किछु भ' जाइत तँ आइ हमर की—आ बजैत-बजैत उम्मी ठोह पाड़ि कान' लगलीह'। उम्मीकें कनैत देखि सौरभकें संतोष भेलैक। एहिसँ उम्मीक मोनमे चिन्ता पीड़ा आबि गेलैक। सौरभक मोन पूर्णत: उत्साहित एवं उन्मुक्त भ' गेलैक। उम्मीकें चिन्तित, दु:खित देखि ओकरा संतोष होइत छल जे ओ एकटा एहन स्त्रीक स्वामी अछि जकरा ओकरा सँ असीम प्रेम अछि। ओकरा लेल कोनो त्याग क' सकैछ। ई सौरभ अपन अधिकार बुझैत छल। जे पतिक कष्ट फिकिर सुनि पत्नी अपन दु:ख चिन्ता सभटा बिसरि जाय। आ उम्मी सरिपहुँ एहिना करैत छलीह तें सौरभ अतिरंजनासँ काज लैत छल।

'नहि काल्हि सभसँ पहिने 'ब्रेक' ठीक करा लिय' तखन ऑफिस जायब।'

'एखन कोना होयत ? पैसा कहाँ अछि ?

'हम देब पैसा।'

'अयँ अहाँ—चौंकल सौरभ—अहाँ कत'सँ देब !'

'हमरा संगमे दस टाका अछि एक बरखसँ नुकाओल अछि। एतेक काज पड़ल एहि बीचमे मुदा' हम नहि निकाललहुँ। आ अहाँक जानपर पड़त,हम ओ टाका जोगाक' की करब ? हँ दरमाहा भेटत तँ हम ल' लेब।' बजलीह उम्मी।

'ओह उम्मी, अहाँ कतेक नीक छी, एतेक सहनशील अहाँ सन पत्नी पाबि हम तरि गेल छी'। आ स्नेहक बरखासँ भीजैत रहलीह उम्मी।

भोरे प्रसन्न मोने दस टाका उम्मी सौरभकें दैत बजलीह—'पहिने जाक' साइकिल ठीक करा आनू तखन हमर मोन स्थिर होयत।'

सौरभ खुशी-खुशी टाका ल' बाजार चल गेल। उम्मीकें बहुत दिनक बाद एतेक स्नेह, एतेक सहानुभूति सौरभसँ भेटल छलैक। ओ एकटा स्वतंत्र चिड़ै' जकाँ

घरक सभटा काज स्वच्छन्द भावसँ कर' लगलीह। हुनका अन्तरमे अपूर्व स्फूर्ति आबि गेल छलनि।

'ठक-ठक'—केओ केबाड़ खटखटौलक। बाहर एकटा अपरिचित व्यक्ति देखि ओ थकमका गेलीह—'की बात छी ?' बाबू घरमे नहि छथि।

'बेस, कोनो बात नहि। ई हुनकर फौन्टेन छियनि। राति सिनेमामे लेने छलियनि, से हमरे लग रहि गेल छलनि।'

सिनेमाक नाम सुनिते उम्मीक हृदयक धड़कब तीव्र भ' गेलैक।

'सिनेमामे ?' ओ आश्चर्यित भ' पूछलनि। हँ, हँ, सिनेमामे। बीणा टाकीजमे। अहाँकें कहलनि नहि की ? राति हमरा सभ तीन—चारि गोटेसँ सिनेमा गेल छलहुँ तें ओतेक देरी भ' गेल।

आ आगन्तुकक बात सुनबाक उम्मीकें होश नहि रहलनि।



रेत आ रेत

'भौजीकेँ की भ' गेलि छैक पायल ?'

बादलक स्वर सुनि चौंकि भाइ दिस तकलक पायल—'सदिखन एकटा स्वप्न-लोकमे डूबल आँखि, व्यथा-वेदनाक जीवंत रूप, भौजी जखन बात करैत छथि तँ चारू दिस जलतरंगक अपूर्व ध्वनि पसरि जाइछ ! जेना कोनो दीयाक 'लौ' हुनक पपनी पर, गालपर दहकि रहल हो पायल, काल्हि राति ओ जखन फोनपर गप्प करैत छलीह तँ लगैत छल जेना फोन छोड़बाक हुनका मोन नहि होनि, कतेक तन्मयता, कतेक आत्मीयता...'

एकटा साँस लैत बाजल—'अपना सभकेँ हुनक मदति करबाक चाही...'

—'मदति.........?' पायल चौंकि गेल।

—हँ पायल, भौजी हमरा माए जकाँ पोसने छथि। हम माएक अभाव कहियो नहि अनुभव कयलहुँ। ओएह मातृतुल्य भौजी हमर कतेक उदास, कतेक परेशान......आखिर किएक..............?

'—एहि वयसमे हिनका एहि तरहक—हमरा जेना कोना दन लगैत अछि। दुइ बच्चाक माए भौजी तखन—! स्वयंकेँ मारि देतीह, अपन इच्छाक गराँ घोंटि देतीह, मुदा हारि मान' वाली नहि छथि।'

—'नहि, अहाँ गलती बुझैत छी भैया ! भौजीकेँ किछु होइत छनि अवश्य, लेकिन......'

—'नहि, पायल हमरा तँ होइए, भौजी स्वयं नहि जनैत छथि जे ओ ककरो अथाह प्रेममे डूबलि छथि। एहि तरहक आदमी स्वयंकेँ फुसियबैत अछि। अपनाकेँ स्वयंसँ नुकबैत अछि। हृदयक अन्तरतम गहींरइसँ फुटैत कामनाकेँ थकुचि दैत अछि।'

—हमरा बुझबामे किछु अबैत अछि भैया, अहाँ की बाजि रहल छी ?

—'हमरा होइछ, भौजी ककरो चाहैत छथि। मुदा एहि वयसमे पहुँचि कोनो स्त्रीक सतीत्वकेँ ई स्वीकार नहि होइत अछि। अपनापर अधिकार क' अपन इच्छाक अरथी निकालि दैत छथि। जनैत छी—

झाड़ि बहारि पथ नित राखब
कृष्ण भेला परम कठोर......

एतेक उदासी—एतेक व्यथा-वेदना-आङ्गनसँ भौजीक गीतक स्वर जेना बादल आ पायलकेँ मूक क' गेल। भौजीकेँ गीत गयबाक बड़ स'ख छलनि। ओ सदिखन किछु ने किछु गुनगुनाइत रहैत छलीह—सभटा उदासीक गीत। कतेक कालक लेल गीतक स्वर रुकि गेल। प्रायः भौजी अपन नोर पोछि रहल छलीह—

अपन सनेस छोड़ि जायब सखिया
इहो दूनू नयन चकोर

एक-एक आखर जेना कराहि रहल छल, एक-एक स्वर आहत भ' छटपटा रहल छल............!!

बादल अपन सोचमे ओझरायल रहल। भौजी किएक एना बदलि गेलीह ? नहि जानि, ककर खियालमे भौजी कटल गुड्डी सन बेबस जकाँ पहुँचि जाइत छथि ? बैसलि-बैसलि गुम-सुम ! गप्प करैत-करैत जेना हेरा जाइत छथि। हमरा होइत अछि, भौजी स्वयं नहि बुझैत छथि। ओ ककरो चाहैत छथि। एहि वयसमे खास क' धर्मभीरु, दुई जुआन बच्चाक माए ककरो चाहबाक कल्पनो नहि क' सकैत अछि। कहियो अपन दुर्बलता स्वीकार नहि क' सकैत अछि। तैयो भावनाक बिहाड़ि कखनो-कखनो हुनका अद्वेलित क' दैत छनि। हुनक अधरपर खेलाइत एकटा जादुइ मुस्की, हुनक व्यवहारमे कखनो चंचलता आबि जाइछ। भौजीक हृदयमे कोनो दबल-दबल फुलझड़ी अछि। हुनक तीतल पलक काँपैत अधर आ बाझल स्वर जेना हुनक बेबसीक चेन्ह थिक। ओह ! बादलक माथक नस सभ चरचराय लगलैक।

यदि ई बात सत्य होयत तँ भौजी कहियो अपन लोकसँ, अपन परम्परागत रास्तासँ हटि नहि सकैत छथि ? नहि जानि एहि तरहेँ कतेक जीवन अमावस्याक चिर अंधकारमे डूबि जाइछ—नोन जकाँ पानिमे चुपचाप घुलैत............

ओहि दिन कोनो बातपर तमसा क' भैया आफिस चल गेलाह। भौजी किछु नहि बजलीह। भैयाक भयंकर गर्जन-तर्जनमे डूबल भौजी मौन-मूक ठाढ़ि रहि गेलीह—भैयामे इएह एकटा खराबी छनि जे तामसमे हुनका समय-असमय, निर्दोष-दोषी-कथूक ख्याल नहि रहैत छनि। भैयाक आफिस गेलाक बाद भौजी चुपचाप बादल आ पायलकेँ जलखै करब' लगलीह ! बादल कतेक आग्रह कयलक भौजीसँ खयबा लेल-पायल भौजीसँ प्रार्थना करैत रहलीह, मुदा भौजी !......नहि

जानि हुनका की भ' गेलनि ? उदास-उदास, कानल-कानल, चिन्तामे डूबल। जेना कनबाक कोनो बहाना ताकि रहलि होथि। जेना हुनक किछु हेरा गेल हो, खाली-खाली आँखियें शून्यमे ताकि रहल छलीह। नहि ककरो माए, नहि ककरो पत्नी, नहि ककरो भौजी—किछु त' नहि छलीह ओ—ओहि काल। भौजीक ओहि रूपकें देखि पायल कानय लगलीह—अहाँकें की भ' गेल भौजी ? की भ' गेल ? बादलक समस्त तन, रोम रोम जेना भौजीसँ प्रश्न क' रहल छल। मुदा, सभटा प्रश्नकें अनुत्तरित घुरबैत भौजी चलि गेलीह, बाथ रुममे। नहा धो क' निकललीह आ फेर ओएह भौजी ! बादल पायलक अधरपर मुस्कीक किरण चमकि गेलैक। सभ केओ जलखै करवालेल बैसलाह। बादल कोनो अवसादमे डूबल चुपचाप भौजीक मुँह देखि रहल छलाह। खिड़कीपारसँ सूरजक रक्तिम आभा गुलाबक ठारिसँ छनि-छनि अबैत भौजीक चेहरापर पड़ि रहल छल ! बादल जेना अभिभूत भ' उठल। सिन्दूरी रंगमे डूबल भौजीक तेजोमय सौन्दर्य देखि……ओकर आँखि एहि महान देवीक समक्ष नमित भ' उठल—'भौजी अहाँ कतेक महान छी, कतेक पवित्र। जतबे पवित्रता सूरजक एहि रक्तिम किरणमे अछि, ओतबे अहाँक आत्मामे। तखन अहाँ एतेक उदास किएक छी ? एतेक दुखी किएक—?' मुदा बादलक प्रत्येक प्रश्नकें भौजी अपन तिलस्मी हँसीसँ बिच्चे पगडंडीमे भटका दैत छलीह। बादल चुपचाप सोचक एकटा नमहर रास्तापर निकलि जाइत छल। ओ एहन बाट छल जाहिमे कतेको भट-काव, कतेको घुरची छल। एहि घुरचीकें सोझरयबामे अनेक क्षण मिलि मिनटक स्वरूप लेलक आ अनेक मिनट मिलि घंटा। अचक्के ओकर सोचक ई क्रम टूटि कानमे दूरसँ अबैत कोनो आबाज सुनाय पड़लैक—'की बात छैक बाउ, एना ठाढ़ भ' की सोचि रहल छी ?'

बादल हड़बड़ा गेल—'किछु त' नहि भौजी—किछु नहि।'

भौजी ओकर बाँहि पकड़ि लेलक 'किछु बात अछि बाउ, अहाँकें कथीक सोच अछि ?'

भौजीक प्रश्न सुनि ओ आँखि उठा क' हुनका दिसि तकलक। ओह ! भौजीक ओ नजरि बादलक अंतरकें जेना प्रकम्पित क' गेल। ओ चुप नहि रहि सकल—'अहाँकें कखनो कखनो की भ' जाइत अछि भौजी ? सभ सुख प्राप्त रहितो भौजी कखनो लगैछ भौतिक सुख उपलब्धिक एतेक जयघोषक मध्य जेना अहाँ विराट् शून्यमे हेरा जाइत छी। किएक भौजी किएक ?'

जेना बादलक प्रश्न भौजीक समस्त अस्तित्वकें झकझोरि देलक। किछु अकचका क' ओ एकटा निसाँस छोड़लनि। एक तोड़ पानि-बिहारिक बाद वातावरणमे एकटा विचित्र शांति रमि जाइछ, तहिना कतेक काल धरि भौजीक चेहरा सपाट रहल आ पुनः दोसर तोड़ पानि बिहाड़ि उठल। कनेक काल पहिने धरि जे चेहरा सपाट छल, से कतेक मनोभावनासँ भीजि-तीति गेल।

—भौजी, बाजू ने भौजी ! कोन करणें अहाँ एतेक आत्मपीड़न भोगि रहल छी ? कखनो लगैछ अहाँ एकटा कली छी गुमसुम, चुपचुप ! जखन अहाँ हँसैत छी तँ कली फूल भ' जाइछ। अहाँक संपर्कमे आयल सभ केओ एहि सौरभसँ सुरभित भ' उठैछ। अपन दुःख, अपन पीड़ा बिसरि जाइछ। भैयो तँ बजैत छथि जे अहाँक भौजी एकटा 'टॉनिक' छथि, हँसीक 'टॉनिक', सौरभक 'टॉनिक'। आ' फेर लगैछ हवाक कोनो तीव्र झोंक आयल आ फूलक सभटा पंखुरी धूरामे छिड़िया गेल ! फूल-फूल नहि रहैछ, अहाँ-अहाँ नहि रहैत छी ? भौजी, ई कोन बयार थिक—कोन पीड़ा थिक ?—बादल आवेशसँ हाँफ' लागल।

भौजी ता धरि अपनाकें सहज क' लेने छलीह ? किछु बाजबा लेल हुनक अधर खुजल की फोनक घंटी टनटनाय लागल। ओ दौड़लि 'ड्राइंग-रुम' चल गेलीह ! बादलक कानमे भौजीक मद्धिम स्वर पड़ल—'हेलो की हाल छैक ? हम ? जीबैत छी—हँ, जीबैत-जीबैत थाकि गेल छी—हम जीब' नहि चाहैत छी—जीब' नहि चाहैत छी—बड़ कठोर यात्रा अछि एहि जीवनक……'

बादलक कानमे भौजीक दर्द भरल स्वर घुमरैत रहल। फोनपरकें छल ? भौजीकें कोन दुःख छनि ? के अछि जकरा दुःख नहि छैक ? ककर जीवन सर्वथा क्लेश, व्यथासँ रिक्त अछि ! मुदा ओहि दुःख, क्लेश, व्यथाकें अभिव्यक्त करबाक लेल सभ केओ कोनो-ने-कोनो रूपमे माध्यम ताकि लैत अछि। प्रकृति धरि एहिसँ छटल नहि अछि। आकाशक अन्तरमे की सोच नहि अछि ? कारी-कारी मेघक घनघोर घटा की आकाशक हृदयक व्याकुलताकें अभिव्यक्त नहि करैत अछि ? आ' सोचक ई सीमा असीम भ' उठैत अछि,—जखन आकाशक छटपटी एकटा बिजुरी ब , । कौंधि जाइत अछि ! मेघक ई स्वर……आकाश जखन अपन वेदनाकें सहाजकरबामे असमर्थ भ' जाइछ - तँ वेदनाक ई चीत्कार समस्त संसारकें कँपा दैत अछि। आकाश तँ सरिपो

एतेक कमजोर, एतेक असमर्थ भ' जाइछ जे आँखिसँ अविरल अश्रुकरण खस' लगैछ। मुदा भौजीकेँ कनितो तँ नहि देखैत छियनि! सभटा नोर ओ पीबि लेने छथि······तावत भौजीक खनखनाइत हँसी ड्राइंग-रुमसँ फेर सुनाइ पड़ल। परदा हँटाक' चुपचाप बादल देखलक। मोहल्लाक चारि-पाँचटा छौड़ा भौजीकेँ घेरने—'चाची, सरस्वती पूजाक चंदा चाही—चाची, बिना अहाँक मदतिक कोना भ' सकैछ—'आँटी आंप हमलोगों को सलाह देती रहें—'सभक स्वरक जयमाल पहिरने भौजी मुस्कियाइत रहलीह—'बेस, अहाँ सभ निश्चिन्त रहू, एहि बेर एहि मोहल्लामे एहेन सरस्वती पूजा होयत जेहन कहियो नहि भेल अछि।

—'चार्च जिन्दाबाद—आँटी जिन्दाबाद' नाराक संग छौड़ा सभ चल गेल। समयक सागरमे ज्वार-भाटा अबैत रहल आ एक दिन डाकिया चिट्ठी ल' क' आयल। साइकिलक घंटी बजबाक संगे भौजी पागल जकाँ दौड़लीह। डाकिया एकटा लिफाफ द' चल गेल। भौजी छटपटाक' चिट्ठी पढ़' लगलीह। हुनक चेहरापर अबैत-जाइत रंगकेँ खिड़कीसँ बादल चुपचाप देखैत रहल! तखन बादलक मोनमे हल्लुक सन संदेहक साँप फन काढ़लक।—ककर चिट्ठी भौजी एतेक प्रेमसँ पढ़ि अपन कोठलीमे ओछाओनतरमे राखि देलनि? बादलक निःशब्द आँखि भौजीक पाछाँ क' रहल छल। ओकर हृदयमे एकटा आवेग उठल—एकटा धड़कन—ओ शीघ्रतासँ भौजीक कोठलीसँ चिट्ठी निकालि क' ल' आयल! भौजी भनसा घरमे छलीह। अपन कोठली बंद क' आशंकित मोन आ अव्यक्त भयक संगे ओ चिट्ठी पढ़' लागल—

'प्रिय नेहा!······' आ नेहा—भौजीक नामक संबोधन ओकरा कोनादन लगलैक। एहिठाम केओ भौजीक नाम नहि कहैत छलनि। खाली भौजी, चाची, काकी, माँ इएह सभ रूप हुनक छलनि! खैर, बादल आगाँ बढ़ल—'पत्र, 'अहाँक भावमय पत्र भेटल। हम ओकरा एकबेर दुइ बेर, अनेक बेर पढ़लहुँ। ओह! कतेक भावमयी अहाँ छी! लगैछ ईश्वर अहाँकेँ, अहाँक मोन प्राणकेँ कोनो रेशमक मुलायम, सुकुमार, 'मासूम' तारक ताना-बानासँ बुनने अछि, जाहिमे सलोनी पूर्णिमाक स्निग्ध, चन्द्रिकाक रस निचोड़ि राखल······' ओ पत्र पढ़ैत जाइत छल आ बादलक माथपर आबि रहल छल—भौजीक रहस्य जेना खुजि रहल छल—'एहि मोन-प्राणमे मानसरोवरक हँसक शुभ्रता आ मयूरपंखक

चित्रमयता अछि। कतेक रंग, कतेक सम्मोहन भरि देल गेल अछि अहाँक अन्तरक नीलाभ आकाशमे? साओनक घटाक करुण कोमल व्याप्ति आ बिजलीक तड़ित लयसँ अपन सपनाक सिंगार कयने छी अहाँ।' बादल अपन हृदयक धड़कन स्वयं सुनि रहल छल। भौजीक प्रत्येक हाव-भाव, एक-एक रहस्य ओकरा रोमांचित क' रहल छल...'एहि विशाल विश्वमे जाहि ठाम हमरा लेल कोनो विशेष आकर्षण आ सम्मोहन नहि अछि, जाहि ठाम हमरा जीबामे कि मरि जयबामे कोनो अन्तर नहि अछि ओहिठाम अहाँक पत्र एकटा पुलक, एकटा भोरक किरण, एकटा शरदकालीन ओसक चमक आ बसन्ती बयार बनि अबैछ, हम अपन ऊपर रसवंती केतकी वा चमेली वा किछु आरक अनुभूति करैत छी······' बादलकेँ लगलैक, भाभी कतेक 'फ्रॉड' अछि? कतेक 'भोला-भाला' कतेक नीरक्षीर सन पावन मुदा असलमे—? ओकरा मोन भेलैक, तुरत भैयाकेँ जाक' पत्र देखा दी। तुरत भौजीसँ पुछी। फेर सोचलक, कने आर आगाँ पढ़ि ली—'अहाँक मोनमे किछु घुमरैत रहैत अछि! हम बुझैत छी, अहाँ हमरा सँ किछु नुका रहल छी! अहाँ तँ हमर छोट बहीन सन छी? अपन भाइपर विश्वास नहि अछि?' भाइ-बहिन? बहिन-भाइ? बादलक दिमाग जेना चक्कर काट' लगलैक...ओकर बनाओल रेतक सभटा रेखा बिहाड़िमे लुप्त भ' गेलैक। ओकर ऊपर साँस जेना नीचाँ आयल? भौजी-ओह! कतेक बात ओ सोचि गेल? जेना भयंकर सपना देखिक' ओ उठल होअय—जेना कोनो अनर्थ होइत-होइत बाँचि गेलैक—'अहाँ हमरा राखी बन्हने छी। तखन अहाँकेँ हमरापर विश्वास नहि अछि? राखीक अर्थ थिक बहिनक रक्षाक भार!'—बादलक मानस-जेना पानि बरसि आकाश निरभ्र भ' जाइत छैक—ऐकटा पैघ 'एक्सीडेंट, होइत-होइत—एकटा भयंकर 'ट्रैजेडी' होइत-होइत बचि गेल। मुदा की 'ट्रैजेडी' होइत-होइत बचल? की भयंकर 'एक्सीडेंट' नहि भ' गेल? ओहि भाग्यहीन दिवसक रैत बादलक आँखिमे गड़' लागल—एहि तरहक ओझराहटि आ भौजीक पाछाँ बेहाल बादलक प्रकृति एकदम रूक्ष भ' गेल छल। अपन पढ़ाइ-लिखाइ सभ बिसरि गेल छल! मेडिकलमे एडमिशन टाकाक तंगीक कारण नहि भ' रहल छलैक! ओ चुप भ' नियतिक खेल देखि रहल छल। एम्हर भौजीक प्रवंचना—हँ, प्रवंचने तँ छलीह—दोसर लोक लग कतेक उत्फुल्ल, कतेक उन्मुक्त, कतेक सहज, मुदा अपने घरमे कतेक निराश, कतेक बंदिनी, कतेक दुरुह। समस्त शहरमे भौजीक बड़ाइ, छोट-पैघ, बूढ़-बेदरा स्त्री-पुरुष

सभ केओ मुक्त कंठें करैत छल ! ओएह भौजी भरल घर, लोक रहितो, कतेक असम्पृक्त भ' जाइत छलीह।

जखन भैयाकें कोनो गरजे नहि छनि तँ हम कथी लेल भौजीक पाछाँ तबाह भेल छी। आ' काँलेज जयबा लेल बादल तैयार होब' लागल। ड्राइंग रूममे फेर फोनक घंटी टनटना उठल ? आ पुन: भौजीक स्वर स्थिरसँ तीव्र। पुन: एकटा खनखनाइत हँसी……आ' बादलक कानमे जेना काँच पिघलैत रहल—दस मिनट बीतल, बीस मिनट बीतल—भौजीक गप्पक कतहु अन्त नहि छल—बादलक दिमाग साँय-साँय क' रहल छल।

ई कोन गप भेलै फोनपर ! गप करैत छी, हँसैत जा रहल छी—ई की भेलैक ? हम जलखै करवा लेल ठाढ़ छी, कालेज जाक' पता लगौनाइ अछि आ भौजी—एकटा नम्हर गपमेडुबल, बात-बातमे ठहाका…गप किछु सुनाइ नहि पड़ैत छल, मुदा स्वरसँ बादलक समस्त तनमे लहरि फूकि देने छल ! ओ तामसे कालेजदिस विदा भेल…… गेट लग पहुँचल कि भौजी पाछाँसँ दौड़लि ओकर बाँहि पकड़ि लेलकै—"जलखै क' लिय' बाउ !' —"नहि बड़ अबेर भ' गेल, हमरा कॉलेजमे किछु काज अछि।' तिक्त स्वरें बाजल बादल। ओकर स्वर पर भौजी चौंकि उठलीह !

'बाउ, अहाँक दुआरे हमहूँ जलखै नहि करब' किछु अप्रतिभ होइत भौजी बजलीह।

'हमरासँ कोन मतलब अछि अहाँकें ? अपन जाक' खा लिय'—उपेक्षासँ बादल बाजल।

'हम नहि जाय देब, जा धरि अहाँ जलखै नहि करब।' बासी मुँहें हम नहि जाय देब—भौजी ओकर बाँहि घिचने भनसा घर दिस ल' जाय लगलीह।

'हम एक बेर कहि देलहुँ, नहि खायब'।

अपन जगहपर अडिग छल ओ। भौजीक लेल बादलक ई रूप अकल्पनीय छल, अकथनीय छल। ओ अवाक् छलीह ! वेदनाक एकटा ज्वार हुनका आँखिमे उठल, मुदा तुरते अपन कौशलसँ ओहि ज्वारकें उपेक्षित क' देलनि। एकटा दर्द भरल मुस्कीक संग बजलीह—'हे यौ, केओ किछु कहि देने अछि ? अहाँ

एना किएक क' रहल छी ? हमरा सँ कोनो गलती भेल अछि ? की बात अछि ? चलू हमरा भूख लागि गेल अछि रविक प्रात थिक।'

'रविक प्रात…जा क' अहाँ खा लिय' ? हमरा की कहैत छी—एतेक कालसँ जे अहाँ निहोरा करबा रहल छी एतेकमे त' अहाँ कैक बेर खा लितहुँ।' बादलक सभ उपेक्षाकें अनदेखल सन क' भौजी कहैत रहलीह—'हम अहाँ बिना खाइत छी ?' अनुनय करैत बजलीह। बादलकें विवेक जेना कतहु हेरा गेल छल—'एतेक बहाना नहि करु भौजी ! अहाँकें हम खूब चीन्हैत छी।'

'बा…द…ल…'बादलक विद्रूप हँसीसँ भौजी जेना विवश भ' गेलीह।

'अहाँ अपनाकें की बुझैत छी ? छोड़ू हमर हाथ !'

'बादल…! भौजीक हाथ ओकर गट्टा पर आर मजगूत भ' गेल।'

'की बात छैक बादल जी ? अहाँकें…'

बादलकें जेना अपन होश हवास पर कोनो कब्जा नहि रहलैक—'नहि छोड़ब ? त' लिय'…।' भौजीक हाथ बामा हाथसँ कसि क' मोचड़ि देलक—अपन हाथ उन्मुक्त क' लेलक। भौजीक मुँहसँ एकटा पीड़ा निकलल 'ओह !' आ हुनक सौंसे चेहरा रक्तिम भ' गेल। बादलकें की भ' गेल छैक ?

'ई कुहरब काहरब नकल हमरा ल'ग किछु नहि चलत।' बादल क्रोधावेशमे माहुर भ' गेल छल—ओकर कंठ स्वर सौंसे आंगनकें प्रकम्पित क' रहल छल—ओ बिसरि गेल छल, हमर ई भौजी थिकीह, कोमल मसृण ओस सन मातृ तुल्य--ओ भैया छथि जे वर्दाश्त करैत छथि। हमरा सभ—आ आवेशसँ ओकर स्वर रुद्ध भ' गेलैक।

'अहाँ की करितहुँ ?' भौजी पुछैत रहलीह।

'हम—? पूछू, की नहि करितहुँ ? आन आन लोक संग टेलीफोन पर एतेक हँसी, एतेक ठट्ठा—भैया नहि जनैत छथि तें ने ? अहाँ भैयाक आँखिमे धूरा नहि झोंकेत छी की ?—अहाँ अपनाकें……

तावत बादलक गालपर पाछासँ दू-चारि चाट लागल—'बदतमीज बेहाया,

अपन मातृतुल्य भौजीसँ उकटा पैंची क' रहल छें ? कोम्हर दनसँ भैया आबि गेल छलाह। थापड़ लगिते बादलक आँखिमे तरेगन नाचि गेलैक। बीचमे भैयाक हाथ पकड़ि भौजी बाजि उठलीह—'ई की करैत छी ? बेटा सन छोट भाइ पर हाथ उठबैत छी' ?

'जे बेटा अपन माए पर कलंक लगबैक ओहि बेटासँ बेटा नहि रहनाइ नीक थिक।'

मुदा बादल, ओकर दिमाग जेना पगला गेल छल—'भैया, अहाँ भौजीसँ पूछू। एखन किछु काल पहिने ओ फोन पर ककरासँ हँसि-हँसि गप्प करैत छलीह' ?

'अरे निर्लज्ज, मोन होइछ जाहि जुबानसँ ई प्रश्न निकलल, ओहि जुबानकेँ पकड़ि क' खींचि ली……।

'अहाँ के हमर सप्पत थिक। आब अहाँ शान्त भ' जाउ। हमरा बेटा नहि अछि। हम बादलकेँ बेटासँ बढ़ि क' मानैत छी। बेटा माएके किछु कहैत छैक त' ओ कलंक नहि होइत छैक।' आ भौजी फफकि-फफकि कान' लगलीह। मुदा, भैया तमसायले स्वरमे बाज' लगलाह— 'किछु काल पहिने तोहर भौजी हमरेसँ गप्प करैत छलीह। बुझलही, खाली तोहर विषयमे' !

बादल अवाक् छल। 'कहैत छलहु तोहर भौजी जे मेडिकल कॉलजमे जेना होयत बौआक नाम अवश्य लिखायब। कम्पिटीशनमे नहि अयला त' की होयतैक ? जेना होयत, हम सभ टाका-पैसाक इंतिजाम क' हुनका डॉक्टर बनायब।'

भैया दाँत पीसैत एक-एक शब्दपर जोर दैत बजैत रहलाह। 'हम कहलियनि एतेक टाकाक इंतिजाम मुश्किल अछि ! तोहर भौजी की जवाब देलकौ से बुझलही ?—अहाँक बैंक में पाँच हजार जमा अछिए। हमर गहना जेवर बन्हकी राखि दस हजारसँ उपर भ' जायत। हम कतेक विरोध कयलहुँ जे बन्हकी नहि लगायब। अहाँक गहना पर हमर कोन अधिकार अछि ? मुदा हमर सभ बातकेँ ओ हँसैत-हँसैत काटि देलनि—नाम लिखयबामे मात्र दुइए दिन बाँचल छै ! हम सभ गप्प क' रहल छी बंधकी लगयबा लेल ! एखन तुरन्त

अहाँ चल आउ—।' भैयाक गर बोझिल भ' गेलनि।…'आ एहिठाम तोँ—बड़ नीक प्रतिदान प्रेमक दैत छलाह ? तोँ ठीके पैघ आदमी बनबह।

आ बादलकेँ काटू त' खून नहि। रेतक ढेर…ढेर बिरड़ो ओकर आँखि कान, नाकमे भरि गेल हो आ बादलक दम औना रहल हो, घुटि रहल हो……

'बाउ, चलू जलखै करबा लेल'

—ओएह स्नेहिल स्पर्श………



एकटा आकाश

अभिधाक मोनमे एकटा बिरड़ो बहल। सीपीक एक-एक आखर ओकरा मोन पड़ि अयलैक—'स्त्रीक आकाश ओकर घरक छत होइछ जे मात्र पति द' सकैछ……

अभिधाक आँखि आकाश दिस उठल मुदा ओकर अन्तरमे पुनः बिरड़ो चल' लागल आ सौंसे आकाश मैलछाँह भ' गेल। बिरड़ोक तीव्र गतिमे अभिधा एकटा खड़िका जकाँ उड़ि विस्मृतिक कोरमे खसि पड़लीह……

ओहो एकटा सपना देखने छलीह, एकटा छतक। अपन इच्छा, कामनाक देबालसँ महल बनौने छलीह एकटा छतक। मुदा ओ सपना छल, आँखि खुजल आ निन्न टूटि गेल।

जखन सपनाक देवाल खस' लगलै तँ ईंट-पाथरक तरमे दबल स्वयंकेँ बड़ असहाय बुझैत छलीह। एक दिन सीपी अपन नेना सभकेँ ल' अभिधा लग अयलीह। ओकर नेना सभक मध्य विहुँसैत अभिधा अपन सभ दुःख बिसरि जाइत छलीह। सीपीक नेनासभ तंग कर' लगलैक—हम सभ एखन मौसी लग रहब आ सीपीक नेनासभक आग्रह देखि ओहिठाम ओकरा सभकेँ छोड़ि चलि अयलीह।

ओहि राति नेना सभ सपनाक खसल देवालक एक-एक ईंटाकेँ हूँटा देलक ओ अभिधाक करेजमे कोनो कचोट जकाँ उठैछ। अपन 'बेड-रूम'क खिड़की खोलैत छलीह तँ खिड़कीक भीतर आकाश आबि ओकर आँखिक आगाँ बैसि जाइत छल। ओ कखनो खिड़की बन्द नहि करैत छलीह। शीतांशुकेँ देखिते ओकरा लगैत छल जेना सपनाक भव्य महल ओकरा समक्ष साकार भ' गेलैक। ओहि काल अभिधाक परीक्षा चलैत छलैक मुदा शीतांशुकेँ निहारैत सभ बिसरि जाइत छलीह।…… आ' एक दिन शीतांशु पितृहीना अभिधाक माएकेँ जीति अभिधाकेँ ट्यूशन पढ़यबा ले' आब' लागल।

आकाशमे बड़ जोर बिरड़ो उठि गेलैक। अभिधा शीतांशुक कोठलीमे छलीह। शीतांशु सभटा खिड़की केबाड़ बन्द क' देलक। बिरड़ो शान्त भेल,

शीतांशु क्षमा मांगि चल गेल जे एहि रहस्यकेँ केओ बूझैक नहि। अभिधा एहि रहस्यकेँ पेटमे रखने रहलीह। रहस्य पेटमे बढ़' लागल, बढ़ैत-बढ़ैत अपने खुजि गेल। माए ओकर दुर्गंजन क' राखि देलकैक। तखन जँ अस्पतालसँ घुरलीह तँ' डॉक्टर कहलकै जे आब कहियो माए नहि बनि सकतीह।

आ' शीतांशु जे क्षमा मांगि क' गेल से कहियो केओ ओकरा नहि देखलक—आब अभिधा बुझैत छलीह जे हमर बियाह कयनाइ व्यर्थ। हम ककरो वंश वृद्धि नहि क' सकैत छी। ओकर सपनाक महल हरबराक' खसि पड़ल आ ओकरा जिनगी भरि ओहि महलक ईंट पाथर तर रहबाक छल।

दोसर दिन सीपीक नेना सभ तंग कर' लगलैक—'मौसी बाजार चलू।' अभिधा बड़ उछाहक संग सभ नेनाकेँ बाजारमे खेलौनाक दोकान पर ल' गेलीह। रंग-बिरंगी खेलौना चारू दिस पसरल अ' अभिधाक करेजमे एकटा चोट लगलैक-हमहूँ त' आब एहि खेलौना सन छी, एकदम व्यर्थ आ तखने भेटल छल ओकरा प्रतीक—

'अरे, अभिधा! अहाँ एत'…… ?

अभिधा चौंकि उठल छलीह प्रतीककेँ देखि। ओकर बाल्य कालक संगी।

'प्रतीक अहाँ एत'…?'

प्रतीक हँसि पड़ल—'हँ, हम औफिसक काजसँ एहिठाम एक मास लेल आयल छी—ई अहाँक बच्चा सभ थिक? बड़ हँसमुख अछि।'

'हमर बच्चा—' उसाँसक सिहकीसँ सिहरैत स्वरमे बजलीह ओ 'हँ हमरे बच्चा, अर्थात् बच्चे जकाँ—चलू, लगेमे हमर घर अछि। एहिठाम गप्प कयनाइ ठीक नहि। अभिधा बजलीह—आ नेना सभकेँ खेलौना किना क' दूनू गोटए घुरि गेलीह।

अभिधाक सून घर, सून देवाल देखि प्रतीक पूछि बैसल—'अहाँ एकसरे रहैत छी की?'

प्रतीकक अभिप्राय बूझि अभिधा बाजि उठलीह 'हम एहिठाम एकटा कम्पनीमे स्टेनो छी। बेस, छोड़ू एखन ई सभ गप्प। पहिने अहाँ अपन कहू। कतै' छी? कनियाँ कत' छथि? कैक टा बाल बच्चा अछि?

'रुकू-रुक अभिधा, अहाँक प्रश्नक झड़ीमे हम नहा गेल छी--' प्रतीकक आकृति पर उदासीक संध्या पसरि गेल। 'अभिधा, हम एहि संसारक प्रायः सभसँ अभागल जीव छी। प्रिया रूसि क' चल गेलीह। हूँ, ओकरा टी० बी० भ' गेल छलैक। बियाहक बाद कोहुना क' ४-५ वर्ष हम ओकर संग पाबि सकलहुँ…………।' आ अभिधाक समस्त तन समस्त चेतना जेना सहस्त्र कान बनि एहि वार्त्ताकेँ आत्मसात् कर' लगलैक—अभिधा, ओ देवी छलीह, तखन हम एम० ए० पास क' एकटा स्कूलमे शिक्षक छलहुँ। कतेक तंगीसँ हमर सभक गृहस्थी चलैत छल। देह तोर महंगी जे नीक-नीक लोकके मारि देलक ताहिठाम एकटा मामूली मास्टरक कोन गिनती। माय-बापक ओ दुलारु बेटी मुदा कतेक दुःख दैन्य कतेक मानसिक पीड़ा सहि ओ रहलीह। ई मानसिक पीड़ा तनकेँ अग्नियोसँ बेशी डाहि क' राखि दैत अछि। जारनिक आगि मानव सहि सकैत अछि मुदा हृदयक आगि………? ओकरा एकेटा इच्छा छलैक जे हमरा औफिसरक रूपमे देखय। कहियो कोनो वस्तुक मांग, ककरो कोनो शिकाइत हमरा लग नहि कयलक मुदा ओकर निशानी चारि वर्षक रजत आ छओ वर्षक कविता हमर जिनगी, हमर साँस बनि क' रहि गेल। आब हम परिस्थितिक आगू स्वयंकेँ समर्पित क' देने छी। हम फर्स्ट क्लास अफसर छी। दूनू नेना के उत्तम वस्त्र, उत्तम स्कूल उत्तम रहन-सहनक व्यवस्था क' देने छियैक मुदा, हमरा एतेक समय कत' जे हम अपन स्नेह आ प्रेमक वरखा ओकरा सभपर क' सकी, जकर कि एखन ओकरा सभके बड़ आवश्यकता छैक।

आ अभिधाक दूनू नयन डबडबा उठल। ओह। ई संसारे दुःखी आत्मासँ भरल अछि। प्रतीक, भगवान ककरो छोड़ने नहि छथिन। हम नहि बूझि सकैत छी जे एतेक सुख, एतेक वैभव विलास देवाक संगे ईश्वर एतेक दुख, एतेक घुटन, एतेक वैकल्य ल' मानव अन्तरक निर्माण किएक क' दैत छथि? सत्ते हुनका मोनमे कत्तहु ममता नहि छनि ककरो प्रति।

'अभिधा की अहाँकेँ भगवानपर विश्वास नहि अछि। की अहाँ मंदिर-देवता किछु नहि मानैत छी?'

'प्रतीक मंदिर गेनाय हमरा नीक लगैत अछि मुदा, कोनो अनुष्ठान लेल नहि। ओहि लेल हम कहियो नहि गेलहुँ। मात्र शांति लेल, शांतिक संचय लेल। मोनकेँ चुपचाप धो देबाक लेल। सत्ते कहैत छी प्रतीक। परमात्मा

खाली सुखी लोकक कल्पना अछि। जे दुखी एवं संतप्त लोकके बुझयबा लेल रखने छथि। ई परमात्मा एकटा भयंकर असत्य थीक, जकरा मानव निष्प्रयोजन बहुत कयने जाइछ।'

'अभिधा—अभिधा……'—प्रतीक जेना स्तब्ध, हतवाक् रहि गेल।…… ई ओएह अभिधा थिक जकर अधरक डारि परसँ कहियो स्मितक फूल मुरझाइत नहि छल, ओकर सिंगरहारी हँसी देखि कतेको कविता बनि जाइत छल……

मुट्ठी भरि सिङरहार
छिड़िआयल चारु कात

'आ, आब अभिधा, नास्तिक अभिधा, दुखी अभिधा, अहाँके की भेल अछि?'

—'प्रतीक, नारी स्वयं एकटा बुझौअलि थीक आ स्वयं उत्तरो। प्रश्न बुझनाइ तँ कठिन अछिये, उत्तरो कम दुष्कर नहि। हमर हृदय कोनो चोटक पीड़ासँ ग्रस्त अछि, मुदा हम स्वयं नहि कहि सकैत छी जे ई केहन चोट थिक। ई अनका चोट मोनकेँ विह्वल क' देने अछि। हृदयमे एकटा हलचल अछि। ई ओतबे सरल अछि, जतबा गूढ़। सरल एतेक जेना सोन जूहीक कली, आ फूटो ओतबे जेना ओहि कलीसँ चोट लागि गेल हो आ व्यथासँ तन प्राण भरि गेल हो……' -अभिधाक आँखि कोनो सुदूर अतीतमे अँटकि गेल। आँखिक पुतलीमे शीतल दिन मखमली सपना-सन जग-मग कर' लागल मुदा लगले ओ एकटा नीरव श्मशानमे बदलि गेल—

'प्रतीक, ओकरा हम देखलहुँ तँ लागल जे हम हुनका लेल युगसँ, कल्पसँ बढ़ि रहल छलहुँ। शीतांशु ओस-भीजल गुलाब-सन कविता हमरा दैत छल आ' हमर निराश अन्तर सुनील गगनमे बिहुँसल सोन जूही ताराकेँ देखि प्रमुदित होइत रहल।' आ अभिधाक नयनसँ दू बुन्न नोर खसि ओकर पियासल गालकेँ तृप्त करबाक प्रयासमे लागि गेल। ओ मौन भ' रहलीह, जेना वेदना अपन मूक संगीत ओकर अधरपर राखि देने हो!

'की भेलैक फेर' -निस्तब्धताकेँ चोट लगबैत बाजल प्रतीक।…'हँ एक दिन हम बुझि गेलहुँ जे ओहि ओस-भीजल गुलाबक खेतीक कारण ओ नहि, केओ आन अछि। मुदा तखन धरि बड़ अबेर भ' गेल छल। आ' आब हम बैसि ठीके बैसी क' रहल छी। रोज राति शीतांशुक नाम एकटा पत्र लिखैत छलहुँ।

बड़ी काल धरि ओकरा पढ़ैत छलहुँ। हमर आंगुर शीतांशुकेँ ओहि अक्षर, शब्द पँक्तिमे बन्हैत रहल आ' हम निनिमष ओकर रूपकेँ ओहि सभमे तकैत रहलहुँ। मुदा, उषाक आँचरसँ लालिमा झड़बाक संगे हम ओहि पत्रकेँ दू खंड क' दैत छलहुँ। हम स्वयंकेँ दू खण्ड क' देने छलहुँ। एकटा खंड हम स्वयं छलहुँ जे ओहि पत्रकेँ लिखैत छल, दोसर खंड शीतांशु छल जे ओकरा पढ़ैत छल।

निष्पंद, निर्वाक प्रतीक बैसल रहल। अभिधा साकार वेदना बनलि छलीह...'प्रतीक, हम समर्पित, विह्वल, एकोन्मुख। आहत मोन धाहसँ भरि उठल। एतेक पैघ प्रवंचना हमरा छलि गेल। हम त' 'आखाढ़क' एक दिनक 'मल्लिका' बनि जीवनक सभ सुख आत्मसात क' लितहुँ, मुदा ओ······ओ हमरा कतौक नहि रखलक। हमरा सभटा स्मरण होइछ आ' हम बिखरि जाइत छी। हमर व्यथा एकटा अर्थहीन ट्रेजेडी बनि क' रहि गेल। व्यथा सृजन करैछ, मुदा हमर व्यथा बाँझ रहि गल।'...आ अभिधा हिचकि-हिचकि कानि उठलीह। कतेको क्षण धरि ओ ठेहुनमे मूड़ी गाड़ने कनैत रहलीह।

'अभिधा!'—प्रतीकक स्नेहिल स्पर्श, ओकर पीठपर माथपर आशीर्वादी हँसोथैत रहल—'बस, एतबेमे अहाँ घबड़ा गेलहुँ? अहाँक समक्ष समस्त जिनगी विस्तृत गगन जकाँ परसल अछि, ओहिठामक स्वर्णिम तारा चानीक चान—सभटा त' अहींक थीक। जे चूनी, जे ग्रहण करी, ई त' अहाँक······'

—'नहि-नहि प्रतीक।' आवेशसँ मूड़ी झटकारैत बजलीह अभिधा 'एतबे नहि, एतबे नहि, आब हम कहियो माए नहि बनि सकैत छी···कहियो माए नहि बनि सकैत छी। हमराकेँ ग्रहण करत? हमर ममता सून रहि गेल। हमर वात्सल्य सिसकैत रहि गेल'—आक्रोश क' उठलीह ओ।

—'अहाँ शान्त रहू, धैर्य राखू—' आ तखन प्रतीक अभिधाकेँ अपना ओहिठाम ल' गेल। अभिधा, कविता आ रजत—तीनूमे दोस्ती भ' गेलैक। आफिसक बाद अभिधाक बहुत समय ओहि दूनू नेनाक संग बीत' लगलैक। एक दिन कविता फरमाइश कयलक—'अंटी, एकटा खिस्सा कहियौक।' 'हँ-हँ अंटी।' रजत समर्थनमे कहि बैसलैक–'हमरा सभकेँ केओ खिस्सा नहि कहैछ। खाली किताबे टामे पढ़ैत छी। परीवाला खिस्सा, राक्षसक नहि। राक्षससँ डर लगैत अछि।'

'बेटा, राक्षससँ डेरायब त' मर्द कोना बनब? अहाँ भारतक सन्तान थिकहुँ, जत' अनेको शूर वीर जन्म ल' राक्षसक वध कयने अछि।'

'अंटी, अहाँ कहियो राक्षसकेँ देखने छियैक?' विच्चेमे बात कटैत रजत पुछि बैसल।

दोसर कोठलीमे काज करैत प्रतीक हँसि पड़ल।...'बेटा हम देखने त' नहि छियैक, मुदा राक्षस आ देवता कत्तहुँ बाहर नहि रहैत छैक। हमरा मोनमे जे सत् असत् भावना अछि, ओहिमे सत् ईश्वर थिक, असत् राक्षस।' ओह। खिस्सा कहियौक अंटी।'...कविता भूमिकासँ विकल भ' उठलीह।

'एकटा परी छलि। विजन विपिनक प्रसून-सन खिल-खिलाइत।...' अभिधाक स्वर जल तरंग सन प्रतीकक कानमे किछु गढ़ैत रहल।—'ओ एतेक मृदु एतेक मसृण छलीह·····

'जतेक अहाँ।' कविता बाजि उठलीह। आ तीनक मिश्रित हँसी प्रतीकक कानमे किछु गबैत रहल।' ओकरा काज करबामे मोन नहि लगलैक। 'मामू ने, हम अहाँकेँ मम्मी कही?' रजत दोहराइत रहल आ नहि जानि कोन पीयूष धाराक आवेगमे डोलैत अभिधा रजतकेँ कसि क' अपन छातीसँ सटा लेलनि। 'बे···टा···' बाजि उठलीह अभिधा। ओकरा लगलैक जे ओकर आकाश आब मैलछाँह नहि रहलैक, साफ भेल जा रहल छलैक! क्षण भरिमे ओकरा अपन असहाय होयबाक ओ घटना मोन पड़ि अयलैक। एक सांझ जखन सभ केओ ऑफिससँ अपन-अपन घर चलि गेल, अभिधा एखन धरि कोनो चिट्ठी टाइप क' रहल छलीह। तखन ओकर ऑफिसर अजय बाबूक व्यवहार ओकरा संग···?

चारू दिसिसँ केवाड़ बंद करैत अजयबाबू बजलाह—अहाँ जनैत छी अभिधाजी, हमरा की काज अछि? हम सोचैत छी अहाँ एतेक अबोध नहि छी। ······अभिधाक सर्वांग पीपरक पात जकाँ थर-थर काँपि रहल छल—हमरा जाय दिअ'···आ ओ शराबी नीच अजय बाबूक बाँहिसँ पिछड़ि, दैवी शक्ति बले पड़यबामे सफल भ' गेलीह। ओहि दिन तँ ओहि पशुसँ बचि ओ चलि अयलीह मुदा, मोनमे तखने एकटा विचारक बिजली चमकि उठल—स्त्रीक आकाश ओकर छत होइत छैक जे मात्र पति द' सकैत अछि।—ओ कसिक' रजतकेँ पकड़ने रहलीह। ओकर आँखिसँ अविरल अश्रुधार प्रवाहित होइत रहल—प्रतीक देखैत रहल। ओकर मोन अभिधा लेल कतेक इन्द्रधनुष बना देलक। ओकर मानस पटल पर अभिधाक उज्ज्वल आनन चमक' लागल। ओकर मुँहपर कतौकक कोनो कालिमा नहि छल। ओकरा मोन पड़ल जखन शीतांशुक रूपलोलुपताक

विषयमे अभिधा कहने छलीह, प्रतीक पुछने छल...'अभिधा, सीताक जाहि रूपक आगिमे रावणक समस्त तन छाउर भ' गेलैक ओ नारीक रूप की थीक ? कवि कहैत छथि—रूपक पियास ! ई कोन पियास थीक ? पानि देखि पियास नहि लगैत अछि, मुदा, रूप देखि पियास किएक लगैत अछि ?'

—'सत्ते कहैत छी प्रतीक, नारीक रूप एकटा भ्रम थीक, एकटा भयंकर मृग मरीचिका......'

—'छाहरिकें मानव बूझि पकड़नाइ भ्रम थिक, मुदा रूप त' कोनो वस्तुक छाहरि नहि थीक ।'

—'जाहि दिन मानव बूझि जायत जे रूपो मानवक छाहरि थीक ताहि दिन सत्य स्नेहक गूढ़ता बूझि जायत । एहि सृष्टिक निर्माणमे सभसँ पैघ सहयोगी किछु थीक तँ नारीक रूप । एही रूपसँ आकर्षित भ' एहि सुखमय सृष्टिक निर्माण होइछ । आइ साहित्य आ काव्यक आकर्षण नारिये थिक । मुदा, नारीक बाल रूप पुरुषक मोनमे वसन्तक मादकता नहि अनैछ । तें यदि नारीक रूपसँ आकर्षित भ' पुरुष मर्यादित ढंगसँ किछु क' देखयबाक सामर्थ्य रखैछ तँ ओ अपूर्व सुन्दरताक श्रृंगार करैछ ।

—'ओह ! कत' वासना, कत' प्रेम ? अहाँ दुनूकेँ एक्के डंटीमे......'

—'देखू प्रतीक, हम दुनूकेँ जोखि नहि रहल छी । इंजिनक जे शक्ति ओकरा आगू ल' जाइछ, ओएह ओकरा पाछाँ धकेलि सकैछ ।'

आ' अभिधाकेँ जेना होश अयलैक । बेसुधिक संसारसँ ओकर आँखि खुजलैक त' प्रतीक ठाढ़ छल । निमिष मात्रक लेल दुनूक आँखि एक दोसराकेँ बहुत किछु कहि वरमाला पहिरा देलक । प्रतीक कहने छल...'संध्याक पसरल उदासीमे कोनो विरहिणी तुलसी लग दीप लेसि माथ झुका लैत अछि त' नोर दीप लग टप्प द' खसि पड़ैत अछि, व्यथाग्निसँ तप्त । अभिधा, जिनगी क्षणसँ बनैत अछि वर्षसँ नहि । अवधि जीवन नहि थीक, मुदा जे क्षण जीबि जाइत अछि, ओएह जिनगी थिक—जाहिमे साँसक गति तीव्र भ' जाइत अछि, आन किछु नहि, मात्र भावना विशेष रहि जाइछ । हृदय एक अस्पष्ट मधुर नादसँ गुंजित भ' उठैछ । हम अहाँ एक दोसराक प्रति आकृष्ट नहि छी, मुदा समर्पित छी...'

आ सत्ते अभिधाक मोन फूल सन हल्लुक भ' गेलैक...स्वातीक बुन्न खसिते सीपीक मुँह खुजि गेलैक...बरखाक बुन्न मोती बनि गेलैक । ओकरा बूझि पड़लैक जे प्रतीकक एक-एक बात ओकर मोनक असंख्य सीपीमे जाय मोतीक रूप धारण क' लेलकैक । हृदय जेना स्वयं ओकर एक-एक बातकेँ अपन कक्षमे सजाय राखि लेलक ।

आकाशमे सघन मेघ लागल रहितो अभिधा जेना कोनो इन्द्रधनुष ताक' लगलीह । आस्ते-आस्ते चान देखाइ पड़' लागल, कलिमा बिला गेल । प्रतीकक आकृति पर अपूर्व आलोक पसरि गेल । एकटा विश्वासक संग समय ससरि गेल.........



सिसकैत अन्हार

अनुरागक हृदय अन्हरिया रातिक आँचरमे नुका गेल छल। लगैत अछि ई अन्हार हमर जीवनक गहन तिमिरपर हँसि रहल होय—कारी आकाशमे अबरखी खंड सन छिटकैत ताराक आवरण पहिरि रजनी निर्भय भ' उठल छलीह—एकटा उच्छवास अनुरागक अंतरसँ निकलि ओहि शून्यमे बिलीन भ' गेल—भोर होइत अन्हार खतम भ' जाइत अछि मुदा, हमर जीवनक अन्हारकेँ कोनो प्रात नहि कोनो स्वर्णिम अरुणिम उषा नहि—प्रत्येक मानवक हृदयमे एकटा पीड़ामय संसार होइत अछि आ अपन एहि वेदनामय संसारमे ओ कतेक असगर—कतेक असहाय होइत अछि—ई की भ' गेल कुहूकेँ—हरदम कोनो सोचमे डूबल-कोनो गुनधुनमे पड़ल मामूली ज्वर-बोखार-डाक्टर बाजल—दू-चारिदिनमे उतरि जेतैक। मुदा आइ पन्द्रह बीस दिन भ' गेलैक—जेना कोनो घुन लागि गेल होय-नापल जोखल शब्द ओकर मुँहसँ बहराइत अछि आ बजैत बजैत आगुक बात बिसरि जाइत अछि। कखनो भीत हिरणी जकाँ आँखि हमर चेहरा पर रखैत अछि—हमर कलेजा कटि जाइत अछि व्यथासँ— कोन प्रलयंकारी घटना ओकर आँखिमे नचैत रहैत अछि। ओकरा प्रसन्न करबामे हमर प्राण सदिखन आतुर रहैत अछि—मुदा—हम जहिना-जहिना ओकरा समेटैत छी ओ बिखरि जाइत अछि। आँखिर ओकरा कोन वस्तुक दु:ख अछि—?

दु:ख······? अनुरागक माथक नस जेना छिटकि काँपय लगलैक। आस्तेसँ अपन माथ दूनू हाथमे राखि देलक—कतेक बेर कुहूसँ पुछैत छी मुदा उत्तर—'कोनो दु:ख नहि' बस हमर सभ उत्तर हुनक अधरपर—'टेप' भेल अछि। कालिह आयल छलीह श्रद्धा—श्रद्धा अनुरागक पड़ोसिन बाल्यबालक संगिनी—आ अनुक भावना दोसर करोट लेलक—आँखिमे मेघक एक खंड घुमड़ि गेल—श्रद्धा सहोदर बहिनक अभावक पूर्ति छलीह—श्रद्धा—

—कतेक धूमधामसँ ओकर वियाह कयलहुं मुदा ओ विधवा भ' बैसि रहलीह—एकटा बाल-विधवा जे अपन पतिक स्पर्श मात्र पाणिग्रहण काल कयने होअय। कुमारी विधवा जे अहीवातीक अर्थ धरि बुझि नहि सकल। एकटा एहन वृक्ष जाहिमे कोनो क्षण फल लागि सकैत अछि मुदा·········अनुरागक आँखिमे एकटा अतीतक

क्षण चमकि गेल···बाल्यकालमे दूनू गोटे चोरा-नुक्की खेलाइत छलहुँ। श्रद्धा दौड़ि हमरा पकड़ैत छलीह। खेल-खेलमे लड़ाय भ' गेल। हमर पयरमे ठेस लागि गेल छल। सोणितक रेत चल' लागल। श्रद्धा खूब हँस' लगलीह। झगड़ा तँ भेले छल—हम एक चटकन तामसे ओकरा गाल पर द' देने छलहुँ। ओ कनैत कनैत भागि गेल। हम दौड़लहुँ माए लग। माए तँ शोणित देखिते जेना व्याकुल भ' गेल—असगर बेटा—बाबूजी मृत्यु उपरान्त माए हमरा अनमोल निधि सन साँठिक' रखैत छलीह...ओ चट द' डेटोलसँ साफ क' चेथड़ा डाहि क' आंगुर पर साटि देलक कि तावत श्रद्धा कनैत पहुँचल छलीह। आब हमरा होश आयल। हमर आंगुरक छाप ओकरा गालपर ओहिना छल जेना कोनो पहाड़ पर पसरल एकपेरिया। तावत चाची—श्रद्धाक माएकेँ हम चाची कहैत छलहुँ—आबि डाँट' लगलीह—खाली कानब—बेर-कुबेर किछु नहि बुझैत छैक। देखैत नहि छी भैयाकेँ कतेक शोणित बहि रहल छैक—

हँ, भैया—ठैया—हमरा मारलक से किछु नहि···आ' ठुनकैत ठुनकैत ओहिठामसँ चलि गेलीह। हमरा बड़ ममत उमड़ि गेल। कनेक कालमे ओकरा तकैत-तकैत ओकर आँगन गेलहुँ। ओ अपन ओछाओनपर सूतल—एहि आँखिक नोर हमार ओहि आँखिमे जाइत छल—श्रद्धा-श्रद्धा हम ओकर केशमे आँगुर ओझराब' लगलहुँ—हूँ' हूँ कहैत ओ दोसर करोट घुरि गेल—हमर बुधियारि बहीन लोक ओकरे पर तमसाइत अछि जकरा सभसँ बेसी मानैत अछि आ अहाँ तँ······

हमरा सभसँ बेसी मानैत छी ने ?

—अचक्के श्रद्धा उठिकेँ बैसि रहलीह हमरा हँसियो लागि गेल छल---

सभ दिन एहिना मानब ने ?

हँ, हँ, श्रद्धा सभदिन-सभदिन—अपन तरहथ हमर आगु पसारैत बाजल—'पक्का' ओकर तरहत्थी पर अपन विश्वासक तरहत्थी रखैत हम भावमय भ' गेल कहलहुँ—'पक्का बहीन, पक्का'—आ ओ श्रद्धा हमर आत्माक अंश ओकर ई हाल ? कतेक रूपमे सजा क' हम ओकरा अपन समक्ष अनैत छी सभ बेढँग-व्यर्थ, कुरूप लगैत अछि मुदा ओ जखन करुणामयी बहीनक रुपमे अबैत अछि तँ हमर जन्म सफल भ' जाइत अछि। ओ बहीन नहि अशेष आत्मा अछि—पजरैत आगिक धूआँ नहि अगरबत्तीक छोट छीन पातर धूआँ पवित्र पावन—श्रद्धाक सासुरसँ

एना आइ बीस दिन भ' गेल। समय-नदीक कतेक पानि बहि गेल।

—चौंकि अनुराग आकाश दिसि तकलक। एकटा अरुणामा आकाशमे मुस्काइत जाइत छल। घड़ी दिसि देखलक छओ बजैत छल—सौंसे राति आँखिमे बीति गेल। निसांस जोना पिंजड़ासँ फड़फड़ा क' बाहर निकलि गेल!—

—आ कुहू अपन ओछाओन पर चुपचाप पड़ल छलीह। ओकरा लगैत छलैक जे ई ओछाओन नहि ईसामसीक 'क्रास' थीक जाहिमे ओ ठोकायल अछि। ककरो रेडियोसँ कोनो करुण गीत अबैत छलैक...'जीयेंगे मगर मुस्कुरा न सकेंगे कि अब जिन्दगी में मुहब्बत नहीं है...'सत्त', हमर जिनगीमे आब की बाँचल—रहि रहि अपन संगी गंधाक बात कुहूक मोन पर छेनी मारैत छल-कुहू अटाँ किछु नहि जनैत छी—अनुराग आ श्रद्धाक संग एखन रंग अनने अछि।

श्रद्धा? के श्रद्धा...जेना एकटा तीर सनसनाइत कुहूक अन्तरकें विद्ध क' देलक।

अरे ओएह, शेखर बाबूक विधवा बहिन—

छी: छी: की बजैत छी। ओ एहन नहि छथि—

अहाँ बड़ सरल छी कुहू। मर्द जाति पर एना आँखि मूनि विश्वास करब तँ अपने सर्वनाश होयत।

आ रुग्णा कुहूक हृदय गंधा अपन दैनन्दिन बातसँ भरैत रहल एकटा मंथरा बनि। कुहूक हृदय आहत चिड़ै जकाँ छटपटाइत रहल। श्रद्धा-श्रद्धा ओ नाम सुनने छलीह शेखर हुनक अभिन्न मित्र हुनके बहिन—विधवा···जे सासुरमे छलीह—एक दिन आयल छलीह हमरो देखवा लेल—बड़ कम बाहर निकलैत छलीह।—श्रद्धा-श्रद्धा—आ—ह।

भौजी केहन मोन अछि—शेखरक स्वर अमृत बरसा गेल समस्त वातावरण मे। कुहू देखलनि अनु आ शेखर—जेना छातीमे कोनो कील गड़ि गेलैक—

कुहू देखू ने शेखर आइ अपना संग खाय लेल जबर्दस्ती हमरा रोकि लेलक। कैपसुल खयलहुँ कि नहि? कतेक बाजि गेल?

...ओ एखन दस मिनट देर अछि। आ कुहूक समस्त देह काँपि रहल छल जेना तीव्र हवाक वेगमे एकसर गुलाब।

भौजी, अहाँ कतेक सहैत छी। अहाँक ई स्वभाव-ई व्यवहार—ई प्रेम-ई गाम्भीर्य—ई सभ कोनो साधारण स्त्रीकें नहि रहैत छैक। अहाँक ई विशाल हृदय······

बस बस बाउ, हम ई सभ किछु नहि छी, क्लान्त स्वरे बाजल कुहू।

बेस भौजी हमरा ठकैत छी, परिहासमे बाजल शेखर।

नहि बाउ, जीवनमे स्वयंकें ठकबाक अतिरिक्त आर ककरो ठकने छी, मोन नहि पड़ैत अछि। श्रद्धाक की हाल छैक?

श्रद्धाक?—उसासक धुआँ समस्त वातावरणकें धूमिल क' देलक।

ओकरा पुनर्विवाह क' लेबाक चाहैत छलैक। एहि रोगी समाजक सभ नियम सड़ि गेल छैक। विवाहक प्रस्ताव ओकर समक्ष राखल गेल छलै अबस्स मुदा ओ स्वीकारलक नहि। समाज तँ आब सभ क्षेत्रमे प्रगतिशील मार्ग अपनौने अछि।

ई बात तँ अछि शेखर मुदा, लोकक विचारमे एखन धरि परिवर्तन नहि आयल अछि। समाजक ठीकेदार कानूनक डरसँ किछ नहि बजैत अछि। अनुक स्वर चंचल छल।

अनु, समाजक रुढ़िकें, परंपराकें बदलबाक प्रयत्न जाधरि नवपीढ़ी नहि करत ताधरि असंभव। परंपरा बदलबाक लेल समाज बदल' पड़त! आ ई काज युवके क' सकैत अछि। नबका पीढ़ी समाजक रीढ़ थीक, आब' वाला समाजक अधिनायक। नारीक अपमान अपन माएक अपमान थीक। समाजक निर्माता पुरुषकें जन्म दय नारी वात्सल्यक मोहमे ओकरा समाजक अधिष्ठाता बना देलक। शेखर आवेशमे चुप भ' गेल आ अनुक आँखिक आगु एक क्षण स्पन्दित भ' उठल—जखन श्रद्धाक विवाह भेल छल तखन ओकर सुन्दरताक भान अनुकें भेल छलैक पहिने पहिल। शान्त महासागर सन अथाह गहिँरइ नेने ओ नैन नैन आँखि—रानी हेलेनोक आँखिमे इ गहिँरइ नहि हेतैक। कृष्णोक वँशीक स्वर

एतेक पावन नहि हेतैक – क्लियोपेट्रामे एहेन मधुर आकर्षण नहि होयत—लाठी मारि मारि प्रसुप्त वासनाकेँ जगब' वाला उद्दाम सौदर्यकेँ अनु देखने छल मुदा, उपासना करवा लेबाक शक्ति राख' वाला एहि स्निग्ध सौन्दर्यकेँ देखि अनु मोने मोन गुनगुना उठल—आह पहिलुक बेर देखि रहल छी ई दिव्य रूप ! आ ओएह हेलेन, ओएह क्लियोपेट्रा जखन विधवा भ' क' अयलीह तँ श्मशानक उदासी नेने कहने छलीह--भैया-इजोरिया हमरा लेल मृत्युक कफन थीक । ई राति अभागलि विधवा आ ई अर्द्ध चंद्र कोनो विधवाक टूटल चूड़ी— आ श्रद्धाक आँखिक कण अनुरागक आँखिमे आबि गेल छल—

समयक सागरमे ज्वार भाटा अबैत रहल जाइत रहल । कुहू ओछाओन पकड़ने रहलीह । दू मास भ' गेल । डाक्टर सभ थाकि गेल । बीमारीक कारणक कोनो पता नहि चलि रहल छल -- आ कुहूकेँ लगैत छल जेना सौंसे ओछाओन पर नागफनी पसरल होय । ओकर अन्तर अनगिन निराशाक मेघखण्ड सँ भरि गेल । ओकरा अपन जीवनक कोनो उपयोगिता नहि बुझि पड़ैत छलैक । कुहूक होइत छल श्रद्धाक प्रेमसँ अनुरागक आकाश लाल भ' गेल छल । ओकर मोनमे संशयक चोर बसि गेल छल जे सदिखन ओकरा कचोटैत छल जे जीवनक बाजी—प्यारक बाजी । ओ सभ दिन लेल हारि गेलीह । संशयक धुन ओकर शरीरे टा नहि मोनकेँ सेहो नाश कयने चलल जा रहल छल । कखनो काल क्षण भरिक लेल मोनमे अपराधबोध होइत छल जे नहि ओ एना नहि क' सकैत छथि । आदि कतेको बातसँ स्वयंकेँ बुझबैत छल मुदा मोन तँ शक्की होइत अछि—कुहू अपन निर्बल पक्षसँ प्रभावित भ' किछुसँ किछु सोचैत छलीह आ केन्द्रित विश्वास कण कण भ' बिखरि जाइत छल । जत' विश्वास होइत अछि आत' संदेहक स्थान नहि । जाहिठाम मात्र संदेह होइत अछि ओहि ठाम घृणा होइत अछि, संघर्ष होइत अछि-घात होयत अछि ! एक दिसि विश्वास आ दोसर दिसि संदेह भेलासँ किछु नहि होइत अछि । संदेहमे असुरो शक्ति होइछ जे विष पसारैत अछि तखन देवता मरि जाइत अछि । दानवक राज्य होइत अछि । अनुरागक सभटा दवाइ, उपचार, सेवाक अछैतो कुहू दिनानुदिन निर्बल भेल जाइत छलीह ।

कुहू—ई शब्द कुहूक माथक चुम्बन लेलक—अहाँक ओ सोनजूही हसी-जाहिमे हमर सभ दुःख दर्द धोखरि जाइत छल-ओ मुस्कान जकर आलोकसँ समस्त घर द्वार अदभुत आभासँ उद्भासित रहैत छल--कत' हेरा गेल ? हम कतेक प्रयास करैत छी कुहू अहाँक ओ हँसी एक बेरि घुरि आबय आ हम ओहि

हँसी के अपन अधरमे समेटि ली । मुदा, अहाँक हँसी रुदनोसँ करुण भ' जाइत अछि । अहाँकेँ की होइत अछि कुहू हमरासँ कोन अपराध भेल---

आ कुहू आँखि मूनने रहलीह । नयनक दूनू कोरसँ दू बून्नमे किछु पंक्ति सिहकि गेल ।

—अहीं तँ कहने छलहुँ

एना हँसू ने

केकरो नजरि ने लागिजाय

कत्तौ ग्रहण ने लागि जाय

नजरियो लागि गेल

ग्रहणो लागि गेल···

आब हम कहियो नहि हँसि सकब अनु कहियो नहि । संसारक कोनो गीत कोनो संगीत हमर मोनकेँ मुकुलित नहि क' सकत...मुदा, प्रकटतः एतबे बजलीह——छी: छी: अहाँसँ कोन गलती होयत ? अनुक दूनू हाथमे कुहूक दूनू हाथ काँपैत रहल--

तखन अहाँकेँ की भेल—अचानक की भ' गेल कुहू -- की भेल की भेल... अनु नेना जकाँ प्रलाप क' उठल । डाक्टर कहने छल -- हमरा रोगीक सहयोग एतेक प्रयत्नक बादो नहि भेटि रहल अछि । दवाइसँ बेसी रोगीक स्वस्थ हेवाक, जीबाक इच्छा ओकरा स्वस्थ बनयवामे सहायक होइत अछि । मुदा, रोगी जानि बुझि आत्मघात क' रहल अछि ।

अनुराग चौंकि उठल छल-आत्मघात ? आखिर किएक ? एहन कोन दुःख ओकरा मोने छैक जे आत्मघात करबा लेल विवश भ' गेल । कतेको प्रयत्न करैक उपरान्तो ओ कुहूक अन्तरक बात नहि बुझि सकल-- हम तँ ठीके छी । तखन बीमारीमे जे समय लगैक । अहाँ चिन्ता नहि करू !

कुहूक नस नसमे संकाक रक्त प्रवाहित होइत छल जे ओ केओ आनक स्थान पर अछि । अनु किछु सोचैक तँ ओकरा होअए जे श्रद्धाक विषयमे सोचि

रहल छथि। रातिमे सूतल सूतल एकटा अग्निशलाका ओकर हृदयमे चुभि जाइत छल ज एहि स्थान पर श्रद्धाकेँ रहबाक चाहैत छलैक। कपड़ा लत्ता बदल' लगैक तँ ओकरा होइक जे ओ श्रद्धाक कपड़ा पहिरि रहल अछि। अनु जखन बड़ गंभीर भ' ओकर आकृति देख' लगैक तँ ओकरा होइत छल जे ओ श्रद्धाक आकृति ताकि रहल अछि। भीतरे भीतरे शंकाक भाव कुहूक अंतरकेँ मारि देलक ओकरा होअय जे ओ श्रद्धाक हिस्सा खा रहल अछि—

अपराधिनी ओ नहि-हमहीं छी—गंधा बीच बीचमे आबि मंत्र फुंकि चलि जाइत छलीह ! आ कुहू घुटैत रहलीह घुटैत रहलीह—

अनु असहाय सन कुहूकेँ निहारैत रहल। ओ बुझि नहि सकैत छल जे हँसैत खेलाइत कुहूकेँ की भ' गेल ? जी जान लगौने ओ कुहूके परिचर्यामे लागल रहल। समस्त दिन उदासीक छाहरिमे बीति गेल। निर्जन, निस्तब्ध, उदासी कत्तहुँ कोनो शब्द नहि, कोनो चंचलता नहि, इजोरिया ओकरा आगु बिखरल छल। सौम्य आ रम्य राति एकटा ममतामयी सृष्टि जकाँ ओकर मोनक अन्तर्दाहकेँ शान्त करबाक लेल, ओकर अन्तर्द्वन्द्वक व्यथाकेँ चैन पहुँचयबाक लेल एकटा माए जकाँ ओ पुचकारि रहल छल। आम आ नीमक गाछक ऊपरसँ चान अनुरागकेँ देखि संवेदनशील छल—आ अनुराग आकाशकेँ निहारैत रहल—एक दिसि सप्तर्षि आ ओकर संगे अरुन्धती असीम नीलवर्ण नभमे दीप्तिमान भेल—किछु हँटि उत्तर दिसि ध्रुवतारा। ध्रुवतारा !—जेना ओ मूक संदेश द' रहल हो—जे अपन स्थान पर स्थिर अछि, अपन आस्थामे अडिग अछि, स्वधर्मक प्रति सतर्क अछि, ओएह महासागरक अनन्त विस्तारमे, रातिक सीमारहित अंधकारमे नाविककेँ आसरा आ आश्वासन द' सकैत अछि। आ अनुक माथ झुकि गेल—ओहि महान् स्रष्टाक सम्मुख नत भ' कुहूक जीवनक बरदान मांग' लागल—जखन केओ ईश्वरक सम्मुख प्रार्थना करैछ तँ ओकरा विश्वास रहैत छैक जे एकटा निराकार अस्तित्व ओकरा लग बैसि प्रार्थना सुनि रहल अछि।

आऽ-ऽह—ओ ऽ ऽ हऽ—कुहूक स्वर कुहरबाक सुनि अनु दौड़ल।

कुहू-कुहू—

कुहू दूनू हाथे छाती पकड़ने हँफसि रहल छलीह। अनु एकदम चबड़ा गेलि। नोकरकेँ डाक्टर ओत' पठा कुहूकेँ सम्हार' लागल। डाक्टर बाजल—

अनुराग बाबू, किछु कहल नहि जा सकैत अछि। कोनो बातक चोट हिनक मोनपर अछि। हिनक हृदय कमजोर अछि आ हिनका कनिको सहायता हमरा नहि भेटि रहल अछि। हम औषध, सुइया सभ द' रहल छी। हँ, सतर्क रहब आवश्यक।

किछु कालक उपरान्त कुहू होशमे आयल। अनुरागक आँखि डबडबायल छल—हम ठीक छी—अस्फुट अधर फड़कल मुदा अनु कुहूकेँ पकड़ैत बाजल—अहाँ हमरासँ किछु नुका रहल छी कुहू। कुहू अपन हृदय हमरा लग खोलि दिय'। हमरापर विश्वास नहि अछि की ?

विश्वास—? कुहूक मानस जेना फेर अचेत भ' गेल। अपन पतिक सेवा, निष्ठा देखि ओकरा कौखन लगैक जे हम एहि देवताक प्रति अन्याय क' रहल छी मुदा सन्देहक विष·········

राति भरि अनुराग कुहूक माथ अपन कोरमे ल' बैसल रहल। ओ सुकुमार कली जेना झरकि गेल, छल। अस्थि मात्र शेष छल। आँखि धँसल, गालक हड्डी निककल—अनुक नयन नोरसँ पाटल रहल—ओकर मानसमे ने तँ कृष्णक वंशीक-स्वर छल ने तँ हेलेनक आँखिक गहिरइ आ न तँ क्लियोपेट्राक आकर्षण। ओकरा सामने कुहू छलीह मात्र दुःखिता। कुहू जकर अधरक हँसी संसारक कोनो मोलपर ओ अनबा लेल तत्पर छल। मुदा, कतेक असहाय—कतेक विवश।

सोचक एहि आकाशमे तँ भोर नहि छल मुदा खिड़कीसँ प्रातः किरण आबि गेल छल। अनुराग आस्तेसँ कुहूक माथ अपन कोरसँ उतारि तकिया पर राखि देलक। हाथ-मुँह धो' ओ पुनः कुहू लग कुर्सीपर बैसि रहल। आ ने जानि कमहरसँ वंशी बाजि उठल—भैया—

अनुराग चौंकि उठल। श्रद्धा ठाढ़ छलीह एकटा थारी हाथमे नेने। एकटा मलीन मुस्की अनुक अधर पर करोट लेलक—की बात छैक श्रद्धा भोरे भोर ?

आ कुहूक तंद्रा टुटि गेल। स्वर सुनतहि ओ आँखि मुनने निश्चेष्ट पड़ल रहलीह।

—भौजीक मोन केहेन छैक भैया ? आइ कोन दिन छीयैक से नहि बुझल अछि ?

कोन ?

आइ रक्षाबंधन छी ने ?

ओह—कोन बहीन हमरा अछि जे मोन रहत—कुहूक बीमारी ओकरा तीव्र बना देने छलैक।

छी: छी: भैया बहीन सोझामे ठाढ़ अछि आ अहाँ जीविते ओकरा मारि रहल छी ?

आ कुहूक सौंसे देहसँ घाम चुब' लागल।

गलती भ' गेल बहीन। असलमे कुहूक बीमारीक कारणे हम दर-दुनिया सभ बिसरि गेल छलहुँ।

हम जनैत छी भैया। ताहि कारणे तँ हम भोरे भोर स्वयं दौड़ल अयलहुँ।

—एतवा कहि श्रद्धा थारीसँ स्नेह भीजल राखी उठा अनुरागक हाथपर बाँन्हि देलक। मधुरक एकटा खंड मुहमे दय अनुक पयर छुबि लेलक।

हम अहाँक कल्याणक लेल की आर्शावाद दी बहीन मुदा, एतबा विश्वास दियाबैत छी जे एहि राखीक मोल हम जनैत छी आ एकटा पैघ भाईक जे उत्तर-दायित्व अछि हम ओकर निर्वाह आइ धरि कयने अयलहुँ अछि आ एहिना करैत रहब। —भावावेशमे अनुरागक गर बझि गेल—बहीन, आशीर्वाद तँ अहाँ हमरा दिय' —अनुक स्वरमे करुणा सेहो करुण छलीह।

भैया,हम अहाँकेँ की आशीर्वाद दी ? हम कोन जोगरक छी।

हँ बहीन, अहाँ एतवे आशीर्वाद दिय' जे हमर कुहू हमरा भेटि जाय—एतबा कहि अनु कान' लागल आ श्रद्धा—? स्त्रीक विकल-करुण मन:स्थितिक वर्णन करबाक सामर्थ्य संसारक कोनो लेखनीमे नहि अछि।

कुहूकेँ आगु जेना समस्त ब्रह्माण्ड नाचि रहल छल। ओकरा हिचकी उठि गेल। अनुराग चौंकि उठल—की भेल कुहू की भेल ? मुदा, कुहूक समस्त तन सिथिल भ' गेल छल। ओकर आँखिक समक्ष राखी नाचि रहल छल—हमरासँ झूठ बाजि गेल---हमरासँ झूठ बाजि गेल—

के झूठ बाजि गेल कुहू—कुहूक माथ पर हाथ फेरैत अनु बाजल—अस्फुट स्वरे कुहू बड़-बड़ाइत रहलीह—गंधा कहैत छलीह अहां श्रद्धासँ स्नेह करैत छी—ओकरासँ बियाह करब—

कुहू—विस्फारित नयनसँ तकैत चिकरि उठल—अनु अहाँ पहिने किएक नहि बजलहुँ। अहाँसँ हम पुछैत रहलहुँ। अहाँ एकटा सर्खाक बातपर विश्वास कयलहुँ मुदा, अपन प्राणसँ नहि पुछलहु ! ई की कयलहुँ कुहु ई की कयलहुँ ?

दुनू हाथसँ कुहूक कान्ह झकझोरैत बाजल अनु !

हमरा बचा लिय' नाथ। हमरा बचा लिय'। हम मर' नहि चाहैत छी—भावावेगमे कुहू फेर बेहोश भ' गेलीह। तुरंत डाक्टर आयल ? नीन्नक सूईया द', सतर्क रहवा लेल कहि ओ चल गेल।

मेघ खंड चाक्काकातसँ घुरिया रहल छल। बुझना जाइत छल कोनो प्रलयं-कर बिहारि मुँह बौने आबि रहल अछि। कारी-कारी मेघक गाछसँ टेढ़ मेढ़ बिजली रहि रहि छिटकि उठैत छल। अनुरागक छाती अदृश्य आशंकासँ बहलि जाय।

कुहूक आँखि खुलल—केहन मोन अछि कुहू ?—अनुरागक स्वर ओकर सम्पूर्ण तनकेँ झनझना देलक।

हम अपराधिनी छी नाथ। अहाँक प्रति मोनमे एतेक संशय ल' घुरैत रहलहुँ। कोनो डाक्टरसँ कहि हमरा बचा लिय'। हम मरब नहि प्राण नाथहम जीब' चाहैत छी। हम जीयब—

—कमजोर स्वर हाहाकार करैत रहल।

कुहू अहाँ स्वस्थ भ' जायब। अवस्य स्वस्थ भ' जायब। शहरक सभसँ नीक डाक्टरक इलाज चलि रहल अछि। हमर स्नेहक डोरि एतेक कमजोर नहि अछि जे अहाँ तोड़ि लेब—

कुहू मौन भ' ओकर चेहरा देखैत रहलीह। आँखिसँ दुई बून्न नोर खसि पड़ल। जीवनक एहि रहस्यकेँ के बुझि सकल जे जीवनक मोह टूटबाक काल ई नोर किएक खसि पड़ैत अछि। कबीरक तत्व आनो अनुत्तरित भटकैत रहल--

—काया प्राण चलत केओ रोई—कुहूक नोर बहि रहल छल। आब ओ जीब' चाहैत छलैक मुदा जीवाक शक्ति शेष भ' गेल। क्षय रोग जकाँ शंका ओकर समस्त तनकेँ खा लेने छल।

आ···ह···आह···ओह···सुनु···सु-नु···अनुरागक हड़बड़ा क' डाक्टर लग नोकर पठौलक···आह छातीमे···छातीमे—अनुराग कुहूकेँ अपनामे समेटि लेलक—कुहू, कुहू अहाँकेँ किछु नहि होयत···मुदा साँसक कोष रिक्त भ' गेलाक बाद ओकरासँ खर्च करबा लेल एकोक्षण नहि भेटैत छैक।

सुनु, सुनु···ओ···ह···

छाती पकड़ने कुहू डबडबायल आँखिसँ अनुराग दिसि तकलक। ओकर अधर किछु कहबा लेल चाहैत छल, मुदा, काँपिकेँ रहि गेल।

---बाजबाक शक्ति शेष भ' गेलैक···



इन्द्रधनुष अखंड

नयनमे उमड़ल मेघकेँ पलकमे समेटने पूर्णा चारू दिसि देखि रहल छलीह। एहि गृहस्थीकेँ सजएबामे पूर्णा आ शलभ, दूनू गोटेक कतेक त्याग, कतेक कष्ट, कतेक सहिष्णुता छल। नन्दन वन सन खिलल, तीन तीन टा अपराजित प्रसून संग बिहुँसैत ई गृहस्थी, कतेक गोटाक दृष्टिमे ईर्ष्या-द्वेषक वस्तु बनल छल। कोनमे राखल पीअर टेबुलफैन पर पूर्णाक दृष्टि गेल—कतेक चीजक कटौतीसँ एहि टेबुलफैनक आविर्भाव एहि घरमे भेल छल—आ ई ड्रेसिंग टेबुल—? एकर सेहन्ता नेनपनेसँ मोनमे छलैक पूर्णाक, मुदा पतिक विद्यार्थी जीवन आ तकर बाद व्यापारक शुरुआत ! एकटा कठोर कल्पना छल पूर्णाक लेल ? मुदा, ब्याहक सातम वर्षगाँठ पर अचक्के ड्रेसिंग टेबुलक उपहार दय शलभ पूर्णाकेँ चकित क' देने छल। ओहि दिन पूर्णाक हाथमे खुशीक ताजमहल आबि गेल।

आब, जखन एहि गृहस्थीमे ऐशोआरामक सभ समानसँ जगमगाहट आबि गेल छल कि भयंकर-भूचाल आबि गेल—धरती फाटल नभ, मुदा, पूर्णा जीविते धरतीमे समायल छलीह—आह ! ई की सँ की भ' गेल ? अकल्पनीय, अविश्वसनीय। पूर्णाक आँखिक आगु मयंकक चेहरा नाचि गेल—घृणाक एकटा तीव्र आवेगसँ ओकर सौंसे देह सिहरि जाइत अछि। मनुखक खोलमे भेड़िया नुकायल। एकटा ज्वार उठल, माहुर खाक, सूति रही। मुदा नहि—पूर्णा आत्मविश्वासी प्राणी सभ दिनसँ छलीह। अपना पर ओकरा "ओवर कन्फीडेन्स' छल। संगे पतिक अटल विश्वास आ असीम प्रेम प्राप्त—ओ प्रतिकार लेतीह आ अवश्य लेतीह ! समस्त नारी-समाजक अपमानक बदला ओ लेतीह। जाहिसँ पुरुषवर्गक पाशविक प्रवृत्तिक दमन होअय। भावावेशमे पूर्णा एम्हरसँ ओम्हर जोर-जोर सँ घुम' लगलीह—नहि नहि हमर गलती कोन अछि जे हम माहुर खा क' मरी ? निरपराध भ' मृत्युक वरण करब तेँ की हम बड़ पैघ साहसी कहायब ? ई हमर सभसँ पैघ कायरता होयत। आ मर्द समाज एहिना नारीकेँ अदना बुझि बलात्कार करैत रहत। पूर्णा दाँत पीसैत जोर जोर सँ घुम' लगलीह—हमरा हाथ सँ बचि गेल छलैक—आह कोनो हथियारो नहि भेटल—हमरा हाथसँ बचि गेल समाजक सभसँ पैघ धनी आ प्रतिष्ठित व्यक्ति—ह'ह' यदि समाजक सभ पुरुष

एहिना सफेद चोला धारण केने रहत तँ कोना कोनो नारीक—पूर्णाक बेर-बेर मुट्ठी खोलैत छलीह, बंद करैत छलीह ?

ओकर देह थरथराय लागल। बिछाओन पर धप्प द' खसि पड़लीह—शलभ काज पर गेल छल, बड़का बेटा विश्वास कालेज, प्रिया आ नीति स्कूल। जरैत दुपहरिया आ जरैत मोन-तन लेने पूर्णा तपि रहल छलीह—कतेक काल धरि ओ पड़ल रहलीह—निश्चेष्ट—लुटायल, लुटायल ! उपवनक तरु मौन भ' सोचक सागरमे डूबल छल जेना यमदूतक दयनीय दूत कोनो सती-साध्वीक अकाल अर्थी ल' जयबाक लेल विवश—कतेक साँझ ओ अपन पतिक सँग एहि उपवनमे बितौने छलीह। एहि उपवनक तृण-तृणमे पत्र-पुष्पमे पूर्णाक साँसक सुरभि लटपटायल छल। सिंगरहारक मौलायल आनन देखि ओकरा मोने अतीतक एकटा क्षण सिहर' लागल।—शलभ टहलिकेँ आयल छल। गुच्छ गुच्छ फूल सिंगरहारक, ओससँ नहायल, चुपचाप आबि सूतल पूर्णाक चेहरा पर छिरिया देलक। नर्म दर्द स्पर्श सँ चिहुँकि उठल छलीह पूर्णा—"फूलक राजकुमारी" शलभ मन्द स्वरे ओकर कान मे गुणगुनायल—पूर्णा खिलखिला उठलीह जेना बहारक देवी प्रेमक अद्भुत छटा सँ आलोकित भ' उठलीह—अहाँ हमरा सभदिन एहिना मानब ने ?—फूलक राजकुमारी, बहारक देवीक अधर संगीतक लहरिसँ कम्पित भ' गेल।

—अहाँकेँ कोनो संदेह ?

—हूँ।

—कथी, बाजू।

—हम सुन्दर नहि छी, गोर नहि छी। दुनियामे एकसँ एक सुन्दर आ गोर—

—चुप चुप फूलक राजकुमारी—पूर्णाक अधर पर आँगुर रखैत शलभ गुनगुनायल—गोर रंग मधुर थीक जकरासँ मानवक मोन तुरंत भरि जाइत अछि। आ श्याम वर्ण नोनगर होइत अछि जाहिसँ जिनगी भरि मोन नहि भरैत अछि।

—चुप चुप गोर रंग वाली कोनो लड़की सुनि लेत तँ सभ दिन लेल अहाँक स्कोप खतम भ' जायत—आ दूनू गोटेक हँसीक जलतरंग वातावरणमे पसरि गेल छल। कतेक काल धरि शलभ ओकर केश—मेघसँ खेलाइत रहल आ प्रेमक गहींर सागरमे डूबैत रहल जाहि ठाम एहन मोती रहय जे संसारक कोनो खजाना मे नहि छल, एहन पारिजात सुमन रहैक जे दुनियाक कोनो उपवनमे नहि।

पूर्णाक आँखि नोरा गेल—की छल की भ' गेलौं ?

फेर, अहाँ कानि रहल छी पूर्णा ?

शलभ आगूमे ठाढ़ छल—उफ।

अहाँकेँ कोना बुझाबी पूर्णा मानवक सभटा मर्यादा जीवनक कोनो एकटा आकस्मिक दुर्घटनासँ भस्म नहि भ' जायत अछि। मानव जा धरि जीवैत अछि ओकर सभ किछु बनल रहैत अछि—

पूर्णा हड़बड़ाय आँखि आँचरसँ पोछि बैसि गेलीह—

अहाँ पढ़ल-लिखल भ' एना क' रहल छी। आइ-कालिह कतेको जगहमे एहि बलात्कारक घटना सुनि रहल छी। स्त्रीकेँ कहियो न्याय नहि भेटल। ओकरा संग पुरुष जबरदस्ती करैत अछि आ परिवारोक सदस्य कलंक स्त्रीए पर लगवैत अछि।

पूर्णाक पीठ पर हाथ दैत रहल शलभ—अपनामे आत्मविश्वास आनू। पूर्णा नारी जातिक दुर्बलतासँ फायदा लेब' वालाकेँ मुँह बंद क' दियौक ! उठू, चाह बनाउ—एना नहि—एना नहि—कनि चेहरा पर मुस्की आनू—आब चाह बनाउ बड़ थाकल छी !

शलभक दिमागमे मयंक नाचि रहल छल—मयंक ओकर अपन दोस्त—नहि दोस्त कहि हम दोस्ती शब्दकेँ कलंकित नहि करब। बिजनेसमे मनमोटाव हेबाक कारणे ओ एतेक घृणित बदला लेलक ? कोना ओकर साहस भेल ! पूर्णा एहनक सती-साध्वी पर······टाका आदमीकेँ नीच बनाय दैत छै ? हमरा एहन कर्ट्स नहि चाही जे अपन बीबी बेचि केँ होय ! पता नहि समाजमे कोन नीच व्यक्तिक चलायल ई प्रथा थीक जे पदक लेल, टाकाक लेल, अपन माय-बहीनक इज्जत नीलाम क' दैत अछि—

चाह—पूर्णा ठाढ़ छलीह कँपैत आंगुरसँ कप पकड़ने।

पूर्णा, कालिह अहाँकेँ कोर्टमे बयान देव' पड़त ?

अयँ हमरा ?—पूर्णाक पयर तर जेना विषधर पड़ि गेल होय।

पूर्णा, कालिह एगारह बजे अहाँकेँ हम कचहरी नेने जायब।

मुदा, हम की बाजब ओहिठाम ?—करुण स्वेदसँ तीतल पूर्णाक देहयष्टि—

जिरह सरकारी ओकिल पूछत तकर जबाब देबैक—

पता नहि केहेन केहेन दिन देखनाइ अछि— एकटा विकल निःश्वास ओकर—आत्म मंथन कर' लागलैक । आह ! स्त्रीकेँ कतेक निरुपाय बना देल गेल अछि । बलात्कार स्त्री पर होइत अछि आतातायी पुरुषक द्वारा आ घृणाक पात्र बनैत अछि नारी । स्त्री जाधरि एहि सभकेँ स्वीकारैत रहत, एहिना घृणाक पात्र बनल रहतीह । नारीकेँ अपन वैयक्तिकता छैक, मर्यादा छैक । ओ स्वतंत्र रूपसँ पाप-पुण्य, नीक-बेजाय, स्वर्ग-नरकक विश्लेषण क' सकैत अछि । मानव-मूल्यक वैज्ञानिकताकेँ परखि सकैत अछि । मुदा, पुरुष वर्ग नारीक ई क्षमताकेँ जानितो नहि जानबाक एहसासमे रहैत अछि । पुरुषक स्वामित्व भाव, उच्छृंखलता एवं स्वच्छन्दता बढ़ले जा रहल अछि । ओ दावा करैत अछि नारीकेँ सिंहासन पर बैसा देने छी, मुदा—

आइ कचहरीमे बड़ भीड़ छल ! सौंसे शहरमे एहि केसक चरचा छल । पूर्णाक दम घुटि रहल छलैक । ई कोन परीक्षाक घड़ी भगवान ओकरा द' देलखिन ? ई नय तँ अग्नि परीक्षा छी नहि कोनो निराकरण, नहि निवृत्ति, तखन ई की भ' रहल अछि—?

अहाँ बाजू, अहाँ संग कोना कोना की भेल ?—

—ओकील साहब जिरह कर' लागलाह—पूर्णा चौंकि उठलीह । कचहरीक कल्पनो हुनका नहि छल । उमड़ल जन-समुद्र देखि ओ घबड़ा गेलीह । पन्द्रह बरीसक बेटाक माय पूर्णा कातरदृष्टिसँ सोन सन केश मंडित जज साहब दिसि तकलनि—की हमरा कह' पड़त ?

—हँ, अदालतक नियम थीक । खुसुर-फुसुरक वातावरण गर्म छल । बलिक बकरा जकाँ निरीह, निस्पृह कतेको काल धरि मूड़ी नुघरौने टाड़ि रहलीह पूर्णा आ जेना एकटा अदम्य आत्मविश्वासक विन्ध्याचल पूर्णाक अन्तर मे आस्ते-आस्ते उग' लागल । अपूर्व आभासँ हुनक चेहरा दीप्त भ' उठल······

—एहि कचहरीमे जज साहब, ओकिल साहब सभ, समस्त जनसागर एहि लेल उमड़ल अछि जे ओ सुनथि हुनका माय, बेटी, बहिनक बलात्कार कोना कोना भेल । ई बखान सुनबा लेल सभ व्यग्र छथि, सभ आतुर छथि । सीता, सावित्रीक एहि देशमे भगवानक बदला आइ इन्सानक कठघरामे स्त्री केँ ठाढ़ होम' पड़ैत छैक । अपना संग भेल अनाचारिक बयान देम' पड़ैत छैक, सबूत देम' पड़ैत छैक । की ई न्याय थीक ? इएह इन्साफ थीक ? कोनो स्त्री यदि एकबेर अपना संग भेल

अत्याचारकेँ स्वयं अपन मुँहसँ स्वीकार क' लैत अछि, तँ की ई पर्याप्त नहि भेल ? जाहि नारीक गर्भसँ अहाँ जन्म लेने छी ओकरेसँ भरल समाजक सामने ई पुछबाक साहस कोना होइत अछि ?

समस्त कचहरीमे श्मशानक स्तब्धता पसरि गेल । कतेको माथ झुकि गेल । कतेक पानि वाला व्यक्ति चुपचाप पाछाँ सँ ससर' लागल ।

मैडम,—ओकील साहबक धीर-गंभीर स्वर गूँजल—जँ पूछल नहि जाय तँ न्याय कोना होयत ?

कोन कानून एकर न्याय द' सकैत अछि ओकील साहब ?—पूर्णाक स्वरमे गरिमा छल—कोन कानून सतीत्वक पवित्रताकेँ घुरा सकैत अछि ? एकटा प्रश्न हम स्वयं भरल अदालतसँ पुछैत छी—की शरीर पर विजय प्राप्त क' लेनाइ सतीत्वपर विजय प्राप्ति अछि ? घाट घाटक पानि पीब' वाला पुरुषक सतीत्व जखन अखंड रहैत अछितँ जबरदस्तीक शिकार स्त्रीए किएक घृणित भ' जायत अछि ?

सभक माथ झुकल अछि ।

—हम जनैत छी, अहाँ सभ लग एकर कोनो उत्तर नहि अछि । इन्द्रधनुष समस्त आकाशमे चमकैत रहैत अछि । मेघमालाक एक खंड आबि ओकर कोनो हिस्सा पर अधिकार क' लैत अछि । एकर अर्थ की इन्द्रधनुष खंड-खंड भ' गेल ? तेजोमय सूर्य पर मेघक क्षणिक अंधकार सँ की सूर्य कलंकित भ' जाइत अछि ? आइ कतेको घरमे बलात्कार भ' रहल अछि । स्त्रीक दुर्भाग्य जे ओकरा पतिता बुझि ओकर परिवारोक लोक ओकरा छोड़ि दैत अछि । की दुनियाक कोनो इन्साफ, कोनो कानून ओकर सतीत्व केँ आपस घुरा सकैत अछि ? कोनो न्याय ओकर कलंक धो सकैत अछि ? एकर निवृत्ति कानूनमे नहि पुरुषक मोनमे अछि । ओ अपनामे ताकि क' देखय जे एकर जड़ि कत' छैक । पुरुषक द्वारा अत्याचार सँ पीड़ित नारी स्वयं पुरुषेक घृणाक पात्र बनि जाइत अछि । कोर्ट स्तब्ध छल—एकटा नम्हर साँस लय, अपन तेजोमय व्यक्तित्व सँ उद्भासित पूर्णा गतिशील छलीह—स्त्रीक एकटा आर रूप पापी पेट लेल देह बेचि रहल अछि । तखन कुलीन घरक स्त्री—ककरो माय, केकरो पत्नी पर ओ अपन पाशविकताक खेल खेलाइत अछि । एक तँ ओकरा संग बलात्कार होइत अछि, ताहि पर ओकर बखान करबा लेल, ओकरा कचहरीमे धकेलल जाइत अछि । पढ़ल-लिखल सभ्य समाज की इएह ठीक ? एहि समाज पर की देशक गौरवमय अतीत टिकल रहत ? आइ अहाँ

सभ्य छी, जज भ' गेलहुँ, अहाँ सभ्य छी ओकील भ' गेलौं। माय-बहीन केँ कठघरा मे ठाढ़ करैत छी। सभ दिनसँ एहि देशमे स्त्रीकेँ शुरूमे पिताक अधीन, पुनः पतिक अधीन आ बादमे पुत्रक अधीन रहय पड़लैक—ताहि ठाम अहाँक की कर्त्तव्य अछि ? अहाँ कत' चुकलहुँ जे अहाँक परिवारक इज्जतक संग ई दुर्व्यवहार भ' रहल अछि ? अहाँ ओकरा सँ सफाइ मांगि रहल छी ?—पूर्णाक चेहरा तमतमायल छल—आदरणीय जज साहब ! हम आइ अदालतमे एतेक बाजि रहल छी कारण हम भाग्यशालिनी छी जे हमरा पंतिक पूर्ण विश्वास आ प्रेम प्राप्त अछि, ताहि कारणे हम एतेक आत्मशक्तिसँ भरल छी—जज साहब अहाँक कानून जँ ईश्वरोसँ पैघ हेवाक दम्भ भरैत अछितँ हम किछु नहि कहब। मुदा, जे कानून, जे न्याय मात्र सबूतक आधार पर साँच वा झूठक फैसला करैत अछि ओ कोन तरहक न्याय, कोन तरहक निर्णय दय सकैत अछि ? हँ, यदि एहि तरहक केसमे बयानक आवश्यकता होय तँ अहां सभ केँ कानूनक विरुद्ध स्वयं आवाज उठेवाक चाही जे भरल अदालतमे स्त्रीसँ किछु नहि पुछवाक चाही। स्त्रीक घर जा क' पूछताछ कयल जाय। की एकरो लेल स्त्रीएक स्वर ऊँच उठबय पड़त ? अहाँक घरमे इज्जतक प्रश्न नहि अछि ? आइ हमरा संग भेल—काल्हि अहाँक, परसू···।

एकटा मर्मभेदी चीत्कार सदनक वातावरणकेँ स्तब्ध क' देने छल। सरकारी ओकील गाउन उतारि कखन बैसि गेल छलाह—से केओ नहि बुझलक। वृद्ध जज साहबक माथ झुकल छल। केओ नहि बुझि सकला हुनक आँखिक सीपीमे कखनसँ टूटा मोती झिलमिलाय रहल छल·········।

□

सपनाक लहास

संसृति :

अँय यै, घर तँ कोहुना बनि गेल। देवाल ठाढ़ क' लेलहुँ मुदा ढलैया कोना होयत—? चिन्तासँ माथ कुड़ियाबैत बाजल ऋत्विक।

संसृतिक अन्तरमे दरदक एकटा लहरि पसरि गेलैक—अपन स्थितिसँ हताश भ' ओ स्वामीक मुँह दिसि तकलनि एकटा गारल वस्त्र जकाँ। आब कतेक रुपयाक काज अछि—स्वादहीन पंक्ति नीरस भावसँ फेकलनि।

रुपैया ? कम सँ कम दू हजार टाका आर चाही।

दू हजार—संसृतिक विस्मित स्वरक खंड ऋत्विकक कानमे पड़ल। ओकर अंग-अंग मे पीड़ाक अवचेतना आबि गेलैक। ओ चुपचाप स्कूल चलि गेल।

आ संसृतिक कानमे, मस्तिष्कमे, हृदय मे "दू हजार टाका" नृत्य क' रहल छल। सभ किछु लुटयबाक बादो दू हजार आर। चारू दिस देबाल ठाढ़ भ' गेल। ऊपर छत्त—घरक आकाश बनयबा लेल दू हजारक काज बाकिए अछि। दू हजार—दू हजार घटि रहल अछि।

ओ पाथरक मुरुत भ' गेलीह। आब ओकरा संग की बाँचल। सभटा गहना बेचि लेलक। शुद्ध सोनक जेवर सभ।—दू हजार—हँ-हँ मनटीका—भारी मनटीका तँ बाँचले अछि। सोनक दाम ततेक बढ़ि गेल अछि जे आब ओकर दाम तीन हजारसँ कम थोड़े हेतैक—एकटा चमक ओकर चेहरा पर चकमकाकेँ शान्त भ' रहल छल। मुदा, मनटीका—नहि, ओहि सँ हमर सिन्दूरदान भेल अछि, सिन्दूर दान ? नहि नहि हम हरगिज ओकरा नहि बेचब। सिन्दूरदानक गहना आ बियौहती नूआ स्त्री लेल बड़ महत्व रखैत अछि। मुद, नहि, सिन्दूरदानी गहना कोन ? जखन माथ भरि सिन्दूर स्वामीक प्रेमक सम्पत्ति अछि, तखन गहनाक की ? मास्टरीक कमाइ सँ बचाय-बचाय आ अपन समटा गहना बेचिओ अपन सपनाक नीड़ बना रहल छलीह—तखन ई ढलैय। मकानक खर्च तँ बड़का यज्ञ थीक। जतबा देने जाउ ओतबे बढ़ल जाइत अछि। एखन तँ विन्नी-निन्नी दूनू नेने छल। खर्च कम छल।

भाइ भोरे ऋतु मानैत नहि छल मुदा सप्पत किरिया दय, क्षितिज सँ नुकाय कोहुना ओ टीका द' देने छलीह बेचबा लेल! स्वामी रहताह तँ जेवर की? स्वामीक सिनेहे नहि तँ जेवरे लय की करब? जे होय संसृतिक मोन खिन्न छल। सिन्दुरदानी टीका बेचवा सँ ओकर दम टुटि रहल छलैक। ओ पाथर बनि बैसल छलीह।

क्षितिज :

दीदी, तों किएक एतेक चुप रहैत छें? तोहर मोन की जे चुप रहनाइ बड़ दीब?—क्षितिज आबि ओकर अस्तित्वकेँ झकझोरि देलक—

नदी-पहाड़, धरती, चान, सुरुज सभ तँ चुप अछि क्षितिज आ कतेक नीक लगैत अछि—खिड़की सँ अबैत आकाशक खंड दिसि निनिमेष तकैत संसृति बजलीह—

हम मानैत छी दीदी चुप रहनाइ सुन्दर अछि। मुदा, जकरा ईश्वर दिमाग देने छथीन, हृदय देने छथीन ओकर रचना एहि लेल नहि भेल अछि जे ओ चुप रहि जाय। तों पहाड़क विशालता समेट लेबाक चेष्टा कर दीदी—नदीक चंचलता लेबाक खाली मानवे टाकेँ तँ भगवान हँसबा बाजबाक स्वीकृति देने छथीन। ईश्वर हृदय आ दिमाग एहि लेल देने छथीन जे हुनक रचनाकेँ अभिव्यक्ति भेटैक......।

आर किछु की क्षिति—? म्लान हँसी हँसैत संसृति बजलीह।

कनिको अप्रतिम नहि होइत बाजल क्षितिज—हँ, हँ, आर किछु, बहुत किछु। हम खाली बाजवाक मूडमे छी। आ सुन, हम जनैत छी जे तोहर हृदय केँ पहाड़क विशालता भेटल छौक, धरतीक सहनशीलता, नदीक चंचलता, चान-ताराक आलोक, मुदा ई तोहर जबरदस्ती छौक जे एहि सभक संग-संग ओकर मौन सेहो तों ओढ़ि लेने छेँ।

क्षिति—संसृति किछु सहज भेलीह—हम छनैत छी क्षिति, संगे इहो जनैत छी जे पहाड़ो अपन घुटन नहि सहि पबैत अछि तँ ज्वालीमुखी बनि फूटि जाइत अछि। अपनेटा नहि चारू दिसि सड़ल वस्तुकेँ क्षार क' दैत अछि। आकाश के जखन अपन दर्द बेबर्दास्त भ' जाइत छैक, मेघक गर्जन बिजलीक तड़पक संगे अपन चीत्कार निःसृत करैत अछि। धरतीयो......

तँ दीदी तों की चाहैत छीही?—बीचेमे बात कटैत क्षितिज बाजल—ठीक छैक, तों मौन रह, चुप रह मुदा, अपन एहि घुटनसँ तों टूटय लगबेँ तँ तोहर चारू दिसि एहि टूटनक प्रक्रिया शुरु भ' जेतौक—आर केओ नहि तँ हम तँ अवश्य —एहि निरीह भाइ पर ममता कर जे जीवनक मात्र पचीसे बसन्त देखने अछि। जे अपन दीदीक आत्मा अछि, छाहरि अछि.........

आ संसृति फुटि पड़लीह। सहस्त्र सहस्त्र धार नोरक ओकर आँखि सँ ओकर अन्तर सँ, ओकर रोम रोम मेँ फुटि गेलैक।

दीदी—एकटा विह्वलता क्षितिकेँ कँपा गेलैक—दीदी हम तँ अहाँक शलभ छी शलभ। तखन अहाँ हमरा अपनासँ दूर बुझैत छी? हमरासँ अपन नोर नुकबैत छी—संसृति दूनू कान्हके झटकारैत बाजल—क्षितिज?

एक क्षण लेल अपन आँखि उठाय संसृति क्षिति दिसि तकलनि मुदा, ओ दृष्टि जेना शून्यमे किछु हँसोथि रहल होय, भटकि रहल होय। ओकर आँखिक आगू अपन तरहत्थी हिलबैत क्षितिज बाजल--दीदी, हम छी जाहि ठाम अहाँक दृष्टि अछि ताहि ठाम हमर चेहरा अछि—शून्य नहि अछि, रिक्तता नहि अछि ओहि ठाम क्षितिज अछि क्षितिज!

हँ हँ क्षितिज। हँ, अहीँ छी। हम बुझैत छी मुदा भटकि जायत छी-आ संसृतिक मोन-पाखी जेना स्नेहक बरखामे भीजि तीति गेल। क्षितिज ओकर छोट भाई शलभक दोस्त। कहियो साँसो नहि बुझलक ओ सहोदर नहि अछि? शलभक उपेक्षा कखनहुँ काल देखि संसृति उदास भ' जाइत छलीह तँ क्षिति ओकर विक्षिप्तताकेँ चैन दैत छल—दीदी कतेक प्यार लेबही तों, सहि नहि पयबे, झेलि नहि पयबे। क्षितिज बजबे टा नहि कयलक ओकरा पूरो कयलक? अहाँ—तों संबोधनक मध्य क्षितिक स्नेह पाबि संसृति उमगैत रहलीह आ शलभ कौतुकसँ भरल तमाशा देखैत छल। दुःख वा उदासीक कनिको रेख संसृतिक चेहरा पर आबैक कि क्षितिज बाजि उठय—दीदी की भ' गेलौक। हमरा अछैत हमर दीदी अपन चेहरा पर कोन चेहरा फिट क' लैत अछि?

अरे पागल, अहाँ नहि बुझैत छी। अहाँक रहैत हमरा दुःख! अहाँ सन भाइ जे बहीन केँ भेटत ओकरा लग उदासीयो अबैत डेरायत।

—दूनू भाइ बहीनमे गुपचुप की भ' रहल छैक—ऋतुक स्वर सुनिते दूनू चौंकि उठल—

पाहुन, दीदी उदास रहैत अछितँ हमरा मोन नहि लगैत अछि।

—अहाँक अछैत अहाँक दीदी उदास ?

—ग्रेट ट्रैजेडी,—एक्टिंग करैत बाजल क्षितिज—आ ओकर मुखमुद्रा देखि संसृति आ ऋत्विक दूनू हँसि पड़ल।

देखू अहाँ कतेक काल सँ अपस्याँत भेलहुँ मुदा अहाँक दीदी नहि हँसलीह। हम अयलौं आ अहाँक दीदी हँसि देलीह। ठीक कहैत छी ! ई कलियुग छी ने ? पहिने पति महोदय तखन बेचारा भाइ—मुदा फेरो कहब हमरा खाली डेकचीमे उधियावैत पानिक हँसी नहि चाही। हमरा चाही दीदीक उन्मुक्त हँसी, आत्माक हँसी·········

सुनू क्षिति—अहाँक दीदीक मोनमे घर बनयबाक हेतु सोचक धुन लागि गेल अछि—ऋत्विक कनी गंगीर होइत बाजल। संसी, लिय' दू हजार टाका राखू। दू तीन दिनमे सभटा समानक जोगाड़ क' ढलैया शुरू क' देबैक। घटी-बढ़ी भगवान पूरा करथीन।

बात बदलैत क्षितिज बाजल—कोसीमे बड़ जोर बाढ़ि आबि गेल अछि पाहुन की ? अपन देह हाथ मोचाड़ैत बाजल क्षितिज !

तावत संसृति लुँगी आनि ऋत्विकके थमा देलक।

ऋत्विक

ऋत्विकक माथ पर किछु रेखा गहिरागेल। क्षितिजक बात सुनि—बढ़ि—हूँह घर की बनायब ? माटि पर जोड़ि जोड़ि कोहुना घर बनाय रहल छी, मुदा, एहि बेरक बाढ़ि पता नहि कोन ताण्डव करत ? जान-माल सभ दहा रहल अछि। अहाँक दीदी मकान लेल सोचि रहल छथि आ भगवानक लीला ? लूँगी बान्हि धोती चौपत' लगलाह। सभक आकृति गंभीर भ' गेल। बाढ़िक विभीषिका एखन धरि संसृति खिस्से कथा आदिमे पढ़ने छलीह जे बाढ़ि अजगर अछि, बाढ़ि नागिन छी, बाढ़ि डाइन छी, मुदा एहि बेर—ऋत्विक चुपचाप संसृतिक चेहरा पढ़ि रहल छल। ओकर आगू अतीतक सड़ल लहास आबि पड़ि रहल—ओकर मोन काँपि गेलैक। ओह ई अतीतक सड़ल लहास कि एक हमरा आगू पसरि जाइत अछि। एहि सड़ल लहासके वरदाश्त करबाक शक्ति आब नहि बाँचल। ······की सपना हम देखने छलौं ? की सपना हमर बाबूजी देखने छलाह ? की सपना हमर संसृति

देतीह ? मुदा, समय के हम बेरबाद कयलहुँ, समय हमरा बेरबाद कयलक। बड़का-बड़का महत्वाकांक्षा लय हम कहुना-कहुना बी० ए०क डिग्री लेलहुँ। पढ़बामे मोन नहि लगैत छल आ चोरीक भरोसे कहियो ब्रेक नहि लागल मुदा जखन जिनगीक गाड़ी मे ब्रेक लागल तँ हम नय तँ जीविते छलहुँ आ नय तँ मुद्रा। आ तखन जे ऊँच आकाशक सपना देखने रही ओ कि ई मामूली मास्टर बनि चैन पाओत ? ताहि ठाम हमर जीवनमे अयलीह संसृति। समृद्ध घरक पढ़ल-लिखल असगर बेटी। केहेन अपमानजनक स्थिति छल हमर। नहि, अपमानजनक स्थिति कहियो हमरा संसृतिक कारण नहि रहल। ओ संसृति नहि हमर संसृति बनि अयलीह। हारि-थाकि जखन हम मास्टर बनलहुँ तँ आत्मग्लानिक शिकार हम छलहुँ। मुदा, वाह रे संसृति,—अहाँकेँ कथीक लाज होइत अछि ? कोनो काज छोट वा पैघ नहि होइत अछि। काज करबा मे लाज की ? विदेशमे सुनैत छी जे एहि ठामक पैघ सँ पैघ आफीसरक बेटा प्लेट धोइत अछि, जूता पालिश करैत अछि। ओएह आदमी अपन देश मे कतेक मिथ्या अहंकारकेँ अपना मोनमे पोसने अछि। आत्मग्लानि तखन हेवाक चाही जखन माय बापक रोटी तोड़ैत अछि। आइ अहाँ मास्टर भेलहुँ, हमर खुशीक सीमा नहि। आ तखन पहिल बेर आत्मगौरव हमरा मोनमे आयल छल। मुदा, संसृतिक मोनमे एकटा सपना भयंकर रूप सँ ओकरा ग्रसित करैत छल जे ओकर एकटा अपन घर होय। ओहि सपनाक पूर्ण करवा लेल पाइ-पाइ जोड़ैत छलीह, फाटल-चीटल नूआकेँ बेर-बेर सीबैत छलीह। गरदनि, नाक, कान सभ सून कय ओ टाका जमा करैत छलीह। कतेक बेर ऋत्विक रोकलक, ई की करैत छी संसृति। गहना तँ स्त्रीक संपत्ति थीक, सुहाग थीक। एकटा भरल हास ओकर समस्त तन सँ निःसृत होइत छल—नहि यै, अहाँ गलत बुझैत छी। स्त्रीक सुहाग ओकर दूनू हाथ मे भरल, चूड़ी आ सीथमे सिन्दूर होइछ। आ सम्पत्ति ओकर पतिक प्रेम होइत अछि; ओकर स्वामीक प्रेम जकरा ओ अनमोल रतन जकाँ हृदयक कोषमे बंद कयने रहैछ।

आ ऋत्विकक गर पर अतीतक सड़ल लहासक हाथ कसल जाइत छल—ओ चौंकि गेल—दीनू आ सोनी दूनू। ऋत्विकक बड़ पैघ दोस्त। तीनू स्कूलसँ कालेज धरि संगे पढ़लक। दीनू एकटा आफिसमे क्लर्क भ' गेल आ सोनी एकटा किराना दोकान खोलि बैसि रहल। आ ऋत्विक ? ओकर महत्वाकांक्षा, ओकर सपनाक कतौ अंत नहि छल। ओ डिप्टी कलक्टरसँ नीचाक सपने नहि देखैत छल। कर्म किछु नहि आ उड़ान आकाशक·········

……दीनू कहैत छल--ऋतु, तो अपनाकेँ बेरबाद क' रहल छह ! ई कर्म करबाक जमाना अछि। ओ जमाना चलि गेल जखन एक आदमी कमाइत छल आ दस आदमी खाइत छल बैसिकेँ तों तीनू दोस्तमे तेज छह। एतेक धरि जे बुद्धिमानो। एहि बुद्धिक तों उपयोग नहि क' रहल छह, जीवनक एतेक कीमती वर्ष नष्ट क' रहल छह।—ऋतुक अधर पर ओकर सभक प्रति एकटा उपहासक मुस्की रहैत छल-हुँह, करता किरानीगिरी ! हमर महात्वाकांक्षा तों की बुझबहक ? मुदा, सोनी मुँहफट छल बेसी—तोरा तँ केओ पुछैत छह नहि। अपन बोझो स्वयं उठयवा लेल तों तैयार नहि छह तँ दोसर केओ तोहर बोझ किएक उठयतह ? तों खाली काल्पनिक संसारेमे रहैत छह ?

—हम समयक प्रतीक्षा क' रहल छी—निश्चित स्वर छल ऋतुक

समयक प्रतीक्षा ? बेस, बाजु तँ अहाँक जीवनक लक्ष्य की थीक ?

समय अयला पर कहब।

—वाह-वाह, बड़ नीक-जखन अहाँ इहो नहि जनैत छी जे अहाँ की क' सकैत छी—तँ एहि सँ बेसी दुर्भाग्य की भ' सकैत अछि ? हम तँ बुझैत छी अहाँ बेकारीएकेँ अपन जीविका बना नेने छी। दोस्त, माय-वाप कतेक दिन केकर गुजर चलाय सकैत अछि। तों कोनो नोकरीमे लागि जाह।

ऋतुक कानमे ई सभ गप्प कोनो बरकैत लोहा सन लगैत छलैक।

—इह, ई साधारण आदमी सभ हमरा की बुझत ?—

एहन नहि छल जे ऋतुक मोनमे कोनो छल-प्रपंच होय। ओ बड़ संवेदनशील आ भावुक प्रकृतिक युवक छल। अन्त मे, समय आ परिस्थितिक हाथे विवश भ' अपन गाममे स्कूलमे मास्टर भ' गेल ! मुदा, ई मास्टरी, ई संसृति दूनू एके संग ओकर जीवनमे अयलैक 'संसृति ओकरा बनब' लगलीह। आत्महीनता, जे ऋतुकेँ तोड़ि देने छल, तकरा संसृति आत्म गौरव सँ भरि देलक। आ फेर ओएह ऋत्विक छल जीवनक प्रति उन्मुक्त मुदा परिवारक प्रति गंभीर--उत्तरदायित्व पूर्ण……

—जलखै क' लिय' संसृतिक स्वर सुनितहि ऋतुक सोझा सँ अतीतक लहास हँटि गेल, मुदा, दुर्गन्ध एखन धरि घेरने छल।

पाहुन, एट इज भ' जाउ आ जलखै करु—चूड़ा भूजल एक फक्का लैत क्षितिज बाजल—हमहु तीन चारि दिनमे जयबा लेल सोचि रहल छी

—एखन कोना तों जयबह कुटुम्ब ? घरक ढलैया होमय दहक, ई बाढ़िक संकट चलि जाय—ऋतु किछु सहज भ' गेल छल।

ढलैया-? नहि यौ नौकरिहारा आदमी एक हफ्ताक बाद छुट्टिए नहि अछि। दीदीक एतेक आग्रहकेँ हम नहि टारि सकलहुँ तँ—

× × ×

—मालकिनी बाढि तँ एहि बेर ककरो बाँच' नहि देत—सुगिया अपस्यांत ठाड़ छल।

—की भेलैक गय ?—ऋतु पुछलक

—मालिक, पानि तँ हमरा सभक घरे दिसि आबि रहल अछि।

पता नहि साँझ धरि की होयत ?

—की करबहीक—ककरो हाथमे छैक ? सभटा ऊपरवालक हाथमे अछि। ओकरे नाम ले।—ऋतु उदासीन बाजल

—दीदी, ई तँ ओएह सुगिया थीक ने—अर्थपूर्ण स्वरमे क्षिति बाजल।

—हँ, हँ, ओएह सुगिया क्षिति। एकरा लोक चरित्रहीन, कुलटा की की नहि कहलक। मुदा, हम सभ एकर असली जिनगी जनैत छी क्षिति। एहि समाजमे युवती विधवाक जीयैक कोनो हक नहि अछि।

नहि दीदी—पैघ लोक हो वा कि छोट लोक—यदि ककरो चरित्रक विषय मे केओ बजैत अछि तँ निश्यय ओ बाजयबाला स्वयं चरित्र हीन अछि। मानवता तँ इएह थीक जे चरित्रहीनो अछि ओकरा चरित्रवान कहि ओकर नैतिक स्तरकेँ आर उठेबाक प्रयास कर'क चाही जाहिसँ कहियो ओकरा जीवनमे ऊपर उठबाक प्रकाश भेटि जाय। दीदी—संबंध बिगाड़नाइ तँ एक सेकेन्डक काज थीक मुदा, बिगड़ल संबंधकेँ बनयबामे कतेक जीवनक आहुति भ' जाइत अछि—संबंध नहि बनैत अछि।

—हँ क्षिति, नहि खसनाय कोनो बहादुरी नहि थीक मुदा, खसि केँ उठि गेनाय देवत्व थीक,

ऋतु एहि बीच चुप छल अपन सोचमे डूबल। ओकर मोनमे बाढ़िका भयंकर उद्वेग छल। अपन घर छल ढलैया लेल पड़ल, जकर बनयबामे अपन

जीवनक समस्त कमाई दाँव पर लगा देलक ठीक सुगियाक घरकें बगलमे यदि बाढ़ि ओहि ठाम पहुँचि जायत तखन……तखन—

—ई प्रश्न ओकर मानसकें थका देलक। एकर आगाँ ओकरा किछु नहि फुरैत छल।

चलु क्षिति कनि घुमि आबी, देखि आबी।—ऋतु बाजल।

आकाशमे कारी कारी मेघ अनगिन विषधर जकाँ फुफकार मारि रहल छल। प्रलयंकर पुरबाक बिहारि चलि रहल छल। चारु दिसि पानि-पानि-पानिक लहरि आकाशक मेघक फूत्कार सँ—धरती काँपि रहल छल। पानिसँ गरदनि भरि डूबल. असहाय छोट छोट गाछ, लहरिक हेल मे कतेको छप्पर, कतेको खाट की नहि बहि रहल छल। चारु कात पानि बीचमे डूबल गामक गाम। छत पर बैसल मनुखक हेंज क्षण क्षण लग अबैत मृत्युक आतंकसँ आतंकित—नाह-नाह चिकरि रहल छल। मुदा, ओतेक नाह कत'? एक एकटा नाह पर पचास-पचास आदमी कोसी मैयाक गुहारि करैत पार उतरि रहल छल। प्रकृतिक प्रकोपक समक्ष बल बुद्धि रहितो आदमी कतेक असहाय होइत अछि। चारु कात हाहाकार, कलरव, आर्त्तनाद—क्षिति काँपि गेल—पाहुन, दीदी कहियो बाढ़ि देखने अछि?

मुदा, ऋतुक ध्यानमे दीदी नहि दीदीक सपना छल। ई लहरि, ई डाइनि, यदि ओकर घरक चारु कात दूइयो घंटा रहि जायत तँ बालू माटि पर जोड़ल देवाल कतेक काल, कतेक काल—? आ ऋतु फक्क भ' जाइत छल—हे कोसी मैया हमरा पर दया करहक। आइ धरि लोक तोरा छागर पाठी चढ़बैत छल तँ हम हँसैत छलहुँ। आइ हम अपन संसृति लेल तोरा सँ मिनती करैत छी तों आगु नहि बढ़'—आगु नहि बढ़'? ओ चुप छल, मुदा, ओकर रोम रोम प्रार्थी छल।

छप-छप-छपाक……बड़ जोर स्वर उठलैक। एकटा घर भरड़ाक खसि पड़ल। ओकर छप्पर पर बैसल कतेको लोक पानी पर कटकी जकाँ बहय लागल—

क्षिति, देखु—बड़ी काल बाद ऋतुक स्वर फूटल—कतेक असहाय छी अपना सभ। सभ किछु देखि रहल छी, क' किछु नहि पबैत छी। स्कायलैब—स्कायलैब हल्ला अछि—मुदा की ई स्यायलैब नहि थीक?

सर्वांग सिहरैत क्षिति बिनु किछु बजने ऋतुक हाथ पकड़ि घर दिसि मुड़ि गेल। ऋतु अस्पष्ट स्वरे किछु बुदबुदाइत छल आ क्षिति एतेक वीभत्स हृदय देखि अपन चेतना हेरा बैसल। दूनूक मस्तिष्कमे बाढ़िक भयंकरता ताण्डव क' रहल

छल। क्षिति अपन प्रगल्भता बिसरि गेल। बिना युद्धोक एहन नरसंहार भ' सकैत अछि—ओ कल्पना नहि क' सकैत अछि।

भरि दिन बीति गेल। पतो नहि लागल। एको क्षण लेल सुरज नहि उगल। घनघोर बरसा आ मेघक फूत्कार। चौकी पर करोट लैत क्षिति आ ऋतु। बाढ़िक प्रलयंकरता दूनू कें झकझोरि देने छल—हम कहैत छलहुँ संसृति कें छत्ता पर घर नहि बनाउ, सुरक्षित नहि अछि। ओ प्रकृति प्रेमिका बुझि नहि सकलीह। इहो सत्य अछि जे ओहिठाम बाढ़िक कनिको आशंका नहि छल। मुदा, एहि बेरक बाढ़ि? प्रलय की नहि थीक? आदमी जतेक भ्रष्ट भेल जाइत अछि प्रलय आओत—महाप्रलय आओत! हमहुँ कोन सोचमे छी। कीड़ा-मकोड़ा जकाँ मनुख भरि रहल अछि, तखन हम अपन घरक सोचमे छी। की एतेक जानसँ बेसी महत्वपूर्ण अछि ई? मुदा, ई घर कहाँ छी ई तँ संसृतिक सपना अछि—आ ऋतुक आँखिक आगा सिन्दूरदानी मनटीका आबि जाय जकरा बेचि दूइ हजार टाका आइ अनने छल।

—चलू, दूनू गोटे पहिने खा लिय'—दूनू नेनाकें सुताय संसृति बजलीह।

—नहि भूख नहि अछि—अनमन ऋतु बाजल।

—दीदी, हमहूँ नहि खायब। साहस नहि रहल। कौर भीतर धँसबे नहि करत—पेटकुनिया द' क्षिति पड़ल रहल।

भोजन बनले रहि गेल। तीनू गोटे चुपचाप पड़ल रहल। ककरो आँखिमे निन्न नहि। संसृति कें ध्यानो नहि छल जे ओकर घरोकें कोनो हानि पहुँचि सकैत अछि। क्षितिकें भूखल देखि ओकरा मोनमे सोच होबय लगलैक। शहरक लड़का। ओ बाढ़ि की जान' गेलैक? बेकार ई क्षितिकें बाढ़ि देखयबा लेल ल' गेलाह। फेर ओ स्वयं मुस्कुराय देलीह—हम-हम तँ गामोमे रहि बाढ़ि नहि देखने छी। तीन बरख गाममे भ' गेल—नहि तँ एहन बाढ़ि कहियो आयल आ नहि तँ एहि गाममे बाढ़ि कहियो आयल छल।

एहिठामसँ आध कोस उत्तर, प्रकृतिक कोरामे संसृति अपन घर बनबैत छलीह—नहि काल्हि हम जाक' अपन सपना अवश्य देखब जे साकार भ' रहल अछि। बाढ़िक दृश्य सेहो देखब। जहिना रौद प्रखर होयतैं, तुरत ढलैयाँ क' देबैक। आ ओ बाढ़िक कल्पना, घरक सपनामे डुबि गेलीह।—

सोचक सागरमे राति अधियाय गेल। अचक्के गगनमे बड़ जोरसँ बिजली चमकल आ घोर गर्जन संगे कत्तौ नजदीकमे खसि पड़ल। संसृति काँपि नेनाकेँ अपन छातीसँ सटा लेलक, ऋत्विकक सर्वांग एक बेर कांपि शान्त भ' गेल आ क्षिति चेहायकेँ बैसि गेल—कारी-कारी भुतनी सन अन्हार गुज-गुज राति, हवा पानिक बौछार—कोनमे लालटेनक छाती सेहो काँपि रहल छल। बिजली सत्ते लगेमे खसल छल।

मालिक-मालिक, केवाड़ खोलू।

—कतेको स्वर बाहरसँ केबाड़ पीटि रहल छल।

क्षिति धड़फड़ाकेँ केवाड़ खोलि देलक। पाँच-छह गोटे भीतर पैसि गेल। संसृति अकचका गेलीह। सुगिया सभसँ आगाँ—

मलकिनी-मलकिनी, बाढ़ि, ई उनियाही बाढ़ि हमरो सभक टोलमे घुसि गेल। साँझे राति गाममे पैसल आ—आ··· ।

—ककरो जानमालक क्षति तँ नहि भेल—संसृति धड़फड़ाक' गेलीह।

—नहि मालकिनी, लोक तँ चेतल छल पहिनहिसँ मुदा-मुदा······ ।

—मुदा की ? बाज ने जल्दी··· ।

क्षिति आस्तेसँ संसृतिक कान्ह पर हाथ राखि देलक जेना ओ हाथ नहि एक दोसराकेँ सांत्वना देबाक ट्रांसमीटर हो।

—मलकिनी ! एखन कनिक काल पहिने अहाँक घरक सभटा देवाल अरड़ा क' पानिमे खसि पड़ल—जेना जीवन भरिक कमाइ पर डकैती भ' गेल। मुदा ऋतु ओहिना संज्ञाहीन पड़ल रहल जेना ओकरा पूर्वज्ञान भ' गेल छलैक।

□

हारल जुआरी

अभिसारिका रजनी चेहाय उठल। परसौती बेदना अपन ओछाओन पर एम्हर ओम्हर करोट बदलैत छलीह। दस दिनक बच्चा ओकर पार्श्वमे शान्त सूतल छल। ओना तँ बेदनाकेँ नीन रातिमे देरसँ अबैत अछि मुदा, एक बेर जखन सुति जाइत छलीह तँ बिना भिनसरकेँ ओकर नीब कहियो ओकरासँ रुसैत नहि छल।

मुदा, आइ बेदना रातिक ओहि प्रहरमे जागि गेलीह जाहि बेरमे ओ एहिसँ पहिने कहियो जागल नहि छलीह। जेना केओ अदृश्य शक्ति ओकरा उठाय देलक। पता नहि विधनाक कोन होनी'क हाथ बेदनाकेँ उठाय देलक। बेदना'क नीन टुटि गेलैक। ओ कतेक देर धरि विचारक आकाशमे टकटकी लगौने किछु खोजैत रहलीह। पुनः सुतबाक उपक्रम करय लेल ओ जहिना करोट घुरलीह कि चेहाय उठलीह। ओछाओन खाली छल। ओछाओनपर आशीष, बेदनाक पति नहि छल। ओ चेहायल दोसर करोट घुरलीह। दोसर चौकी सेहो खाली छल, जाहिपर सुतैत छलीह ओकर अभ्यतम सँगिनी दीप्ति जे कि बेदनाकेँ दुःखक समयमे सभ बेर आबि संग दैत छलीह।

आकाशसँ जेना ढेरक-ढेर विचार ओकर मोनमे खसि पड़ल। ओ चौंकिकेँ बैसि रहलीह। अंगनाक केबाड़ीक दोगसँ कनि-कनि इजोरिया अबैत छल। ओ दुख बल साधि उठि केबाड़ लग गेलीह। ओम्हरसँ एकदम महीन आवाज अबैत छल—

—छोड़ि दिय' हमरा। गोड़ लगैत छी।

—से किएक।

—अहाँ नहि बुझैत छी बेदना जागि जायत।

—दूर बताहि ई पहर बेदनाक जगबाक नहि छैक। डरैत छी किएक ?

'ओह······छीः······' जेना एकटा हलुक चिकरब सुनाय पड़ल। बेदनाक कानमे जेना केओ गरम शीशा राखि देने होय।

'हम अहाँसँ नुकेने रही । हमरा साहस नहि पड़ैत छल जे कही । कतेक दिनसँ एहि आगिमे जरि रहल छी ।'

वेदना के लगलैक जेना केओ दीप्तिक मुँहपर कारी-कारी कोयलाक धारी बनाय रहल अछि । जेना दीप्तिक ठोरमे ढेरक-ढेर खून लागि गेल हो, आ ओएह खून पसरिकेँ वेदनाक समस्त देहपर लागि गेल हो । वेदनाक दम घुटय लगलैक, ओकर दिमाग सुन्न भ' गेलैक । ओ डगमगाइत पयरसँ घुरय लगलीह ओछाओन दिसि कि धड़ामसँ खसि पड़लीह ।

जखन वेदनाकेँ होश आयल तँ डाक्टर ओकरा आला लगाक' देखैत छलैक । पयर लग दीप्ति छल आ माथ लग आशीष ।

—किछु नहि भेल । कपार कनिटा फूटि गेल । साँझ तक ठीक भ' जेतीह । दस दिनक बच्चा अछि । एखन बड़ कमजोर छथि । खास ध्यानक जरूरत अछि । डाक्टर कहि चलि गेलैक ।

वेदना एक बेर खूनसँ भीजल तकियाकेँ देखलीह । दीप्ति काजसँ बाहर चलि गेलीह । आशीष वेदना लग बैसि ओकर माथपर हाथ फेरैत स्नेहसँ बाजल— 'वेदना, एना किएक भेल ?'

वेदनाकेँ लागल जेना ओकरा माथपर आशीषक हाथ नहि मुदा, लाल-लाल धिपायल लोह राखल अछि । ओ हाथ झटकि दरदसँ कुहरय लगलीह ।

'बड़ दरद अछि वेद ?'—आशीष आस्ते-आस्ते ओकर मौंसे देहकेँ दबबै लागल । आ वेदनाकेँ लागल जेना विषधर नाग ओकर सौंसे देहपर घूमि डँसबाक उपक्रममे अछि । घृणासँ ओकर देह जरकैत छल । वेदना मुँहसँ किछु नहि कहि एक विवश आँखिसँ आशीषकेँ देखि आँखि मुनि लेलीह ।

ओकरा पहिलुक बात जेना हृदयपर हथौड़ा मारय लगलैक । स्मृतिक झरोखासँ नाना प्रकारक किरण वेदनाक मस्तिष्कमे आबय लगलैक ।

ओ गर्भवती छलीह, आशीषक साथ शहरमे एकसरे रहैत छलीह । पहिलुक संतान । आशीष ओहि शहरमे एकटा कम्पनीकक मैनेजर छल । परसौतक समयमे आशीषकेँ कहलनि घरमे तँ केओ नहि अछि । अहाँ भरि दिन आफिसे रहैत छी । नोकर चाकर पर घर छोड़नाय ठीक नहि तँ हम चाहैत छी जे अपन संगी दीप्ति के बजाय ली ।

आशीषकेँ एहिमे कोनो आपत्ति नहि छलनि । ओ बजलाह, 'अहाँ घरक रानी छी, स्वामिनी छी, जेना जे उत्तम बुझी से करू ।'

वेदना तुरंत दीप्तिकेँ खबर दय बजाय लेलीह । दीप्ति अबितहिं घरक सभटा काम-काजकेँ नीक जकाँ बुझि लेलीह । कोना-कोना घरक की व्यवस्था अछि से सभटा बुझि लेलीह । तखन वेदना निश्चित भ' बैसि रहलीह आ दीप्ति घरक स्वामिनी जकाँ सभटा काज अपनापर लय लेलीह ।

कौखन वेदनाक मोनमे होय—ओह एतेक दिन हम एहन सुगमतासँ घरक राज करैत रही कतहुँ कोनो त्रुटि नहि रहय । कोनो चीज कहियो आशीषकेँ मांगय नहि पड़ल, सभटा समयपर प्रस्तुत । आब कोना-कोना की करैत अछि दीप्ति से नहि जानि । मुदा जखन दीप्ति अपन गोरनार हाथसँ नारंगीक खोंइचा फेंकि उजर-उजर छिपलीमे राखैत छलीह बेदानाक दाना सभ निकालि-निकालि सजबैत छलीह तँ वेदनाकेँ प्रतीत होय जे हमहीं दीप्तिमे चलि गेलहुँ । ओछाओनपर पड़ल-पढ़ल हुकुम फरमाइश करैत छलीह—

—दीप्ति कनिटा तकियाक खोल बदलि दिय' ।......

—देखू तँ हिनकर कमीजक बटनो कतहुँ टूटल अछि ।

—माली के कहि दियौक जे गुलाबक डारि सभ छाँटि दय ।

—देखू कैक्टस गमलामे नीक जकाँ लागि गेल की नहि ?'

दीप्ति उत्साहपूर्वक ओकर सभटा काज करैत छलीह । घर-गृहस्थीक कर्म-कांडक भीतर जे साधना अछि से तँ बुझैत नहि छलीह । ओहि चित्ताक सूत्र तँ वेदनाक हाथेँ छल । तँ ओ उछलि-उछलि काज करैत छलीह । एहिमे यदि कोनो त्रुटि रहि जाय तकर ओकरा कोनों परवाह नहि छल । कखनो वेदना आशीषकेँ दीप्तिक त्रुटिक विषयमे बजथिन तँ आशीष बातकेँ हँसीमे उड़ाय दैत छल । दीप्तिक चंचल चितवनसँ आशीषकेँ आफिसमे मोन नहि लगैक । ओ बड़ सबेरे घुरिकेँ आफिससँ चलि आबथि ।

आइ वेदनाक प्रसव भेनाय करीब दू दिन भेल । ओना तँ दीप्ति घरक कामनि होशियार नहि छलीह । तइओ ओ अपनाकेँ एहि घरमे राखि एक बड़का अभावक पूर्ति कयने छलीह । ई अभाव की छल से ठीक-ठीक नहि बुझि सकैत छी

मुदा, आशीष जखन घर अबैत छल तँ ओ खुशीक झूलापर झूलैत रहैत छल। छुट्टीक आनन्द खाली घरक सेवामे नहि मुदा एकटा एकर बड़ रसमय रूप अछि। वस्तुतः दीप्ति एहि घरमे आबि दिन रातिकेँ चंचल बनाय देने छलीह। दीप्ती अपना व्यवहारसँ आशीषकेँ प्रभावित देखि आर चहकैत छलीह। हमरोसँ ककरो खुशी भेटतैक एही अनुभूतिसँ ओहो हरदम नचैत रहैत छलीह।

कहियो-कहियो जखन समयपर आशीषकेँ खेनाय नहि भेटनि तँ वेदनाक मोनमे बड़ दुख होय। ताहिपर आशीष बजैत छल—अहाँ छोट-छोट बातक किएक चिन्ता करैत छी। कनिटा अभ्यासमे हेर-फेर भेलासँ किछु नहि होइतछैक।

वेदना क्षुब्ध भ' चुप भ' जाइत छलीह।

कोनो दिन दुरहरियामे काजक समयमे जा क' दीप्ति आशीषकेँ तंग करय लागथि—अहाँ एना किएक करैत छी ? एखन काज छोड़ू। गप्प करू नहि तँ लियऽ ताश खेलाउ दुनू गोटे।

आखिर लाचार भ' क' आशीष काज छोड़ि ताश खेलाय लगैत छलाह। ई बात वेदनाकेँ नहि पसिन्न। ओना तँ दीप्ति ओकरासँ दू बरखक छोट छल मुदा, ओ हुनका समक्ष बच्चे छल।

तइओ वेदनाकेँ ई नहि पसिन्न जे कतबो ओ बच्चा रहय मुदा आफिस तँ बच्चाक खेलयबाक जगह नहि छी। तँ ओ दीप्तिकेँ बजाय डाँटैत छलीह जे काजक समयमे हम आइ तक हुनका तंग नहि केने छी। अहाँ किएक जाइत छी हुनका तंग करबा लेल ?

वेदनाक क्रुद्ध बोली सुनि आशीष ओहि घरमे आबि जाइत छलाह। ओ चुपचाप आँखिसँ इशारा कयकेँ दीप्तिकेँ बजाय लेथीन। दीप्ति गम्भीर मुँह बनौने घरसँ निकलि जाइत छलीह एवं बाहर आबि चहकै लगैत चलीह। कखनो वेदना आशीषकेँ बजायकेँ कहैत छलीह—'अहाँ समय-असमय जे दीप्तिक सभ हठ बर्दाश्त करैत छी से हमरा नहि पसिन्न।'

ताहिपर आशीष बजैत छल— 'किएक, अहाँकेँ शंका कथीक होइछ ?

—हमरा कथीक शंका; होयत ? हम काजक समयमे जंजाल नहि पसिन्न करैत छी।

—की हेतैक आब तँ महीना १५ दिनमे चलिये जायत।

एम्हर जहाँ कोनो आफिसक कागज आदि लयकँ बैसैत छलाह आशीष कि चट्टे वर विज्ञानक किताब ल' पहुँचि जाथिन—'हमरा तापकेँ परिवहन रीति बता दिय'।

आशीष टालि नहि सकथिन। ओ बता दैत छलथिन।

वेदना पुनः आशीषकेँ बजायकेँ कहथिन—'हमरा नहि ई सभ पसिन्न अछि। अहाँ अपना काजसँ काज राखू।'

—देखू, अहाँकेँ हमरापर विश्वास नहि अछि ? एना जे अहाँ हरदम एके बात धरैत रहब तँ कहियो एना ठीक भ' जायत तँ कानय बैसब।

वेदना चुप रहलीह। मौन विवश बैसल कनैत रहलीह।

वेदना परसौत छलीह। ओ एखन एकदम पराधीन छलीह। आशीषमे कहियो-कहियो एकटा विचित्र परिवर्त्तन भेल जाइत छलैक। जखन कोनो समय वेदना हुनक आज्ञाक विरूद्ध शान्त स्वरे बजैत छलीह तँ आशीष जबाब सभक सीढ़ी चिकरिकेँ देबय लागलथि। वेदना चुपचाप रहय लगलीह।

एक दिन साँझे ओ देखलनि जे टेबिल फ्रेममे जड़ल आशीषक फोटोकेँ दीप्ति अपन करेजसँ सटौने अछि आ खिड़कीक दोगसँ आशीष चुपचाप देखि-देखि बिहुँसैत अछि।

वेदनाकेँ भेलैक जे ओ महाप्रलयक गोदमे बैसल अछि। आब ज्वालामुखी फाटत सर्वनाशक। आ सोचैत-सोचैत वेदनाकेँ लागल जेना ओकर करेजा मे केओ सुइया भोंकि रहल अछि। ओ उठिकेँ बैसि रहलीह। आस्तेसँ अपन आंगी उतारिकेँ देखय लगलीह कतौ सुइया नहि छल। तखन ओ दोसर आंगी बदलिकेँ पहिरि लेलीह। फेरो लागल जेना केओ सुइया भोंकि रहल अछि। ओकर अंग-अंग जेना सुइयाकेँ भोंकिसँ भोथर होअय लागल। तखन भान भेल जे ई सुइया नहि अछि मुदा, ई तँ आंगी दीप्तिक हाथक-सीयल अछि। ओकर विश्वास सुइयाकेँ नोकि बनि ओकर छातीमे गड़ि रहल छैक। पुनः ओ दोसर आंगी मांगि पहिरि लेलीह। तखन किछु आराम भेटलनि। दीप्ति पुछलीह—

—वेदना, चाह लेबै भाभी ?

—नहि···नहि, हम नहि पीयब, किछु नहि पीयब एखन। आहत-स्वरे बजलीह वेदना जेना ओकरा दीप्तिसँ बजेमे एक अजीब भय लगैत छल। तखन स्मृतिक दुःखाक दोसर खिड़की खुजल।

वेदना आ आशीष दुनू युनिवर्सिटीक छात्र रहथि। एक दिन काॅलेजसँ क्लास कयकेँ वेदना रिक्शासँ घर जाइत छलीह आ आशीष साइकिलसँ घर दिसिसँ अबैत छलाह कि कनिक असावधानीक कारण दुनू साइकिल आ रिक्शाक भिड़ंत भ' गेलैक। आशीषकेँ शायद पयरमे किछु चोट आबि गेलनि। रिक्शाकेँ किछु नहि भेलैक। वेदना रिक्शापरसँ उतरि आशीष लग अयलीह।

आशीष लज्जित स्वरे बजलाह—'हमरासँ अपराध भ' गेल, क्षमा करब।

वेदना हँसिकेँ बजलीह,—'एहिमे ककरो अपराध नहि अछि। ई तँ नियन्ताक एकटा खेल अछि। ओ शायद अपना सभक्षे परिचयक हेतु ई टक्कर लगौलनि।

आशीष एक सौन्दर्यमयी बालाकेँ एना निःसंकोच बजैत देखि मोनमे सोच-लथि 'देवी अहाँ असाधारण छी।'

आओर एहि दुर्घटनामे दूनू गोटेक मध्यक आवरण टूटि गेल। प्रकृति जेना दूनू गोटेमे देखा देखीक गिरह बान्हि देलक। आ, ई रास्ता दुनू गोटेक संबंध एकटा भावमय संबंध बनाय देलक। बेदनाक श्यामल शरीर विधाता जेना दोसर लोकक हेतु रचने छलाह। ओकर गोल-गोल मुँहपर पैंघ-पैंघ अलसायल आँखि एहि असार संसारक दृश्य देखबा लेल नहि बनल छल।

एक दिन इजोरियामे वेदना आ आशीष बैसल छलाह—

—वेदने! एकटा बात कही? विवाहक बेड़ीक सृष्टि जाहि मनुक्ख लेल भल अछि, ताहिमे अहाँ नहि छी। हमरा लगैछ जेना नारी जातिक उन्मुक्त आवरणहीन प्रेम अहाँक हृदयमे हिलोर मारि रहल अछि। अहाँक हृदयक एहि दिव्य भावनाकेँ हम आकिंचन कोना सम्हारि सकब? जीवनमे कहियो यदि हम अहाँकेँ एकोरत्ती दुःख देब तकर पाश्चाताप हमरा जरूर कर' पड़त।

—ओह चुप······ आशीषक ठोरपर आंगुर रखैत बजलीह वेदना—एहनो बात लोक बजैत अछि? भविष्य बड़ अनिश्चित होइत अछि।

एक दिन पटना कओलेजक वार्षिकोत्सब छल। छात्र-छात्राक पिकनिक प्रोग्राम छल। सभ छात्रा बेदनाकेँ तंग कर' लागल।

—हमरा सभ मिलि पिकनिक प्रोग्राम बनौने छी।

—ई तँ बड़ उत्तम। के सभ जाइत अछि?

—प्रोफेसर सभ नहि जा रहल छथि, मुदा किछु छात्र डिपार्टमेंटक जा रहल छथि। अहूँकेँ साथ करबा लेल आयल छी।

—हम······हम तँ नहि जा सकब।

—से किएक?

—हमरा ओहि दिन किछु काज अछि।

—नहि, नहि ई बात नहि मानब, अहाँकेँ चल' पड़त।

—नहि बहिन, एहि बेरि माफ क' दिय'। फेर कहियो जायब।

बेदनाक मनुहार लग सभ निराश भ' चलि गेलीह।

साँझक बेरि बिचारक सागरमे उधियाइत बेदना बैसल छलीह कि आशीष आबि गेलाह। दूनू गोटेमे बहुत काल धरि गप्प चलैत रहल। अचानक बेदनाकेँ बेना गीत पढ़लनि—

—अहाँ तँ परसू पिकनिकपर जाय रहल छी?

—नहि तँ, अहाँकेँ के कहलक?

—चेतना सभ बजैत छलीह।

—आब एहि प्रोग्रामकेँ बदलि देने छी।

किएक?

—अहाँ नहि रहब तँ हम पिकनिकमे जा की करब?

बेदना लाल भ' गेलीह—एना नहि बाजू। हमरा लेल अहाँ नहि जायब, ई ठीक नहि।

—अहाँकें नहि करबाक कारण ?

—ओहिना,…ई हल्ला-गुल्ला नहि नीक लगैत अछि।

—कहियो-कहियो लोगकें दोसरोकें प्रसन्नता देखबाक चाही।

वेदना एक विचित्र दृष्टिसँ आशीष दिसि तकलनि। ओहि एक क्षणमे वेदनाक आँखिमे एक सोरे सपना नाचि गेल जे देखि आशीष काँपि गेल।

—हम जायब— आस्तेसँ वेदना बजलीह।

आशीषक आँखिमे एकटा चमक आबि गेलैक।

आइ पिकनिकमे बड़ रमन-चमन छल। आशीष अपन गिटार ल' क' आयल छलाह। रंग-बिरंगक ड्रेसमे छात्र-छात्रा सभ तरेगन जकाँ चमकैत छल। गंगाक किनार। किनार पर बड़का-बड़का गाछ, चारू दिसि सीमेन्टसँ पिटायल एकटा छोट छीन चबूतरा। सभ केओ दल बान्हि अपनं हँसी ठट्ठामे लागल। कत्तौ स्टोव पर चाहक केटली चढ़ल छल। कत्तहुँ कोनो झुंड ताश खेलबामे व्यस्त।

वेदना एहि भीड़ भाड़सँ फराक हटि एकटा पाथर पर बैसल नदीक प्रवाह देखि रहल छलीह। ओकर सोचक प्रवाह सेहो गतिमय छल।

—मानव-जीवन ओहि मरीचिका सन सुन्दर अछि जकर प्रत्येक सांस पानि लहरिसँ उभरै अछि, मुदा, पिआस बुझबासँ पहिनहि मृत्यु पानिक एक-एक बून्नकें सोखि ओकरा बौल बनाय दैत छैक।

लागल जेना ककरो गरम साँस ओकर पीठसँ स्पर्श क' रहल हो, वेदना चौंकि उठलीह—ओह, अहाँ—आशीषकें देखि आश्वस्त भेलीह।

—हूँ' हूँ' एहिठाम अहाँ की सोचि रहल छी ?

कल्पनाक आँखि उठाय वेदना जेना स्वयंसँ बाज' लगलीह—

—जिनगी एकटा प्रवाहमान नदी अछि, मुदा, दूनू तटक मध्य बंद। ई गुलाब सन सुन्दर अछि मुदा मृत्युक काँटसँ घेरल। दीप जकाँ प्रज्वलित अछि, बिरडोक मध्य। ई चान अछि आशीष, जे अमाबस्याक नारेसँ सिकुड़ि जाइत अछि। जिनगी मृत्युक बुझबाक प्रयासक पर्याय थिक।

—आइ अहाँ बड़ निराशामयी भ' गेल छी वेदना। जनैत छी, तट नदीकें रोकैत नहि अछि, ओकर रक्षा करैत अछि। नदीकें जखन बढ़बाक होइत अछि तँ ओ तटकें तोड़ि बढ़ैत अछि। काँट गुलाबक सुन्दरताकें अक्षुण्ण रखैत अछि जाहिसँ सभ केओ ओकर सुरभिसँ अपन साँसकें स्वर द' सकय। बिरड़ो ज्योतिक शत्रु नहि वरन् आर वेसी प्रज्वलित हेबाक प्रेरणा थिक। जिनगी एकटा आकर्षक वस्तु अछि वेदना, जाहि ठाम आशा विश्वास बनैत अछि।

वेदना एतेक सहानुभूतिक स्वर आइ धरि नहि सुनने छलीह। ओ हाथमे मुड़ी नुकाय फफकि उठलीह।

—चुप भ' जाउ वेदना, अधीर नहि होउ।

— वचपनमे माय मरि गेल। थोड़ बहुत पढ़ा-लिखा बाबूजी चलि गेलथि। माय-बहिन केओ नहि आशीष, एहि सँसारमे असगरे हम।

—वेदना हम जे छी—

—अहाँ—कोना ?

—जीवनक लंगरमे बान्हल प्रत्येक मानवक, नौका ऊर्मिपर हिलोर मारैत कखन कोन नाहसँ टकरा जाय, से कोन ठीक ? अहाँ उदास नहि रहू—

—आशीष, हमर हृदयमे एकटा घाह बनि गेल अछि। नहि जानि कतेक परिवर्त्तन भेल, कतेक आँधी उठल आ शून्यमे विलीन भ' गेल। चित्र बनल आ मेटल, मेटल आ बनल। मुदा, इ घाह नहि भरल।

वेदना—आशीष ओकर मुड़ी उठेलक दू बून्न ओकर हाथपर खसि पड़ल।

—वेदना-वेदना—चंचल चेतना चीकरैत अयलीह

—अहाँ सभ एहिठाम भावनामे डूबल छी आ ओहिठाम देखिऔक जा कऽ सभ ताल लगौने अछि। चलु-चलु।

वेदना आ आशीषकें पहुँचैत देरी, सभ केओ लोक' लगलनि।

—अहाँ सभ चोरा-नुका असगर भागि गेलहुँ ?

—प्रकृति एतेक रसमोदे भरल अछि जे केओ हृदयसँ गप्प करबाक लेल व्यग्र भ' उठत ।— चुटकी लैत सीमा बजलीह ।

—एकर दण्ड भेटबाक चाही···दण्ड—कनेको स्वर हृहा उठल ।

—हम दण्ड भोग' लेल तैयार छी—आशीष मुड़ी नुघरौत बाजल ।

—आशीषक गिटार आ वेदनाक गीत—इएह थीक दण्ड ।

—नहि-नहि, गीत नहि ! आइ एहि मजलिसमे कोनो शायरक गजल हेबाक चाही ।

—ठीक-ठीक जे रंग गजल आनत ओ गीत नहि ।

वेदना अप्रतिम भ' उठलीह—आइ हमरा मोन ठीक नहि अछि । आइ हमरा बदला सीमा गीत गओतीह ।

—वाह, वाह—खेत खाय गदहा, मारि खाय जोलहा—

सीमा हँसैत बजलीह—आइ अहाँक एको नहि सुनब । गाब' पड़त ।

वेदना संकोचसँ गड़ल जाइत छलीह आ आशीष परिहाससँ मुस्की मारैत छल ।

आशीषक हाथ गिटारपर पूर्ण संलग्नतासँ खेल' लागल आ वेदनाक स्वर-लहरि समस्त वातावरणकेँ वेदनामय बना देलक—

—"मुझे इसका गम नहीं कि बदल गया जमाना

मेरी जिन्दगी है तुमसे कहीं तुम बदल न जाना"···

आशीष चौंकि वेदना दिसि ताकल, वेदनाक बोझिल आँखि आशीषे दिसि तकैत दर्द, पीड़ासँ भरल छल । आ आशीष कने हँसि मुड़ी झुकाय लेलक जेना वेदनाकेँ समझाय देलक—

"विश्वास राखु नहि बदलब ।"

आ गीत खतम भेलापर वाह-वाह स्वरसँ आकाश गुंज' लागल ।

आब आशीषक पार थिक । गजलक उत्तर गजलमे हेबाक चाही । एहन

गाछ जे आजुक दिन एकटा अमिट दिन जिनगीक भ' जाय—सभ दिसिसँ आग्रह होमय लागल ।

भावपूर्ण नेत्रसँ देखैत आशीषक स्वर-लहरि जीवन्त भ' उठल

—"वो हमसे किनारा करते हैं

हम उनके सहारे जीते हैं

··· ··· ··· "

वेदना··· वेदना, कतेक बेर भ' गेल अहाँ एखन धरि भूखल छी । उठु-उठु किछु खा लिय'—आह—वेदनाक स्मृतिक पट्ट खट द' बंद भ' गेल । सामने आशीष बैसल छल । आशीष ओकरा सहारा द' अपन छातीपर ओंगठा लेलनि कि वेदनाक स्मृति पटमे एकटा छेद देखा पड़लैक ।

वियाहक बाद आशीषक छातीमे एकबेर बड़जोर दर्द भेल छल । साँस लेबामे बड़ तकलीफ छल—एना किएक भेल ?

की बात छी ?—वेदना व्यग्र छलीह ।

आशीष बाजल किछु नहि, मुदा, वेदनाकेँ अपना लग बैसा ओकर माथ अपन छातीसँ सटाय लेलक । एकटा ठंडा मलहम जेना ओकर छातीपर लागि गेल । छातीक दर्द जेना एकदम शांत भ' गेलैक ।

—वेदना — एखन हमरा बड़ जोर छातीमे दर्द छल ! जहिना अहाँक माथ छातीसँ सटाय लेलहुँ, सभटा दर्द चलि गेल—

वेदनाकेँ अपनामे समेटने आशीष बाजल— अहाँ हमरा छोड़ि तँ नहि देब ? जहिया हमरा छातीमे दर्द उठत अहाँ एहिना करब ने ? अहाँ हमरा छोड़बतँ नहि·········

वेदनाकेँ लागल छल जेना ओ अपनेटा नोर नहि वरन् आशीषक नोर सेहो पीबि रहल अछि ।

—दीप्ति जल्दी करू—थारी नेने आउ ।

एकाएक अन्हार भ' गेल आ पटक छेदसँ बहिराइत इजोत विलीन भ' गेल। रोटीक एक-एक ग्रास ओकरा विषक अंगोरल लगैत छल। दीप्तिक हाथक रोटी—घृणासँ वेदनाक नस-नस उत्तेजित भ' गेल।

—आब नहि खाय सकब, आब नहि······

वेदनाकेँ आशीष दिसि ताकि नहि होइत छल ओकर हृदय टूटि गेल छल। विश्वास एकटा तेहेन श्वों पर बनल देवाल अछि जे जल्दी टूटैत नहि अछि। मुदा, टूटबाक उपरान्त जोड़बाक प्रयास व्यर्थ। हँ' जोड़ँ या होयत छैक, टूटबाक चिन्हक संगे। स्त्री दुविधाक भूखल नहि अछि ओ हृदयक भूखल अछि। ओ रूख-सूख खा अपन पतिक सर्व प्रेमक अधिकारिणी होम' चाहैत अछि।

—वेदना, आब अहाँ आराम करू। बड़ कमजोर भ' गेल छी। अहाँकेँ किछु भ' जायत तँ हम कोना जीयब ?—अगाध सिनेह नेने आशीष बजलाह।

वेदना पुरुषक एहि रूपकेँ देखि बड़ चकित छलीह। कतेक ढोंगी जीव अछि ई ? नारी पुरुषक खेलौना थिक। जखन नव-नव अगैत अछि' खेला धुपा अघाइत अछि। संगे पैसा नहि रहल दोसर खेलौना खरीदबाक तँ अनको खेलौनासँ खेलि धूपि जी शान्त करैत अछि। रहि रहि वेदनाक माथ पर इ वाक्य छेनी मारैत छल—

—"मेरी जिन्दगी है तुमसे, कहीं तुम बदल न जाना"

"हम उन्हींकेँ सहारे जीते हैं।"

ओकर कनपटीक नस जेना सोचैत-सोचैत टूटि गेलैक। आँखि अधमुनल सन, शान्त ओछाओन पर पड़लि छलीह। ओकरा लागल जेना केओ हुलकी मारि, ओकरा सुतल बुझि चलि गेल। दुपहरियाक निस्तब्ध बेला। नौकर चाकर सभ सुतल। निस्तब्धता एहन जे वेदना अपन धड़कब स्वयं सुनैत छलीह। ओकर मोनमे आशंकाक लहरि उठल—

ओकरा देहमे उठबाक शक्ति नहि छल मुदा ओ एक अदृश्य शक्तिसँ घीचा-यल चलि गेलीह केबाड़ दिसि। डगमगाइत पयरे ओ जा क' देखैत छथि तँ विश्वासक पूर्ण रूपेण खून। पलंग पर दीप्ति आ आशीष लटपटायल घोर निद्रामे······

वेदनाकेँ ई आघात सहबाक ताकत नहि छल। ओ कोनो प्रेरणासँ दौड़ल गेलीह, थरथर कँपैत गात, कमजोर रमणी, दुनू हाथसँ झकझोरि देलीह आशीषकेँ। आ कमजोरीक आवेगसँ मूर्च्छित भ' खसि पड़लीह।

पहिने तँ आशीष आ दीप्ति अकचका एक दोसरा दिसि तकलनि। पुनः वस्तुस्थितिक बोध हेबा पर आशीष डाक्टरकेँ बजौलक।

—वेदना, वेदना होशमे आउ, होशमे आउ। हमरा माफ क' दिय' वेदना, हमर जान ल' लिय' वेदना··· हमर जान—

आशीषक सुतल प्रेम जेना दहो बहो कानि रहल छल।

कनपट्टीक नस फाटि गेल छनि। इ कमजोरीक अवस्थामे हिनका चलबा फिरबाक नहि चाही।

वेदना, वेदना—वेदरा जकाँ भोकारि पाड़ि रहल छलाह, आशीष—अहाँक हम्मर सप्पत छी, हमरा नहि छोड़ू···हमरा माफ क' दिय'

बेसुध वेदना निश्चेष्ट पड़ल छलीह। माथसँ शोणितक धार बहि क' ओकर साँसे जकाँ जमि गेल छल।

—वेदना हम अपन एकमात्र नवजात बेटाक सप्पत खा कहैत छी आब कहियो अहाँक विश्वासक खून नहि करब। अहाँ छोड़ि केओ हमर जीवनमे नहि आओत······एहि बेर मानि जाउ, वेदना—बेटाक सप्पत······



पराधीन सपनहुँ सुख नाही

—हेअय, अहाँ सभ तँ नारी-स्वतंत्रता लेल एतेक बात बजैत छी, मुदा हम बाजी ? हमर तेवर देखिते ड्राइंगरुममे बैसल तीनू गोटे चौंकि गेलाह। ई हमरा उत्साहित करैत बजलाह—हँ-हँ, बाजु, अहींकें विचार हम सभ सुनी···

हमर मुँहपर तीन जोड़ी आँखि अपन पाँखि फड़फड़बय लागल। मुदा, हम निर्द्वन्द्व छलहुँ—लोक कहैत अछि, स्त्रीकें परिवारमे बान्हि-छानि क' बेड़ी पहिरा क' राखि देल गेल अछि, ओकर शोषण कयल गेल अछि।······हम एहि मतक एँकदम विरूद्ध छी······

—अयँ !—सुदेशबाबू चौंकि गेलाह, प्रवास अकचका गेल आ ई मन्द मुसकीक संग बजलाह—तखन आगु मेम साहेब ?

—विधाता, सृजन कयलनि स्त्री आ पुरुषक। दुनूक देहयष्टिक निर्माणमे भिन्न-भिन्न तत्त्वक योग अछि। दुनूक निर्माणक फार्मूला भिन्न-भिन्न अछि।

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्रोत-सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।"

ई बात कोनो फुसि नहि थिक······

—भौजी, अहींक जाति तँ नारा उठौलक—ई सभ स्त्रीक दुर्बलताक लाभ उठाक' स्त्रीक बर्टरिंग कयल गेल अछि—आ अहीं बजैत छी······

सुदेश विस्मित सन टेबुल पर अपन आंगुर ठक-ठक करैत बाजल।—

—सुदेशबाबू, स्त्रीक निर्माण जाहि तत्त्वसँ कयल गेल अछि, ताहि लेल ओकर सभसँ उत्तम वा सहज स्वरूपे कहल जाय यथोचित स्थान ओकर परिवार अछि। हम स्त्रीकें राजनीतिमे भाग लेनाइ नीक नहि बुझैत छी। अपन हिन्दू धर्ममे सभ दिनसँ संयुक्त परिवार चलि आबि रहल अछि, एकटा मर्यादाक संग,

मुकता गरिमाक संग। कोनो संयुक्त परिवार बिना कोनो गृह-नीति वा राजनीतिक नहि चलि सकैत अछि। गृह-संचालनोमे पॉलिटिक्स अछि। आ ओहि राजनीतिमे प्रधानमंत्री रहलि स्त्री। कोनो संयुक्त परिवार रहबाक वा टुटबाक सुख चैन स्त्रीपर रहैछ। ओकरापर तँ एतेक भार छैक, समस्त परिवारक सुख-दुख, नीक-बेजाय सभटाक भार जे अपन त्याग, सहिष्णुताक नीतिक कारण स्त्रीए सोझरा सकैछ। ओकर प्रकृतिए ताहि प्रकारक अछि जे ओ सभ किछु सहि सकैछ—रीव, छाहरि, नोर-मुस्कान, हँसी-रुदन······

—दीदी, यू आर ग्रेट—प्रवास बीचमे बाजि उठल।

—ग्रेट, हम की रहब प्रवास ! मात्र हम जे अनुभूत कयलहुँ—ई स्त्री-स्वातंत्र्य आ महिला वर्ष, ई सभ हाथीक दाँत थिक। पश्चिमसँ आयल हवा समस्त पूरबकें झकझोरि देलक। स्त्री अपन परिवारक राजनीतिमे एतेक असफल रहलीह जे आइ शत-प्रतिशत परिवार टूटि रहल अछि, कोनो घरमे चैन नहि। कोनो घरमे संतोष नहि। एकर मुख्य कारण की थीक ? प्रधानमंत्रीक अयोग्यता······

—भौजी, अयोग्यता तँ अहूँमे किछु अछि।—बीचमे बात कटैत सुदेश बाबू बजलाह।

आब अकचकयबाक बारी हमर छल।

—एतेक कालसँ हमरा सभ प्रधानमंत्रीक भाषण सुनि रहल छी, मुदा एक कप चाहक व्यवस्था एहि स्पेशल सभा लेल नहि अछि।

—हीयर, हीयर ! प्रभास थपड़ी पारि उठल। हम लजा गेलहुँ।

—हँ हँ भिया, अहाँ हारि मानलहुँ।—अपन सिगरेट जरबैत ई बाजि उठलाह।

हम तँ सत्ते अपन सोहमे बिसरि गेल छलहुँ जे एहि ठाम हमर आत्माभिव्यक्ति (हुनका सभक शब्दमे भाषण) क नहि, चाहक गरम-गरम कप चाही आहि संग चाहल, अनचाहल सभ घोंटा जाइत अछि।

भनसाघरमे चाह बनबैत छलहुँ। कानमे ड्राइंगरूमक गप्प आबि-आबि कतौ बैसि जाइत छल।

हिनक स्वर छल—शिबा के हम लाख चाहियो क' पॉलिटिशियन नहि बनाव' चाहैत छी······

हमरा मनमे हँसी छुटि आयल हिनक सरल कल्पना पर। खुदानें खास्ता कतहुँ हम कोनो मिनिस्टर बनि जाइ तँ पाछाँ-पाछाँ एकटा पुर्जी ल' हमरासँ भेंट करबाक लेल बेहाल रहताह। पता नहि, तखन हमर मोन केहन रहत··· हमरा तँ स्त्रीक नोकरीयो करब पसिन्न नहि पड़ैत अछि। जाहि घरमे पति-पत्नी दुनू नोकरी करथि, दुनू थाकि-हारि घर आबथि, संगे-संग बाल-बच्चा सभ थाकल हारल घर आबय, सभ एक दोसरापर बिगड़ल, एक दोसरा पर खोंझायल, घरमे कोनो व्यवस्था नहि, कोनो सलीका नहि ओ घर की होयत? नौकरपर जँ घर छोड़ल जाय तँ जेहो घरमे अछि, सभ स्वाहा। बच्चा सभ स्नेहक अभावमे ममत्वक अभावमे सुखा जाइत अछि, ओकर प्रकृति रुच्छ भ' जाइत छैक······। कतेक घरमे देखलहुँ आ दुख होइछ जे दू पैसा यदि पति कमाइत अछि तँ ओ नोन-रोटी खाय किएक ने संतोष करैत अछि! आवश्यकता तँ जतेक चीजक चाहब, होयबे करत। जाबत संतोष नहि, ताबत आनन्द नहि। आ आफिसक थाकल-ठेहिआयल पति जखन घर अबैछ, बाल-बच्चा भूखल-पियासल घर घुरैत अछि, तखन स्त्री अपन घरकें नन्दन कानन बनौने—एकटा स्वर्गिक मुस्कान अधरपर लेने पलक पाँखि दरबज्जा पर बिछौने अछि। पत्नीक अधरक मुस्की देखैत पतिक सभ थकान दूर, माताक स्नेहिल बाँहि भेटैत देरी मुरझायल-मौलायल नेना हरिहर भ' जाइत अछि। एक स्त्रीक लेल एहिसँ पैघ गरिमा की, एहिसँ पैघ गौरव की······

—भौजी! चाह बनबैत छी कि कविता क' रहल छी? सुदेश बाबूक स्वर हमरा चेतनामे आनि देलक। चारि कप चाह ल' थोड़ेक निमकी एकटा प्लेटमे राखि ड्राइंगरूम अबैत छी। ठहाकाक गरमीसँ कोठली भरल छल।

—थ्री चीयर्स फार दीदी! निमकीक प्लेट देखैत प्रवास उछलि गेल।

—लाँग लिव आवर प्रधानमंत्री। चाहक कप उठबैत सुदेश बाबू बजलाह।

—हौ, तोरा सभ हमर घरकें रह' देबह की नहि? हिनक स्वर छल—दहक फुला-फुला हिनक दिमाग आकाश पर चढ़ा। हिनको दिस चाहक कप बढ़ौलहुँ, आग्रह-मिश्रित कर्त्तव्यक संग।

—जे कह' विग्रह बाबू तों बड़ 'फारचुनेट' छह। जाहि ठाम सेक्रेटेरियटमे बाबूगिरी करैत-करैत लोक असमय बूढ़ा जाइत अछि, ओकर कोनो भविष्य नहि, कोनो अतीत नहि—समरस, समतल जीवन ताहि ठाम तोहर घर एतेक प्राणवंत, एतेक जीवंत रहैत छह। एकर प्रत्यक्ष प्रमाण भौजी छथुन, नो डाउट—सुदेश बाबूक चेहराक लकीर जेना गहरा गेल—भरि दिन खटि-मरि घर जाइत छी। जाइत देरी ओएह खटखट-हरहर, ई नहि अछि ओ नहि अछि। अरे भाग्यवान, पूर्णिमाक दिन तँ सभटा दरमाहा अहींकें हाथमे राखि दैत छी, आब अहाँ सम्हारु······हम ककर जेब काटब······मुदा नहि, आइ फल्लां ओत' एतेक बढ़िया शरबत-सेट आयल छैक, फल्लांक कनिञां एतेक नीक नुआ पहिरने अछि! एहि ठाम तँ शरबत रखबाक उपाइए नहि, शरबत-सेट। एकटा विद्रूपता भरल स्वर छल सुदेश बाबू के।

कोठलीमे एकटा गम्भीर उदासी पसरि गेल।

– ओह, सुदेश बाबू, ई कोन कानब ल' बैसलहुँ?

—प्रवास उदासीकें कटैत चहकि उठल—सभ केओ तँ एके बाटक बटोही थिकहुँ। आ हमरा सभ एहि विग्रह बाबू सभक बिना एहि देशक कोनो काज नहि चलि सकैत अछि। एहि सरकारक इमारतक न्यो हमहीं सभ थिकहुँ। ने आगाँ किछु पयबाक उन्माद आ ने अतीतक विषाद। छोड़ू ई सभ···। प्रवासक अवाजोमे लोक जेना काँपि गेल।

—सुदेश बाबू! ई एकटा निसाँस लैत बजलाह हमतँ सरिपहुँ भागवत छी। मुदा, स्वयंकें शिबाक समक्ष एकदम अपराधी बुझैत छी। आइ दस वर्ष ब्याहक भ' गेल, मुदा मोन नहि अछि, एक खण्ड नुआ कि आर कोनो परमाइश हमरा लग कयने होयतीह। तीन-तीन बच्चाक पढ़ाई आ पटनाक खर्चा। कहियो कोनो शिकायत हमरा लग नहि कयलनि। कतेक बेर मूड खराब रहैछ, आफिसक तामस हिनका पर उतारि दैत छी, मुदा···शिबा घरमे टेप-रिकार्डर जकाँ चलिते रहैत अछि। अहाँ देखिते छी, हिनक यैह गुणक कारण दोस्त सभ हमरा ओत' हँसि-बाजि मोन हल्लुक करबा लेल अबैत रहैत छथि। कखनो-कखनो हिनक एहि गुणसँ हमरा ईर्ष्या भ' जाइछ।

– कनखिया क' हमरा दिस तकैत ई हमरा कचकचौलनि।

—बेस-बेस, बड़ गेल, बहुत सुन्दर भाषण प्रेसीडेन्टक रहल।—हम थपड़ी पारैत बजलहुँ। ई खिसिया क' चुप भ' गेलाह। वातावरण पुन: हल्लुक भ' गेल।

—'दीदी, एकटा बातक उत्तर हमरा आर दैए दिअ' आठ बाजि रहल अछि, आब हमरा सभ चल जायब।' प्रवासक उत्सुक नयन दिस हम प्रश्नवाचक दृष्टि देलहुँ।—एक क्षण लेल मानि लिय' दीदी, अहाँ एहि देशक प्रधानमंत्री भ' जायब त' की करब ?

—हट्ट ! प्रवास जी, अहाँ तँ कोन मजाक कर' लगलहुँ। हम लजा गेलहुँ।

—नहि-नहि भौजी, आब तँ एहि प्रश्नक उत्तर अपन बुद्धिमती भौजीक भाषणमे सुनबे करब। प्लीज भौजी, प्लीज···

—अरे शिवा बाजु, जे जमौनाइ अछि, एहि चंडाल चौकड़ीमे जमा लिअ, फेर ई मौका आयत नहि। इहो गप्पक गुदगुदी हमरा लगब' लगलाह।

हम कने संयत भेलहुँ···देखू जखन अहाँ सभ पुछैत छी तँ अपन आन्तरित विचार कहैत छी। भारत ग्राम प्रधान देश अछि। एहि देशक उन्नति तखने होयत जखन गामक उन्नति होयत। हम सबसँ पहिने कानून बनबितहुँ—कोनो मंत्री कोनो शहरमे आम सभा नहि क' सकैत अछि। ओ जखन कोनो सभा की मीटिंग करथि तँ एकदम देहातमे।

हिनक ठोरपर हँसी पसरि गेल। सुदेश आ प्रबास सरल शिशु जकाँ हमर कथन आत्मसात् क' रहल छलाह।

—से किएक भौजी ?

—एकर बहुत कारण अछि सुदेशबाबू। सभसँ पहिने अन्हारेमे पड़ल गामक लोक देखत जे के हमर देशक कर्णधार सभ छथि जनिका हम प्रतिनिधि चुनिक' पठौलहुँ। जनतामे उत्साह जागत। दोसर जे कोनो गाममे सड़कक व्यवस्था नहि छैक। यदि कोनो गाममे अपन सभा रखैत छथि तँ अधिकारीगण ओहि गामधरि पहुँचबा लेल सड़क बनबा देताह, सफाई करबा देताह। समस्त गामक सफाई भ' जायत। जाहि ढँगक दौरा मंत्रीगणक रहैत छनि, रोज कोनो ने कोनो मंत्री कोनो ने कोनो गामक दौर करताह आ तखन देखिते-देखिते समस्त

गामक काया-पलट भ' जायत, समस्त देशक उद्धार भ' जायत। सुदेश बाबू, जा धरि गाम नहि उन्नत करत ता धरि देश नहि उन्नति करत।'

—भौजी, एतेक बात अहाँ कत'सँ सिखलहुँ ?—सुदेश बाबू विकलित छलाह।

—ओहि दिन चुड़ावाली आयल छल, सुदेश बाबु। सौंसे देहमे हड्डी पर चामक खोल लटकल—मलिकिनी हमरा सभ तँ कोटा महक एक मुट्ठी चीनीयो नहि देखने छिऐक—कोटामे की अबैत अछि की जाइत अछि ? हमरा सभ ले कोन देवता आ कोन सरकार ? किओ नहि। हमरा छातीमे आगि धधकि गेल छल सुदेश बाबू 'हमर आँखि भरि आयल छल'।

—माँ-माँ साढ़े आठ बाजि गेल। निन्न लागि रहल अछि। छोटका रिंकू हमर बाँहि पर झूलि गेल।

'भौजी एतेक सुन्दर साँझ लेल बहुत धन्यवाद'।

—हँ दीदी' सरिपहुँ प्रवास आ सुदेश बाबू उठैत बजलाह।

'ही भौजी, सबकिछु आ जे भौजीकेँ अनलक से किछु नहि।'

अहाँ दीदीसँ धन्यवाद ल' लेब ! प्रवासक उक्ति संग एकटा ठहाका अंधकारमे विलीन भ' गेल।

एकटा साँझ कखन रातुक पियालीमे खसि पड़ल, किओ नहि बूझि सकल।

हमर जिनगी कोन घाटी, कोन पर्वतमाला, कोन जंगलमे गुजरि रहल अछि, के बुझत ? ड्राइंगरूमक फिलास्फी आ जिनगी दुनूमे कतेक अंतर अछि। जिनगी, जिनगी अछि। जकर ऐकटा अपन सिद्धांत अछि, अपन कानून अछि, अपन नियम अछि, लोकके प्रताड़ित करबाक, लोकके रूदनक सरगम सुनयबाक, लोक के दुःख पहुँचेबाक······ताहिमे हमर जिनगी ? जिनगीसँ फराक आर एकटा जिनगी होइछ जाहिठाम आँखिक आकाशमे सपनाक इंद्रधनुष उगल रहैछ, जकर दुःखके अपन दुःख बनाक' घंटो ओकरा लेल सोचैत रहैत छी, ककरा लग बाजी अपन दोहरी मौन लेल, हम भीतरे-भीतर कतेक जर्जर भेल जाइत छी।

एतेक कमजोरी, एतेक कुंठाक मध्य हम हँसिते रहैत छी, मात्र अपन परिवारक लेल। मुदा ई मुस्कान, के एकर व्यथा बुझत ? सून आँगन, सुन दुपहरिया आ चाहक एक कप लेल हमर मोन छटपटा उठल। माथ पर एकटा विचारक कंकड़ खद्द' लागल—हम एतेक चाह किएक पीबैत छी ? भरिसक शराब बुझि। जहिना लोक शराबमे अपन दुःख बिसरि जाइछ तहिना हम चाहक कपमे अपनाकें विस्मृत क' हँसीक एकटा टंकी एकत्र क' लैत छी। ओहि दिन ई कहने छलाह—शिबा अहाँ एतेक चाह नहि पीबु। ई स्लो प्वाजनिंगक काज करैत अछि। आइ नहि······

आ हम चौंकि गेल छलहुँ—'स्लोप्वाजनिंग'—ई तँ हम कहियो नहि सोचने छलहुँ—ठीके तँ अछि। तखन ते मृत्यु दिस हमर बढ़बाक प्रयास शत्-प्रतिशत् सफल भ' जायत। आह ! ई 'स्लोप्वाजनिंग'क काज क' सकत ? हमर माथ भारी भ' गेल। अपनासँ दूर भागबाक प्रयास हम करैत छी—किएक ? एकांत, जेना हमरा अपनामे लील लैत अछि।

—शिबा अहाँ कोनो कॉलेज ज्वाइन क' लिअ'।—हिनक मोन हमर मोनक संग संवेदनशील भ' उठैत अछि—भरि दिन असकर घरमे किछुसँ किछु सोचैत रहैत छी, आ दुनूगोटे मिलिकें समस्त आर्थिक समस्याकें हल क' लेब।

हम हुनक मुँह बंद क' देने छलहुँ—हमरा अपन घरमे खूब मोन लगैत अछि, आर्थिक समस्या हमरा किछु नहि अछि, कोनो आवश्यकता नहि।

—मुदा नहि, हम स्वयंकें बहटारैत छलहुँ। हमर परिवारमे ककरो कोनो चिन्ता नहि होइक आ अपनाकें कुशल सिद्ध करबा लेल, हम सभकें खुशी रखबाक प्रयत्नमे लगलहुँ। प्रतिफल, भीतरे भीतर हम टुटैत गेलहुँ। कतहु बड़ दुःखी रहय लगलहुँ बड़ दुःखी। जनैत छी महँगी बड़ बढ़ि गेल अछि। जोड़ैत छी तँ आमदनीसँ बेसी खर्च भ' जाइत अछि। कहियो-कहियो लगैत अछि दुनियाक जतेक दुर्भाग्य अछि वा जतेक अपराध अछि सभक मूलमे हमही छी, सभटा अनर्थक जड़ि हमही छी, आ हमर मोन आठ बरख पहिलुक विस्मृत अतीतक अन्हार प्रकोष्ठ, जकरा हम एकदम बिसरि गेल छलहुँ, प्राय: अवचेतनक दुआर खोलि आस्तेसँ आबि गेल।

—जखन हम द्विरागमनमे सासुक पयर छूने छलहुँ तँ झनकारैत स्वर सासुक

सुनाय पड़ल—हुँ" "ह, दान-दहेज किछ नहि, कथीक पयर छुअब ? अहाँ-सभक लक्षण तँ हम पहिनहि देखलहुँ। कोन ठकैत सभक···फेरमे हम पड़ि गेल छी—हम कानय लागल छलहुँ। हम नहि बुझैत रही एतेक दुर्व्यवहार हमरा संग किएक कयल जा रहल अछि ? ई तँ सत्त छल, हमर बाबूजी दस हजार टाका आ दान-दहेज किछु नहि द' सकलाह, मुदा तकर प्रतिफल की एतेक······।

हम साहस कयलहुँ अपन घरकें अपन बनयबाक, अपन सासु-ससुर, दियादिनी सभक स्नेही बनबाक भरि-भरि दिन खटैत छलहुँ, मुदा हमर सासु टोल पड़ोसक संग हमर खिस्सा करैत छलीह। हम ककरोसँ घृणा नहि क' सकलहुँ, जनैत रही, घृणा, घृणाक जन्म दैत अछि। घृणा आइ धरि प्रेमक जन्म नहि द' सकल। भैया कहैत छलाह—सत्ते, पुतोहु ओएह थिक जे बेटी बनि अपन सासुरमे राज करय। मुदा, हमर अनुभव अछि जे अपन समाज कहियो पुतोहुकें बेटी नहि बुझि सकैत अछि। ओकरासँ खाली अपेक्षा रहैछ। हम बेटी बनय चाहैत छलहुँ मुदा सासु उपदेश दैत छलीह। एक दिन घरमे कोनो अप्रिय घटना भ' गेल जकर मूलमे हमरा राखल गेल। जखन कि हम जनितो नहि छलहुँ जे कि भ' रहल छैक, आ कि की भ' गेल। तइयो हम सासुक पयर पर खसि गेहुँ—माए, हमरासँ जे गलती भ' गेल माफ क' दिहथि। हमर नैहरक लोक जे गलती कयने होथि, हम तँ आब हिनकर बेटी छियनि, आब तँ इएह हमर माए छथि। हिनक खुशी हमर खुशी थिक। ई अपन बेटी पर तमसायल नहि रहथु········।

आ हम फफकि-फफकि कानय लागल छलहुँ। पयर घिचैत हमर सासु बमकि उठलीह—हे हमर पयर-तयर नहि छुबू। एतेक नकल पचीसी हमरा पसिन्न नहि। हमर बेटी सभक परतर करत ? कोन बुत्ता पर ? जतय गेलीह, रूप आ धनसँ घर भरि देलक। माय-बापकें हौसले नहि रहनि। हौसला रहितैक तखन ने ? बेटी भारी लगलैक, हमरा घरमे फेकि देलक······।

आ हम कहियो प्रतिवाद नहि कयलहुँ। एकटा दहेजक कुप्रथा समाजक कोढ़क कारण हमर ई गंजन होइत रहल। हुनका लेल तँ आर बेटा-बेटी छल, हमरा लेल तँ एकटा ओएह सासु-ससुर फेर हम किएक हुनक बातक दुःख मानी ? हिनक प्रेमक मध्य हमरा माए-बाप, सासु-ससुर सभक प्रेम भेटल। आ एक दिन सभ ठीक भ' गेल।

ठक······ठक······ठक······केओ केबाड़ खटखटोलक—सिनेमाक रील जकाँ आगूसँ सभटा अतीत निकलि गेल। केबाड़ खोलैत छी – मलिकिनी दूधक हिसाब क' देतियेक······ हमर चेहरापर म्लान-मुस्की आबि गेल।

आब तँ साँझ पड़ि गेल। स्कूलसँ, आफिससँ सभ अबैत होयताह, काल्हि हिसाब क' देब।······

दूधवाली प्राय: हमर म्लान चेहरा, नोरायल आँखि आ व्यथित अंग देखि मुस्की मारैत चल गेलीह।

ओह! आइ मालिक अओताह तँ······टूटल चूड़ीक एकटा हास हमर अधर पर आबि गेल। आइनामे चेहरा देखैत छी। अपन चेहरा अपने अनचिन्हार लगैत अछि। पाइप लग जा' क' मुँह-हाथ धो अतीतकेँ अपनासँ दूर धकेलैत छी। सभ अबैत होइत, मुदा समस्त तन-मनकेँ अतीत अपन बाहुपाशमे कसने अछि······नहि, नहि······अहाँ जाऊ, अहाँ जाऊ। हमरा जीब' दिय' प्लीज! कहियो कालकेँ अहाँकेँ की भ' जाइछ जे एकटा कठोर प्रेमी उद्धत प्रेमी जकाँ हमरा आलिंगनबद्ध कयने रहैत छी, एतेक हमरा नहि सताउ!······हम अतीतक बाँहि अपन मोन परसँ, अपन तन परसँ हटबैत रहलहुँ······।

ठक······ ठक······ ठक······

मेम साहब, ई तरकारीवलाक स्वर छल। मोन जेना फेर चंचल भ' पार्थिव जगतमे आबि गेल···

मेम साहब, पहिलुका टाका द' देतिऐक।

पैसा···पैसा···पैसा···विग्रह बाबू, सभक राजमे तँ मासक पंद्रह-बीस तारिखक बादे अमावस शुरू भ' जाइत अछि। पेटीमे देखैत छी पन्द्रह टाका मात्र बाँचल अछि। पाँच टाका द' देबनि तँ बाँचल मात्र दस टाका आ मास दस दिन आर······

आइ द' दिअ' बाल-बच्चा लेल आँटा किनने जायब···हमर माथा पर भ्रम द' ओकर स्वर लागल। उठा क' पाँच टाका द' देलहुँ। मोन पड़ि आयल

पचीस टाका ई माँगने छलाह भोर खन। मोनमे किछु ठहार भेल कोहुना मिला जुला क' अमावस्याक दिन काटिये लेब— हमर मोन पुन: हल्लुक भ' सिमरक तुर जकाँ मुक्त पवन-संग बिहरय लागल।

सभ बच्चा जलखइ क' खेलयबाक लेल चलि गेल। ड्राइंगरूममे आइ ई बैसल रहथि। वातावरण सर्द छल, कोनो चौकड़ी नहि, कोनो फिलॉसफी नहि, कोनो डायलॉग नहि, मुदा हिनक चेहरा भावशून्य छल।

—की बात छैक? आफिसमे किछु भेल की? मोन बड़ उदास अछि।

—कोनो बात नहि शिवा। ओहिना थाकि गेल छी।

—चाह बना दी की?

—'चाह'!···एकबेर हँसैत बजलाह।—अहाँ अपनाकेँ मारू शिवा! हमरा बकसि दिअ'।

—छी: की बजैत छी? हम एक गिलास नेबो-पानि हुनका आगू राखि दैत छी।

—'एकटा बात बाजी?'—हम हँसिते-हँसिते कहलहुँ। हिनक दृष्टि हमर चेहरा पर गड़ि गेलनि—

'अहाँक संगमे किछु टाका अछि?

नहि अछि की बात थिक? हिनक स्वर विचित्र छल। ओना एकटा '[illegible]' हिनको अछि जे दोस्त सभक समक्ष एक दम रोमान्टिक मूडमे, एक-दम सहज रहैत छलाह, असगर हमरा लग? सौंसे संसारक 'टेंशन' हमहीं भ' जाइत छलहुँ—दूधवालीकेँ टाका देबाक अछि। आब दस टाका······

मुँहक बात मुँहे रहल।

—सभटा टाका खतम भ' गेल, बाप रे। दस दिन आर एहि मासक बाँकी अछि। कोना चलत? कि भ' जाइत अछि टाका सभ? हमरा संग किछु नहि अछि? अहाँ जानू—आ ई अपन पयर पटकैत घरसँ विदा भ' गेलाह बड़बड़ाइत।

आ तखन हमरा मोनमे अपन सभटा फिलॉस्फी सभ डायलॉग सभ भाषण, सभ सिद्धान्त मुँह दूसैत नेना सन लागल। हम अपना लेल नहि, घरेमे खर्च करैत छी······टाका हुनकर जेबमे ओहिना छल —एखन··· हम अपन प्रतिवाद अपने भ' गेलहुँ । हमर हृदयक अन्तरतमसँ जेना प्रतिरोधक एकटा चीत्कार क्षण भरि लेल उठल—स्त्रीक आर्थिक स्वाधीनता अत्यावश्यक···जाहिसँ एक-एक पाइ लेल ओकरा मर्दक मुँह नहि ताक' पड़ैक । आर्थिक स्वाधीनता—ओह ! पराधीन सपनहुँ सुख नाही······रोम-रोमसँ प्रतिरोध उठ' लागल ।

